राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

10 अनिल अंबानी के इस शेयर ने 1 लाख रुपये के बनाए 23 लाख रुपये...

मोइन अली ने इंटरनेशनल क्रिकेट से रिटायरमेंट ... 11

वर्ष : 15 | अंक : 149 | नई दिल्ली, सोमवार, 09 सितंबर, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम अधिकतम तापमान 31°C न्यूनतम तापमान 26.0°C

हां 30%
नहीं 50%
कह नहीं सकते 10%

बाजार

सोना 71,105

चांदी 91,700

सेंसेक्स 78,886

निफ्टी 24,117

संक्षिप्त खबरें

राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल इस सप्ताह रूस जायेंगे

नई दिल्ली। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल इस सप्ताह रूस की यात्रा करेंगे। भारत रूस और यूक्रेन के बीच जारी संघर्ष में मध्यस्थ की भूमिका निभा सकता है। इसी संदर्भ में डोभाल रूस जायेंगे। सूत्रों ने विदेश से जुड़े नए घटनाक्रम की पुष्टि की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल ही में यूक्रेन की यात्रा की थी। उन्होंने संघर्ष समाप्ति में भारत की भूमिका को लेकर सकारात्मक पहल का वादा किया था। इससे पहले वे तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर रूस गए थे। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी यूक्रेन यात्रा के बाद राष्ट्रपति पुतिन से बातचीत की थी।

ममता बनर्जी पर आरोपों का सिलसिला जारी, टीएमसी सांसद ने किया इस्तीफा

दार्जिलिंग। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर आरोपों का सिलसिला जारी है। तृणमूल कांग्रेस के राज्यसभा सांसद जवाहर सरकार ने नैतिक आधार पर इस्तीफा दे दिया है और ममता बनर्जी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। जवाहर सरकार ने बताया है कि टीएमसी नेतृत्व ने आरजी कर रेप और हत्या मामले को कवर करने की कोशिश की, दोषियों को पदोन्नति दी और संरक्षण दिया। उन्होंने यह भी कहा है कि टीएमसी में भ्रष्टाचार की गहराई है और नेतृत्व जमीनी हकीकत से कटा हुआ है। भारतीय जनता पार्टी के नेता और पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग से सांसद राजू बिस्टा ने ममता बनर्जी पर आरोप लगाया है कि उन्होंने पुलिस और प्रशासन की मदद से झूठ, छल और अत्याचार किया है।

सड़क हादसे में एक ही परिवार के पांच सदस्यों की मौत

रामनाथपुरम। तमिलनाडु में मदुरै-रामेश्वरम राजमार्ग पर रविवार तड़के एक कार सड़क किनारे खड़ी राज्य परिवहन निगम बस से टकरा गयी जिससे सवार एक परिवार के पांच सदस्यों की मौत हो गई और तीन अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस सूत्रों ने बताया कि घटना तब हुयी जब कार यहां मदुरै-रामेश्वरम राजमार्ग पर उचिपुली के पास पीरप्पनवलसाई गांव में एक कार टीएनएसटीसी बस से टकरा गयी। पुलिस ने कहा कि घटना में पीड़ित की पहचान सेंथिल मनोहरन, उनकी पत्नी अंगला ईश्वरी, उनके दामाद राजेश और उनकी बेटी पंडी सेल्वी, और उनकी नातिन दर्शिला रानी, प्रणविका और एक नवजात शिशु रामनाथपुरम के रूप में हुई है।

विकसित भारत 2047 एक महायात्रा, हर भारतीय इसका हिस्सा : उपराष्ट्रपति

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने इस अवसर पर देशवासियों से एक ऐसा संकल्प लेने का आह्वान किया, जिसके अंतर्गत सभी शिक्षित व्यक्ति कम से कम एक अशिक्षित व्यक्ति को पढ़ाने का काम करें। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने कहा कि पहली बार जब वह संसद सदस्य बने थे तो भारत की इकोनॉमी लंदन शहर से भी छोटी थी। वहीं, आज हमारी अर्थव्यवस्था पूरे इंग्लैंड से भी ज्यादा बड़ी है। मोर जब नाचता है तो हम प्रसन्नचित होते हैं, पर मोर अपने पांव की तरफ देखा है तो उसके आंसू आ जाते हैं। शिक्षा में यह जो थोड़ी कमी है, यह मोर के पांव हैं, हमें इस कमी को दूर करने का संकल्प लेना चाहिए। उन्होंने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को भी एक क्रांतिकारी कदम बताया। उपराष्ट्रपति ने कहा कि तीन दशक

बाद देश में यह क्रांतिकारी कदम उठाया गया। हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति मातृभाषा पर जोर देती है। उन्होंने नेशनल एजुकेशन पॉलिसी को गेम चेंजर करार दिया। उनका कहना है कि यह सभी भारतीय भाषाओं को महत्व देती है। उपराष्ट्रपति ने कहा, मातृभाषा की बात की अलग है। यह वह भाषा है जिसमें हम सपने देखते हैं। हमारा जीवन इन सपनों को ही साकार करने में लगा रहता है। आज पूरे देश में विकसित भारत 2047 की एक महायात्रा चल रही है। हर कोई इसका हिस्सा है। यह एक हवन हो रहा है, हर कोई इसमें अपनी ओर से आहुति दे रहा है। इस हवन में एक आहुति हमारी यह भी लगनी चाहिए कि हर 6 महीने में हम एक व्यक्ति को शिक्षित करें। उन्होंने बताया कि आज रविवार को ऋषि पंचमी है। भारतीय संस्कृति में इसका बहुत बड़ा महत्व है। ऋषि परंपरा का मतलब है कोई भी शासन में हो, कोई भी शासन व्यवस्था हो, सही रास्ता दिखाने का प्रयास ऋषि करते हैं। हमारी हजारों साल की विरासत का यह आधार है। आज के पावन दिन हमारी संस्कृति को नमन करते हुए हमें आदर संकल्प करना चाहिए कि हम अगले 6 महीने में एक व्यक्ति को शिक्षित बनाएंगे, ताकि साल में हम कम से कम दो व्यक्तियों को शिक्षित बना सकें। उपराष्ट्रपति ने कहा कि दुनिया में भारत के मुकाबले कोई देश नहीं है। भाषाओं के मामले में भारत विश्व में अनोखा राष्ट्र है। राज्यसभा में सांसद, 22 अलग-अलग भारतीय भाषाओं में सदन के अंदर बोल सकते हैं। जब राज्यसभा में सांसदों को उनकी भाषा में बोलते हुए सुनता हूं तो मुझे उनकी बॉडी लैंग्वेज ही बता देती है कि वह क्या बोल रहे हैं।

रक्षा मंत्री ने चुनावी सभा को किया संबोधित, पाक को घेरा

पीओके निवासी जल्द ही हमारे साथ जुड़ेंगे: राजनाथ

कहा-दुनिया की कोई भी ताकत अनुच्छेद 370 को वापस नहीं ला सकती

प्रातः किरण

रामबन। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने रविवार को कहा कि पाकिस्तान सरकार पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर के लोगों को विदेशी मानती है, लेकिन भारत सरकार का मानना है कि वे भारतीय नागरिक हैं और वह समय दूर नहीं, जब वे भारत का हिस्सा बनने की इच्छा व्यक्त करेंगे। श्री सिंह ने रविवार को एक विशाल चुनावी सभा को संबोधित करते हुए कहा, पाकिस्तान के अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल ने हाल ही में एक अदालत में प्रस्ताव पेश किया, जिसमें पीओके निवासियों को विदेशी बताया गया था। मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि भारत सरकार का मानना है कि पीओके के लोग भारतीय नागरिक हैं। उन्होंने कहा कि वह समय दूर नहीं जब पीओके के लोग खुद आगे आएंगे और भारत का हिस्सा बनने की इच्छा व्यक्त करेंगे। उन्होंने कहा, अगर हम सत्ता में आए तो हम अगले 10 सालों में जम्मू-कश्मीर को एक आदर्श राज्य बना देंगे। उन्होंने लोगों से 18 सितंबर से तीन चरणों में होने वाले जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी उम्मीदवारों को वोट देने की अपील की। उन्होंने कहा कि यह एक ऐतिहासिक चुनाव होगा क्योंकि पूरा भारत उत्सुकता से इसे देखेगा। श्री सिंह ने कहा, मैं हाल ही में अमेरिका में था और वहां भारतीय लोगों ने मुझसे पूछा कि जम्मू-कश्मीर में चुनावों का क्या होगा, मैंने उन्हें स्पष्ट रूप से बताया कि जम्मू-कश्मीर में भाजपा की सरकार होगी। न केवल भारतीय लोग, बल्कि दुनिया भर के लोग जम्मू-कश्मीर के चुनावों को देख रहे हैं। उन्होंने लोगों से भाजपा को अगले दस वर्षों तक उनकी सेवा करने का मौका देने के लिए भी अपील की। उन्होंने कहा, अगर भाजपा यहां सत्ता में आती है तो आप एक नया जम्मू-कश्मीर देखेंगे।

जम्मू-कश्मीर में शांतिपूर्ण माहौल कायम

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी प्रमुख महबूबा मुफ्ती का स्पष्ट संदर्भ देते हुए श्री सिंह ने कहा कि कुछ लोग दावा करते थे कि अगर अनुच्छेद 370 को छुआ गया तो पूरा जम्मू-कश्मीर जल जाएगा। उन्होंने कहा, हमने इसे वापस ले लिया लेकिन एक भी गोली नहीं चली। उन्होंने कहा कि पूरे जम्मू-कश्मीर में शांतिपूर्ण माहौल कायम है। नेशनल कॉन्फ्रेंस पर निशाना साधते हुए श्री सिंह ने कहा कि यह पार्टी अनुच्छेद 370 की बहाली का दावा करती है। उन्होंने कहा, मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि जब तक भाजपा है, दुनिया की कोई भी ताकत अनुच्छेद 370 को वापस नहीं ला सकती। उन्होंने कहा कि जब हुर्रियत से बात करने के लिए एक संसदीय प्रतिनिधिमंडल कश्मीर भेजा गया, तो उनके लिए दरवाजे बंद कर दिए गए। भाजपा के पूर्व अध्यक्ष ने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि नेशनल कॉन्फ्रेंस के उपाध्यक्ष उमर अब्दुल्ला ने वकालत की कि अफजल गुरु को फांसी नहीं दी जानी चाहिए थी। उन्होंने कहा, अगर हमें गुरु को फांसी नहीं देनी चाहिए थी, तो हमें उसके साथ क्या करना चाहिए था। कश्मीरी पंडितों की वापसी पर श्री सिंह ने कहा कि केंद्र कश्मीरी पंडितों की सुरक्षित और सम्मानजनक वापसी सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

पटना-बक्सर रेलखंड के टुडीगंज स्टेशन के समीप की घटना, परिचालन बाधित

बड़ा रेल हादसा टला : चलते-चलते दो भाग में बंटी मगध एक्सप्रेस

यात्रियों के बीच मची चीख पुकार, हताहत की खबर नहीं, खबर सुनते ही रेल महकमे में हड़कंप

प्रातः किरण

पटना। बिहार में दानापुर रेल मंडल अंतर्गत बक्सर जिला के टुडीगंज स्टेशन के समीप नई दिल्ली से पटना आ रही मगध एक्सप्रेस दो हिस्सों में रविवार को बंट गयी। हालांकि इस दुर्घटना में किसी के हताहत होने का समाचार नहीं है। नई दिल्ली से पटना होते हुए इस्लामपुर तक जाने वाली गाड़ी संख्या 20802 डाउन मगध एक्सप्रेस डुमरांव रेलवे स्टेशन से चलने के करीब आठ मिनट बाद दो हिस्सों में बंट गई। यह घटना बक्सर-आरा रेलखंड पर टुड़ीगंज और रघुनाथपुर रेलवे स्टेशनों के बीच हुई। टुड़ीगंज रेलवे स्टेशन से चलने के करीब एक मिनट बाद ही यह घटना हुई। करीब 200 मीटर के फासले पर ट्रेन के दोनों हिस्से अलग-अलग खड़े हो गए। चीख पुकार सुनकर आगे जा चुकी बोगियों के लोगों ने ट्रेन रुकवाई, तब पायलट को ट्रेन के टूटने का पता चला। पायलट ने हादसे की जानकारी स्टेशन मास्टर को दी। जानकारी मिलते ही स्टेशन मास्टर टीम और कर्मचारी

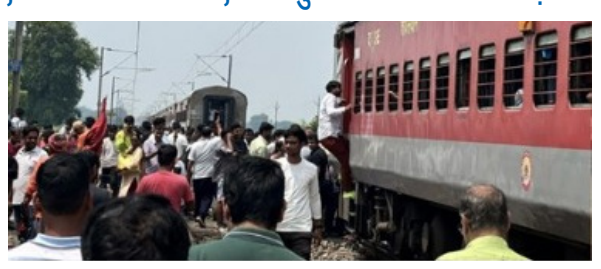

लेकर मौके पर पहुंचे। टेक्नीकल टीम ने प्रेशर पाइप जोड़ा और ट्रेन को पटना के लिए रवाना किया गया, लेकिन हादसा होने से पैसेंजर भड़के हुए हैं। उन्होंने रेलवे विभाग पर लापरवाही बरतने का आरोप लगाया है। बताया जा रहा है कि रेल हादसे का कारण ट्रेन के बोगियों के बीच कपलिंग का टूटना रहा। जैसे ही मगध एक्सपेस के हादसे की खबर रेल प्रशासन को मिली पूरे महकमे में हड़कंप मच गया। वहीं, इस हादसे के कारण रेल परिचालन भी बाधित हो गया। ट्रेन जिस जगह से दो हिस्सों में टूटी वहां ट्रेन का स्लीपर कोच था। एस-7 कोच अपने बाद वाले कोच से अलग हो गया। इस दौरान जोर की आवाज भी आई और यात्रियों में कोहराम मच गया। ट्रेन संख्या 20802 डाउन डुमरांव रेलवे स्टेशन से 8 मिनट के विलंब से सुबह 11:00 बजे चली थी। 11.06 बजे यह ट्रेन टुड़ीगंज स्टेशन से आगे बढ़ी। करीब 1 मिनट के बाद ही यह हादसा हो गया। मिल रही जानकारी के मुताबिक किसी तरह की जान-माल की क्षति नहीं हुई है। लोको पायलट ने अपनी सूझबुझ का परिचय देते हुए तुरंत ट्रेन को रोका। इस बीच बड़ी संख्या में यात्री ट्रेन से उतरकर नीचे उतर गये। रेल के दो टुकड़ों में होने की खबर मिलने के बाद स्थानीय रेल प्रशासन के लोगों ने बचाव कार्य शुरू किया। इसके बाद परिचालन सामान्य हो पाया।

अमेरिका के तीन दिवसीय दौरे पर राहुल गांधी, टेक्सास पहुंचे

नेता प्रतिपक्ष बोले-मैं वास्तव में बहुत खुश हूं

प्रातः किरण

टेक्सास/नई दिल्ली/एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी अमेरिका दौरे पर हैं। तीन दिवसीय इस दौरे में राहुल गांधी रविवार को टेक्सास के डलास पहुंचे, जहां भारतीय प्रवासी और इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के सदस्यों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। राहुल गांधी ने अपने सोशल मीडिया एकाउंट से कुछ तस्वीरें साझा की। उन्होंने लिखा टेक्सास के डलास में जो भारतीय प्रवासियों और इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के सदस्यों ने मेरा स्वागत किया, उससे मैं वास्तव में बहुत खुश हूं। राहुल ने पोस्ट में आगे लिखा, मैं इस यात्रा के दौरान सार्थक चचाओं और व्यावहारिक बातचीत में शामिल होने के लिए उत्सुक हूं, जो दोनों देशों के बीच संबंधों को और मजबूत करेगा। बता दें कि 2024 के लोकसभा चुनाव के बाद राहुल गांधी की यह पहली अमेरिका यात्रा है। राहुल गांधी 9-10 सितंबर को वाशिंगटन डीसी में आयोजित होने वाली कई महत्वपूर्ण बैठकों में हिस्सा लेंगे। इससे पहले, राहुल गांधी की यात्रा पर आईओसी प्रमुख सैम पित्रोदा ने कहा कि राहुल गांधी से बात करने के लिए यहां प्रवासी भारतीय, बिजनेस लीडर, छात्र, राजनीतिक नेता उत्सुक हैं। हम एक सफल यात्रा की आशा करते हैं और अमेरिका में राहुल गांधी का स्वागत करने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने आगे कहा, अलग अलग क्षेत्र के लोगों संग कई कार्यक्रमों की योजना बनाई गई है। इनमें खासकर वो लोग शामिल हैं जो कांग्रेस शासित प्रदेश से वास्ता रखते हैं। विशेष रूप से बैंगलोर, हैदराबाद, मुंबई और पुणे जैसे टेक शहर के लोग इच्छुक हैं। हम व्यापार और टेक्नोलॉजिकल समुदाय के साथ बातचीत को लेकर भी काफी उत्साहित हैं।

भारत में आया मंकीपॉक्स का पहला संदिग्ध मामला

नई दिल्ली/एजेंसी। भारत में घातक एवं संक्रामक रोग मंकीपॉक्स का पहला संभावित मामला सामने आया है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने इस संबंध में जानकारी दी है। मंत्रालय का कहना है कि जांच जारी है और चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। मंत्रालय का कहना है कि हाल ही में विदेश यात्रा से लौटे युवा पुरुष रोगी की पहचान एमपॉक्स (मंकीपॉक्स) के संदिग्ध मरीज के तौर पर हुई है। रोगी को एक निर्दिष्ट अस्पताल में अलग रखा गया है और वर्तमान में उसकी हालत स्थिर है। वह ऐसे देश की यात्रा करके आया है जहां मंकीपॉक्स के मामले पाए गए हैं। एमपॉक्स की उपस्थिति की पुष्टि करने के लिए रोगी के नमूनों का परीक्षण किया जा रहा है। मामले को स्थापित प्रोटोकॉल के अनुसार प्रबंधित किया जा रहा है और संभावित स्रोतों की पहचान करने और देश के भीतर प्रभाव का आकलन करने के लिए संपर्क ट्रेसिंग जारी है। मंत्रालय के अनुसार इस मामले का विकास एनसीडीसी द्वारा किए गए पहले के जोखिम मूल्यांकन के अनुरूप है और किसी भी अनावश्यक चिंता का कोई कारण नहीं है। देश इस तरह के अलग-अलग यात्रा से संबंधित मामलों से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है और किसी भी संभावित जोखिम को प्रबंधित करने और कम करने के लिए मजबूत उपाय किए गए हैं।

हरियाणा में आप-कांग्रेस के बीच गठबंधन पर सहमति!

आप सांसद राघव चड्ढा ने कहा-आरजू, हसरत और उम्मीद भी है

प्रातः किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। हरियाणा विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के बीच सीट समझौते पर लगभग सहमति बन गई है। दोनों दल लोकसभा चुनाव की तर्ज पर विधानसभा चुनाव भी साथ मिलकर लड़ेंगे। संभावना है कि गठबंधन का एलान आज यानी सोमवार को हो सकता है। हरियाणा विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के साथ गठबंधन होगा या नहीं, इस सवाल के जवाब में आम आदमी पार्टी के राज्यसभा सांसद राघव चड्ढा ने रविवार को शायराना अंदाज में

कहा, आरजू भी है, हसरत भी है और उम्मीद भी है। राघव चड्ढा ने कहा, मैं व्यक्तिगत बयान या किसी खास सीट को लेकर कोई बयान नहीं देना चाहता। मैं इतना बता सकता हूं कि दोनों पार्टियों की एक इच्छा है, एक चाहत है, और गठबंधन की उम्मीद है। सीट शेयरिंग को लेकर बातचीत चल रही है। उन्होंने कहा कि नामांकन की आखिरी तारीख 12 सितंबर है। सीट शेयरिंग को लेकर अगर हम सहमत नहीं होते हैं या जीत की स्थिति नहीं बनती है, तो हम इसे छोड़ देंगे। उन्होंने कहा, जल्द ही मीडिया के सामने आएंगे और एक अच्छी खबर देंगे। सांसद ने दिल्ली के आप विधायक सोमनाथ भारती के उस बयान पर प्रतिक्रिया नहीं दी है, जिसमें भारती ने दावा किया है कि आप हरियाणा की 90 विधानसभा सीटों पर अपने दम पर चुनाव लड़ेगी। सोमनाथ भारती ने रविवार को एक्स पर एक पोस्ट में लिखा था, हरियाणा में आप-कांग्रेस गठबंधन पर मुहर लगने से पहले आप को मूल्यांकन करना चाहिए क्योंकि लोकसभा चुनाव के दौरान दिल्ली में ऐसा ही गठबंधन किया गया था। मेरे राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने लोकसभा चुनाव में तीनों कांग्रेस उम्मीदवारों के लिए रोड शो किया, वहीं आप के वरिष्ठ नेताओं और कैबिनेट मंत्रियों ने तीनों कांग्रेस उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया। लेकिन आप उम्मीदवारों, खासकर मुझे, दिल्ली कांग्रेस और स्थानीय नेताओं से बिल्कुल भी समर्थन नहीं मिला।

लखनऊ : इमारत हादसे में मरने वालों की संख्या हुयी आठ, 30 घायल

प्रातः किरण

लखनऊ/एजेंसी। उत्तर प्रदेश में लखनऊ के सरोजनीनगर क्षेत्र में शनिवार शाम तीन मंजिला इमारत के मलबे में मिले तीन और शवों के मिलने के बाद मृतकों की संख्या बढ़ कर आठ हो गयी है। हादसे में घायल 30 लोगों का उपचार विभिन्न अस्पतालों में चल रहा है। हादसे की जांच के लिये रविवार को मुख्यमंत्री के निर्देश पर जांच कमेटी का गठन होने की संभावना है जिसके बाद तीन मंजिला इमारत के ढहने की वजह सामने आयेगी और जिम्मेदारों पर कार्रवाई होगी। मंडलायुक्त रोशन जैकब के अनुसार मलबे में फंसे लोगों को निकालना प्रशासन की प्राथमिकता है। राहत एवं बचाव कार्य पूरा होने के बाद विशेषज्ञों की जांच कमेटी का गठन किया जायेगा। पुलिस आयुक्त अमित वर्मा ने रविवार को पत्रकारों को बताया कि ट्रांसपोर्ट नगर में हुये हादसे में अब तक आठ लोगों की मृत्यु हुयी है जबकि 30 घायल हुये हैं जिनका उपचार अलग अलग अस्पतालों में चल रहा है। इनमें से अधिकतर की हालत खतरे से बाहर है। मलबे में फंसे लोगों की तलाश फिलहाल जारी है मगर अब मलबे में किसी के फंसे होने की संभावना न के बराबर है। उन्होने कहा कि हादसे के कारणों की जांच के लिये विशेषज्ञों की कमेटी गठित की जायेगी और वह ही जांच के बाद हादसे की वजह की सटीक जानकारी दे सकेगी। श्री वर्मा ने बताया कि घायलों का इलाज विशेषज्ञ डाक्टरों की देखरेख में किया जा रहा है और पुलिस एवं जिला प्रशासन के अधिकारी अस्पतालों में मौजूद हैं और पल पल की जानकारी शासन को उपलब्ध करा रहे हैं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि मरने वालों में राज किशोर, रूद्र यादव, जगरूप सिंह, जसमीत सिंह साहनी, धीरज, पंकज तिवारी, अरुण सोनकर और राजेश कुमार शामिल हैं।

बैठक **प्रोटोकॉल मामलों के उप मंत्री अब्दुलमाजीद अल स्मरी ने किया जयशंकर प्रसाद का स्वागत**

भारत-जीसीसी विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए रियाद पहुंचे विदेश मंत्री

प्रातः किरण

रियाद/नई दिल्ली/एजेंसी। विदेश मंत्री एस जयशंकर पहली भारत-खाड़ी सहयोग परिषद के विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए रविवार को सऊदी अरब की राजधानी रियाद पहुंचे। विदेश मंत्री ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि प्रोटोकॉल मामलों के उप मंत्री अब्दुलमाजीद अल स्मरी ने उनका स्वागत किया। उन्होंने कहा प्रथम भारत-खाड़ी सहयोग परिषद के विदेश मंत्रियों की बैठक में भाग लेने के लिए रियाद, सऊदी अरब पहुंचा। इस गर्मजोशी भरे स्वागत के लिए प्रोटोकॉल मामलों के उप मंत्री अब्दुलमजीद अल स्मरी को धन्यवाद। रियाद में विदेश मंत्री द्वारा जीसीसी सदस्य देशों के विदेश मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय बैठकें करने की भी उम्मीद है। भारत और जीसीसी के बीच राजनीतिक, व्यापार और निवेश, ऊर्जा सहयोग, सांस्कृतिक और लोगों से लोगों के बीच संबंधों सहित कई क्षेत्रों में गहरे और बहुआयामी संबंध हैं। जीसीसी क्षेत्र भारत के लिए एक प्रमुख व्यापारिक भागीदार के रूप में उभरा है और यह एक बड़े भारतीय प्रवासी समुदाय का घर है, जिनकी संख्या लगभग 80 लाख 90 हजार है। एक बयान में कहा गया है कि विदेश मंत्रियों की बैठक भारत और जीसीसी के बीच विभिन्न क्षेत्रों में संस्थागत सहयोग की समीक्षा करने और उसे गहरा करने का अवसर होगी। जीसीसी एक क्षेत्रीय, अंतरसरकारी, राजनीतिक और आर्थिक संघ है जिसमें बहरीन, कुवैत, ओमान, कतर, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात शामिल हैं। परिषद का मुख्य मुख्यालय सऊदी अरब की राजधानी रियाद में स्थित है। विदेश मंत्री द्विपक्षीय यात्राओं के लिए रियाद से जर्मनी और स्विट्जरलैंड के रवाना होंगे।

खाड़ी सहयोग परिषद क्या है? : छह मध्य पूर्वी देशों - सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, कतर, बहरीन और ओमान का यह एक राजनीतिक और आर्थिक गठबंधन है। जीसीसी की स्थापना 1981 में सऊदी अरब के रियाद में हुई थी. जीसीसी का उद्देश्य अपने सदस्य देशों के बीच उनके साझा उद्देश्यों और उनकी समान राजनीति और सांस्कृतिक पहचान के आधार पर एकता प्राप्त करना है, जो अरब और इस्लामी संस्कृतियों में निहित है। इस परिषद की अध्यक्षता हर साल बदलती रहती है।

भारत के लिए क्यों महत्वपूर्ण है जीसीसी? : खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) भारत का सबसे बड़ा क्षेत्रीय-ब्लॉक व्यापार भागीदार है। वित्त वर्ष 2022-23 में जीसीसी के साथ व्यापार भारत के कुल व्यापार का 15.8 प्रतिशत था, जबकि यूरोपीय संघ के साथ कुल व्यापार का 11.6 प्रतिशत था। यूएई हमेशा से खाड़ी के भीतर भारत का प्रमुख व्यापारिक भागीदार रहा है और कुल मिलाकर भारत का तीसरा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, जबकि सऊदी अरब चौथे स्थान पर है।

पैरालंपिक खेल : भारत ने रिकॉर्ड 29 पदकों के साथ किया समापन

प्रातः किरण

नई दिल्ली/ एजेंसी। पेरिस पैरालंपिक में भारतीय अभियान समाप्त हो गया है। भारत ने पेरिस पैरालंपिक में सात स्वर्ण, नौ रजत और 13 कांस्य सहित 29 पदकों के रिकॉर्ड के साथ अपने ऐतिहासिक अभियान का समापन किया। भारत ने इस बार अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए पदक तालिका में 18वां स्थान हासिल किया। टोक्यो पैरालंपिक में भारत 18 पदक जीतने में कामयाब हुआ था इस बार पहले से बेहतर 11 पदकों की संख्या में इजाफा किया है। रविवार को महिलाओं की कयाक 200 मीटर में प्रतिस्पर्धा कर रही पूजा ओझा फाइनल के लिए क्वालीफाई करने से चूक गई। उनके इस प्रदर्शन के साथ ही भारत का अभियान समाप्त हो गया है। भारत ने कई खेलों में शानदार प्रदर्शन किया। जिसमें उसने

स्विटजरलैंड, दक्षिण कोरिया, बेल्जियम और अर्जेंटीना जैसे शक्तिशाली देशों को हराया, जो सभी स्टैंडिंग में भारत से पीछे रहे। भारत का 29वां और अंतिम पदक नवदीप सिंह के सौजन्य से आया, जिन्होंने शनिवार को पुरुषों की भाला फेंक एफ 41 वर्गीकरण में स्वर्ण पदक जीता। नवदीप ने चीन के सुन पेंगजियांग को पीछे छोड़ते हुए 47.32 मीटर थ्रो के साथ सिल्वर मेडल हासिल किया था। हालांकि, बाद में ईरान के खिलाड़ी को डिस्क्वालीफाई किए जाने के बाद उनको स्वर्ण पदक दिया गया। सिमरन शर्मा ने अपने गाइड अभय सिंह के साथ मिलकर महिलाओं की 200 मीटर (टी12) स्पर्धा में कांस्य पदक जीता। भारत के ट्रैक-एंड-फील्ड एथलीट विशेष रूप से सफल रहे, जिन्होंने कुल मिलाकर चार स्वर्ण सहित 17 पदक जीते। प्रीति पाल ने 100 मीटर और 200 मीटर (टी 35) स्प्रिंट में दो कांस्य पदक के साथ एथलेटिक्स में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनकर इतिहास रच दिया। निशानेबाज अवनि लेखरा ने महिलाओं की 10 मीटर एयर राइफल में एसएच1 स्टैंडिंग में अपने टोक्यो 2020 खिताब का सफलतापूर्वक बचाव किया, जो दो बार की पैरालिंपिक स्वर्ण पदक विजेता बनीं। पैरा-बैडमिंटन में, थुलसिमति मुरुगेसन ने महिला एकल एसयूएस में रजत पदक हासिल करके खेल में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला के रूप में इतिहास रच दिया।

संक्षिप्त समाचार

बदमाशों ने की ज्जस्काटने की कोशिश, लोगों ने एकजुट होकर दिखाई हिम्मत

रुड़की , एजेंसी। रुड़की में एटीएम काटने की कोशिश कर रहे दो बदमाशों ने लोगों ने पकड़ लिया। और फिर पुलिस को सूचना दी। कोतवाली गंगनहर थाना क्षेत्र के चावमंडी गोशाला के पास लगे एटीएम में दो बदमाशों ने घुसकर एटीएम को काटने का प्रयास किया। इस बात की जानकारी यहां पर घास मंडी में घास लेने आए लोगों को मिली तो उन्होंने पुलिस को सूचना दी। पुलिस के पहुंचने लोगों ने आरोपियों को पकड़कर एटीएम का शटर बंद कर दिया। इसके बाद पुलिस उनको साथ ले गई। आरोपी के पास से लखनऊ नंबर की बाइक एवं कटर आदि मिला है। पुलिस पूछताछ कर रही है।

एसआरएचयू में एक हजार किलोवाट क्षमता का नया सौर ऊर्जा संयंत्र लगा

ऋषिकेश, एजेंसी। स्वामी राम हिमालयन विश्वविद्यालय (एसआरएचयू) में एक हजार किलोवाट का छत वाला सौर ऊर्जा संयंत्र लगाया गया है। जिससे संयंत्र की क्षमता बढ़कर 2500 किलोवाट हो गई है। एसआरएचयू के अध्यक्ष डॉ. विजय धस्माना ने कहा कि 2017 में राष्ट्रीय सौर मिशन से जुड़कर नर्सिंग और मेडिकल कॉलेज में 500 किलोवाट के संयंत्र लगाए गए। विश्वविद्यालय परिसर स्थित विभिन्न भवनों की छतों में 2500 किलोवाट का संयंत्र लगाए जा चुके हैं। इससे अब तक एसआरएचयू 8219330 किलोवाट (यूनिट) बिजली की बचत कर चुका है। जिसके करीब 5660 टन कार्बन उत्सर्जन में कमी आई है। इलेक्ट्रिकल एवं मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग प्रभारी गिरीश उनियाल ने कहा कि संस्थान अपनी बिजली की मांग का 16 फीसदी सोलर पावर प्लांट से पूरा कर रहा है। अध्यक्ष डॉ. विजय धस्माना ने बताया कि सौर ऊर्जा का इस्तेमाल से पहाड़ों के दूरस्थ गांवों में पानी पहुंचाने के लिए भी किया है। टिहरी के चंबा में ग्राम चुरेड़धार में सोलर पंपिंग प्लांट के जरिये गांव में पानी पहुंचाया गया है। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) ने विश्वविद्यालय को ग्रीन प्रेक्टिसेस अवॉर्ड की सर्विस कैटेगरी में गोल्ड अवॉर्ड से सम्मानित किया है।

21वीं सदी में भी कठिन डगर, सिस्टम बेखबर

चंपावत, एजेंसी। जहां एक ओर 21 वीं सदी में पग-पग पर स्कूल खोले गए हैं वहीं सीमांत तल्ला देश के 10 ग्राम पंचायतों बच्चों को यातायात सुविधा के अभाव में 25 से 30 किमी पैदल चलना पड़ रहा है। क्षेत्र में उच्च माध्यमिक विद्यालय नहीं होने से बच्चे शिक्षा लेने के लिए 20 से 30 किमी पैदल तीन क्लस्टर विद्यालयों में पढ़ने जाते हैं। तल्ला देश क्षेत्र के 10 ग्राम पंचायतों के विद्यालयों के बच्चों के लिए पढ़ाई काफी मुश्किल है। वह रोज पढ़ाई के लिए संघर्ष करते हैं। रोजाना समय से उठकर विद्यालय पहुंचना और पैदल आना जाना उनके लिए कठिन चुनौती होती है। वाहन की कोई व्यवस्था नहीं होने से उनके लिए स्कूल पहुंचना आसान नहीं होता है। 174 बच्चों को पढ़ाई के लिए क्लस्टर विद्यालय जीआईसी तामली, मंच, धौन जाना पड़ता है। दुर्गम जंगल के रास्ते से पैदल चलकर विद्यालयों तक पहुंचने में बच्चों को परेशानी होती है। इस कारण क्षेत्र की अधिकांश बालिकाओं के लिए कक्षा 10 की पढ़ाई के बाद इंटर की पढ़ाई मुश्किल होती है।

जीआईसी गुरुड़ाबांज में नियमित प्रवक्ताओं के चार पद खाली

अल्मोड़ा, एजेंसी। पीएमश्री का दर्जा मिलने के बाद भी जीआईसी गुरुड़ाबांज में शिक्षकों की कमी दूर नहीं हुई। विद्यालय में प्रवक्ताओं के चार पदों पर एक भी नियमित शिक्षक नहीं है। जीआईसी गुरुड़ाबांज में भौतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, भूगोल विषय के प्रवक्ताओं के पद रिक्त हैं। विद्यालय में आसपास के गांवों से 400 से अधिक विद्यार्थी ज्ञान लेने पहुंचते हैं, लेकिन शिक्षकों की कमी से उन्हें परेशानी झेलनी पड़ रही है।
विद्यालय में वर्ष 2015 से प्रधानाचार्य का पद रिक्त है। एक प्रवक्ता को प्रधानाचार्य का प्रभार दिया गया है। जिस कारण संबंधित शिक्षक को कक्षाओं में समय देना मुश्किल होता है।

मुगलकाल से चले आ रहे शाही स्नान और पेशवाई शब्द से मुक्ति की तैयारी, अखाड़ा परिषद ने बनाई योजना

हरिद्वार, एजेंसी। अखाड़ा परिषद दो माह बाद प्रारंभ हो रहे प्रयाग कुंभ से पूर्व पेशवाई और शाही नामों को मुगलकालीन बताकर बदलने जा रही है। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्र पुरी ने बताया, इसका निर्णय प्रयागराज में कुंभ स्नानों से पूर्व कर लिया जाएगा।

चार स्थानों में से कुंभ कहीं भी हो इसके समस्त स्नानों का मुख्य आकर्षण अखाड़ों और साधु-संतों के स्नान पर्व रहते हैं। अखाड़ों की जमातें कुंभ नगरों के बाहर कब डेरा डालती हैं, तेरह अखाड़ों की छावनियों में किस दिन प्रवेश करती हैं, किस दिन ध्वज चढ़ता है और किस दिन कुंभ के शाही स्नान होने हैं, करोड़ों के मेले का तमाम केंद्र वही तिथियां रहती हैं।

छावनियों में प्रवेश को पहले प्रवेशवाई कहा जाता था, जो मुगल काल में पेशवाई हो गई। चूंकि, कुंभ स्नानों के दिन तमाम तामझाम हाथी, घोड़ों, ऊंटों और रथों के साथ राजा महाराजा भी अखाड़ों के साथ चलते थे, लिहाजा शाही प्रबंधों के कारण उन्हें शाही स्नान कहा जाने लगा। अब

अखाड़ा परिषद दो माह बाद प्रारंभ हो रहे प्रयाग कुंभ से पूर्व पेशवाई और शाही नामों को मुगलकालीन बताकर बदलने जा रही है।

अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष श्रीमहंत रविंद्र पुरी ने बताया, इसका निर्णय प्रयागराज में कुंभ स्नानों से पूर्व कर लिया जाएगा। यह काम अखाड़ा परिषद की बैठक बुलाकर परामर्श के बाद किया जाएगा। नए नाम भाषाविदों के साथ परामर्श के बाद घोषित किए जाएंगे। रविंद्र पुरी ने बताया, संस्कृत अथवा हिंदी भाषा से नामों का चलन किया जाएगा।

उर्दू या फारसी के अन्य नाम भी अखाड़ों से हटाए जाएंगे। बताया, प्रयागराज, हरिद्वार, नासिक एवं उज्जैन में कुंभ भरते हैं। संबंधित चारों राज्यों की सरकारों को भी लिखित सूचना दी जाएगी, ताकि कुंभ स्नानों में नए नाम सरकारी व्यवस्थाओं में भी जोड़े जा सकें।ज्ञात हो कि कुंभ मेलों के तमाम आयोजन संन्यासियों के सात, बैरागियों के तीन, उदासियों के दो और निर्मलों के एक वैभवशाली इतिहास से जुड़े हैं।

आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज ने देश के लाखों नागाओं, बैरागियों, उदासीनों और निर्मलों को अखाड़ों में संगठित किया था। अखाड़ों को हिंदू राजाओं का राज्याश्रय प्राप्त था। उसी दौर में उर्दू फारसी के जखीरा, मालो असबाब, खजाना आदि अनेक शब्द अखाड़ों में प्रविष्ट हो गए।

अब अखाड़े खुद ये शब्द बदलेंगे। इसके लिए जूना, अग्नि, आह्वान, निरंजनी, महानिर्वाणी, आनंद, अटल, निर्मोही अणी, निर्वाणी अणि, दिगंबर अनी, बड़ा अखाड़ा उदासीन, नया अखाड़ा उदासीन और निर्मल अखाड़े के श्रीमहंतों की बैठक प्रयागराज में शीघ्र बुलाई जाएगी।

एसडीएम ने जूस पिलाकर तुड़वाया अनशन, 51 सूत्री मांगों को लेकर चल रहा आंदोलन समाप्त

बागेश्वर, एजेंसी। बागेश्वर में कांग्रेस का 51 सूत्री मांगों को लेकर चल रहा आंदोलन समाप्त हो गया है। एसडीएम मोनिका ने क्रमिक अनशन पर बैठे कांग्रेस के जिला संगठन मंत्री कवि जोशी को जूस पिलाया और उनका अनशन समाप्त करवाया।

कांग्रेस का 51 सूत्री मांगों को लेकर चल रहा आंदोलन समाप्त हो गया है। एसडीएम मोनिका ने क्रमिक अनशन पर बैठे कांग्रेस के जिला संगठन मंत्री कवि जोशी को जूस पिलाया और उनका अनशन समाप्त करवाया।

बुधवार को जिले और नगर की स्वास्थ्य, यूजर चार्ज, चिकित्सकों की नियुक्ति, पुलों की मरम्मत, सड़कों के सुधारीकण आदि मांगों को लेकर कांग्रेस ने तहसील परिसर में आंदोलन शुरू किया था। बृहस्पतिवार को एसडीएम मोनिका ने अधिकारियों और आंदोलनकारियों के साथ बैठक की। एसडीएम ने बताया कि जिन बिंदुओं को लेकर अनशन चल रहा है, उनमें कार्य चल रहा है। इसके बाद कांग्रेस पार्टी और जिला संगठन मंत्री ने अनशन समाप्त करने का निर्णय लिया। वहां पर पूर्व विधायक ललित फर्स्वाण, पूर्व जिपं अध्यक्ष हरीश ऐठानी, अंकुर उपाध्याय, बबलू नेगी, गोपा धपोला, पूजा आर्या आदि मौजूद रहे।

पार्टी को मजबूत करने के लिए संवाद को बढ़ावा देगी कांग्रेस

बागेश्वर, एजेंसी। संगठन की मजबूती और अनुशासन बनाए रखने के लिए कांग्रेस पार्टी जोरशोर से जुट गई है। पार्टी के प्रदेश अनुशासन समिति के अध्यक्ष नव प्रभात सिंह ने कहा कि कार्यकर्ता और पदाधिकारियों के बीच की दूरी को मिटाने और आपसी मतभेद दूर करने के लिए पार्टी संवाद परंपरा को बढ़ाने जा रही है। बूथ स्तर तक यह कार्यक्रम चलाया जाएगा और कार्यकर्ताओं को पार्टी की नीति, रीति और आगामी कार्यक्रमों की जानकारी दी जाएगी।

बृहस्पतिवार को पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं की बैठक लेते हुए अनुशासन अध्यक्ष नव प्रभात ने कहा कि वह पूरे प्रदेश का भ्रमण करके कांग्रेस कार्यकर्ताओं से मिलकर समस्याओं की जानकारी ले रहे हैं। वर्तमान में प्रतिद्वंदी राजनीतिक दल की जनता में जो पकड़ बनी है, उसकी हकीकत को लोगों तक पहुंचाने के लिए कार्यकर्ताओं से संवाद करना जरूरी है। कांग्रेस ने देश के विकास में जो योगदान दिया है और आगे जो कार्यक्रम तय किए हैं उसकी जानकारी संवाद के माध्यम से ही दी जाएगी। कहा कि संवाद कार्यक्रम से पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं के बीच की दूरी कम होगी। इस मौके पर पूर्व विधायक ललित फर्स्वाण, राजेंद्र टंगड़िया, गोपा धपोला, गीता रावल, हरीश त्रिकोटी, किशन कठायत आदि मौजूद रहे।

सीमांत जिले में मलबा, बोल्डर आने से 22 सड़कें बंद

पिथौरागढ़, एजेंसी। सीमांत जिले में मलबा, बोल्डर आने से 22 सड़कें बंद हैं। सड़कें बंद होने से ग्रामीणों को आवाजाही में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

ग्रामीण क्षेत्र की थल-सातशिलिंग सड़क मुवानी धारे के पास बंद है। इसके अलावा बांसबगड़-कोटा पंद्रहपाला, खेला-गर्गुवा, पौड़ी-घटकुना, एलागाड़-जुम्मा, मदकोट-तोमिक, बंगापानी-जाराजिबली, नाचनी-भैंसकोट, होकरा-नामिक, मसूरीकांठा-होकरा, मुनस्यारी-हरकोट, सेलमपानी-विचना सड़कें बंद हैं। इनके अलावा मदकोट-बोना, बांसबगड़-धामी गांव, साईपोलू-क्वीरीजिमिया, पमतोड़ी-भांतड़-चनकाना, चुपकोट बैंड-जमराड़ी, कोटा कांडाधुरा-मुनस्यारी, मालाकोट-लोध-डोकुला, मुनस्यारी-नाचनी-पांगरपानी सड़कें बंद हैं। पिछले 24 घंटे में बंगापानी में सर्वाधिक 60, थल में 34.3,

धारचूला में 34, तेजम में 20 मिमी बारिश हुई।
संवाद

थल। जिला मुख्यालय को जोड़ने वाला थल-सातशिलिंग राजमार्ग तीन दिन पूर्व सड़क का सौ मीटर हिस्सा धंसने और नागीमाल पहाड़ी में दरार आने से ध्वस्त हो गया था। ऊपरी पहाड़ी से बोल्डर लगातार गिरने से सड़क क्षतिग्रस्त हो गई। बीते दिन भी बोल्डर गिरते रहे और भू कटाव होता रहा। शुक्रवार को दोपहर सवा तीन बजे लोनिवि पिथौरागढ़ के कनिष्ठ अवर अभियंता मुकेश चंद्र जुकरिया ने जेसीबी से मलबा हटाने का कार्य शुरू कर दिया है। ऊपरी पहाड़ी से मलबा गिरने और नीचे रामगंगा के कटान से सड़क खोखली होने के चलते जेसीबी से मलबा हटाने में भी काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

रोजगारपरक योजनाओं का लाभ उठाएं ग्रामीण : सीडीओ

बागेश्वर, एजेंसी। जिले के दूरस्थ गांव कर्मी में चौपाल का आयोजन किया गया। मुख्य विकास अधिकारी आरसी तिवारी ने चौपाल में ग्रामीणों की समस्याओं को सुना। उन्होंने ग्रामीणों से सरकार की रोजगारपरक और कल्याणकारी योजनाओं का लाभ उठाने की अपील की।

चौपाल में ग्रामीणों ने बंद और बदहाल पड़ी सड़कों की मरम्मत, क्षेत्र में बैंक शाखा खुलवाने, पैदल रास्तों की मरम्मत समेत अन्य प्रमुख समस्याएं उठाई। सीडीओ तिवारी ने ग्रामीणों की समस्याओं के निदान का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि जिले में खेती, बागवानी, जड़ी-बूटी के क्षेत्र में आजीविका संवर्धन करने की अपार संभावना है। इच्छुक किसानों को हर संभव मदद की जाएगी। उन्होंने आशा एवं एएनएम के माध्यम से सभी गर्भवतियों की लगातार ट्रैकिंग करने के निर्देश स्वास्थ्य विभाग को दिए। होमस्टे संचालन के इच्छुक लोगों को भी आगे आकर लाभ उठाने की अपील की। अधिकारियों से योजनाओं के प्रति जानकारी नहीं रखने वाले ग्रामीणों को जागरूक करने को कहा। इस मौके पर जिला उद्यान अधिकारी आरके सिंह, खंड विकास अधिकारी ख्याली राम आदि मौजूद रहे।

हल्द्वानी की बेटियां सावधान : योग पार्क, गौलापार, शनि बाजार समेत 11 स्थान असुरक्षित, छात्राओं ने बताई आपबीती

हल्द्वानी, एजेंसी। हीरानगर का योग पार्क, बागजाला जाने वाला रास्ता, गौलापार, त्रिमूर्ति मंदिर के पास, कमलुवागांजा, लालडांठ चौराहा, डहरिया, जवाहर नगर, आंबेडकर नगर, शनि बाजार, समता आश्रम गली में जाने से बेटियां असुरक्षित महसूस करती हैं।

यह बात जेल रोड स्थित जीजीआइसी स्कूल की बालिकाओं ने महिला अधिकारियों से कही। जिस पर महिला अधिकारियों ने बालिकाओं को जल्द इन स्थानों पर पुलिस की ओर से कार्यवाही का भरोसा दिलाया।

महिला एवं बाल विकास विभाग की ओर से बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के तहत ÷असुरक्षित स्थानों के चिह्नीकरण÷ विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में प्रशिक्षण एवं कौशल विभाग की अपर निदेशक ऋचा सिंह व बाल विकास अधिकारी शिल्पा जोशी ने छात्राओं से ऐसे स्थानों के बारे में पूछा, जहां वह असुरक्षित महसूस करती हैं।

बालिकाओं की ओर से असुरक्षित स्थान बताने के साथ ही स्वयं के साथ हुई घटनाओं का विवरण भी दिया। छात्राओं ने कहा कि स्कूल की छुट्टी के समय गेट के पास लड़के खड़े होकर छेड़खानी करते हैं और घर तक पीछा करते हैं। साथ ही टेंपो वाले जबरदस्ती बैठाने के लिए भीड़ लगा लेते हैं। इससे वह असहज महसूस करती हैं।

बताया कि स्कूलों के पास युवक झुंड बना कर खड़े रहते हैं, गाड़ी स्पीड से चलाते हैं और आते-जाते लड़कियों को छेड़ते हैं। कार्यशाला में डा. आयुषी ने महिला स्वास्थ संबंधी, पुलिस विभाग से एसआई ज्योति कोरंगा ने महिला हेल्पलाइन एप और जिला प्रोबेशन कार्यालय से तबस्सुम ने हेल्पलाइन नंबर की जानकारी दी। इस दौरान यशोदा साह, सुशीला ग्वाल आदि मौजूद रहे। कार्यशाला मे छात्राओं ने कुछ सुझाव भी पेश किए जैसे स्कूलों के आसपास छुट्टी के समय पुलिस की गश्त। टेंपो व ई-रिक्शा चालकों का सत्यापन। आटो, ई-रिक्शा, बस स्टैंड व अन्य चिह्नित स्थानों पर पेट्रोलिंग का भी सुझाव दिया।

गहनों की दुकान में हुई चोरी का खुलासा, दो गिरफ्तार, दो फरार

ऋषिकेश, एजसा। रानापाखरी स्थित ज्वेलर्स की दुकान का ताला तोड़कर जेवर और नकदी चुराने वाले दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जबकि दो आरोपी अभी फरार हैं।

छह जुलाई को सोनू रस्तोगी निवासी दोनली रानीपोखरी ने थाने में अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। कहा था उनकी दोनली स्थित ज्वेलरी की दुकान का ताला तोड़कर सोने, चांदी की जेवर और नगदी चोरी हो गई। पुलिस और एसओजी की संयुक्त टीम ने सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की छानबीन की। चार व्यक्ति दुकान का ताला तोड़कर अंदर से सामान चोरी करते नजर आए। बृहस्पतिवार की रात पुलिस ने चेकिंग के दौरान बड़कोट तिराहा रानीपोखरी के पास से चार संदिग्धों को रोका।

पुलिस ने लालू और कृष्ण कुमार उर्फ अंडू निवासी ईसापुर थाना निगोही जिला शाहजहांपुर उत्तर प्रदेश को दबोच लिया। जबकि उनके दो साथी गंगा सिंह निवासी रमपुरा, जिला खीरी, उत्तरप्रदेश और चपेटा निवासी ईशापुर थाना निगोही जिला शाहजहांपुर उत्तरप्रदेश फरार हैं। आरोपियों के पास से 315 बोर का तमंचा, चाकू, चार जिंदा कारतूस मिले। पूछताछ में बताया कि रानीपोखरी में सुनार की दुकान में उन लोगों ने चोरी की घटना की। आरोपियों ने बताया कि सहसपुर थाना क्षेत्र के एक स्कूल से भी चोरी की।

आरोपियों ने बताया कि चोरी करने के बाद आठ से नौ ग्राम सोना और पांच किलो चांदी को मुजफ्फरनगर में सुनार अमित कुमार को तीन लाख रुपये में बेचा। पुलिस ने मुजफ्फरनगर से चोरी का माल खरीदने वाले अमित कुमार को भी गिरफ्तार कर एक किलो गलाई हुई चांदी बरामद की गई। थानाध्यक्ष रानीपोखरी संदीप कुमार ने बताया कि आरोपियों की निशानदेही से चोरी कर छिपाए नकली गहने को वीरपुर मोड़ बड़कोट रोड रानीपोखरी से बरामद किया है।

गर्भवती से छेड़खानी, बच्ची की मौत के बाद भी दर्ज नहीं हुआ मुकदमा

रामनगर, एजेंसी। क्षेत्र में गर्भवती महिला से छेड़खानी करने वाले मौसा पर पुलिस सात दिन बाद भी प्राथमिकी दर्ज नहीं कर पाई है। इस घटना में महिला का अधिक रक्तस्राव होने के कारण डिलीवरी के बाद बच्ची की मौत हो गई थी।

घटना के दिन 31 अगस्त को महिला के पिता ने आरोपित के विरुद्ध पुलिस को तहरीर सौंप दिया था। मालूम हो कि मोहल्ला भवानीगंज निवासी महिला सात माह की गर्भवती थी। 31 अगस्त को उसके मौसा ने उसे घर में अकेला देख उससे अश्लील हरकतें व जोर जबरदस्ती की। इससे महिला के पेट में लग गई और रक्तस्राव हो गया।

इसके बाद बीते मंगलवार की सुबह घर में ही महिला की सामान्य डिलीवरी हो गई। लेकिन बच्ची की हालत खराब होने की वजह से उसकी मौत हो गई। महिला के पिता की ओर से 31 अगस्त को ही कोतवाली में तहरीर दी गई थी।

पुलिस ने तहरीर को रिसिव भी कर दिया था। इसके बाद अगले दिन बुधवार को पीड़िता ने कोतवाली पहुंचकर घटना की जानकारी भी दी।

जानकारी के अनुसार पता चला कि इन दिनों दोनों पक्षों के बीच समझौते का खेल चल रहा है, इसी कारण प्राथमकी दर्ज करने में देरी हो रही है। कोतवाली के एसएसआई मनोज नयाल ने बताया कि अभी तहरीर पर प्राथमिकी दर्ज नहीं हुई है। उसमें जांच चल रही है।

नौ से शुरू होगा कोट भ्रामरी नंदाष्टमी मेला

गरुड़ (बागेश्वर), एजेंसी। नौ सितंबर से शुरू होने वाले कोट भ्रामरी नंदाष्टमी मेले का विधिवत उद्घाटन 10 सितंबर को केंद्रीय परिवहन राज्य मंत्री अजय टम्टा करेंगे। मेले की तैयारियों को लेकर ब्लॉक सभागार में मेला कमेटी की अध्यक्ष/ब्लॉक प्रमुख हेमा बिष्ट की अध्यक्षता में बैठक हुई। मेले से जुड़े सभी विभागों के कर्मचारियों और मेले के चारों खामों के ग्रामीणों ने प्रतिभाग किया।

ब्लॉक प्रमुख और तहसीलदार निशा रानी ने मेले की तैयारियों के संबंध में हर बिंदु पर चर्चा की। मंदिर के प्रधान बलवंत सिंह भंडारी ने बताया मेला परिसर और कोट भ्रामरी मंदिर परिसर में रंग रोगन का कार्य पूर्ण हो गया है।

मुवानी महाविद्यालय में नए विषय खोलने का प्रस्ताव दो साल से शासन में अटका

पिथौरागढ़, एजेंसी। राजकीय महाविद्यालय मुवानी में 10 साल बाद भी नए विषयों को स्वीकृति नहीं मिल सकी है। इतिहास, भूगोल, गृह विज्ञान, शारीरिक विज्ञान विषय खोलने का प्रस्ताव शासन में लटका है । छात्र-छात्राएं इन विषयों का ज्ञान लेने के लिए अन्य महाविद्यालयों की दौड़ लगा रहे हैं।

मुवानी में वर्ष 2014 में महाविद्यालय का संचालन शुरू हुआ है। क्षेत्र के युवाओं को उम्मीद थी कि अब उन्हें स्थानीय स्तर पर सभी विषयों का ज्ञान मिलेगा और उच्च शिक्षा के लिए अन्य महाविद्यालयों की दौड़ नहीं लगानी होगी। अब तक ऐसा नहीं हो सका है। 10 साल बाद एक भी नया विषय संचालित नहीं हो सका है। क्षेत्र के छात्र-छात्राओं और अभिभावकों की मांग पर महाविद्यालय प्रबंधन ने दो साल पूर्व इतिहास, भूगोल, गृह विज्ञान और शारीरिक विज्ञान विषय संचालित करने का प्रस्ताव शासन में भेजा जो अब भी सरकारी फाइलों

में सिमटा है। सिस्टम की इस बेरुखी से क्षेत्र के विद्यार्थी इन विषयों की पढ़ाई के लिए 60 किमी दूर जिला मुख्यालय की दौड़ लगाने के लिए मजबूर हैं। महाविद्यालय प्रबंधन भी नए विषयों की स्वीकृति का इंतजार कर रहा है।

नए विषयों को स्वीकृति न मिलने से बेटियों को अधिक परेशानी झेलनी पड़ रही है। गृह विज्ञान छात्राओं का पसंदीदा विषय है जो मुवानी महाविद्यालय में संचालित नहीं हो रहा है। बेटियों के सामने इस विषय की पढ़ाई के लिए पिथौरागढ़ परिसर पहुंचना एकमात्र विकल्प है।

विशिष्टता और विशेषता को समझे बिना विकास संभव नहीं : विजय

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। गया के सिजुआर भवन में बिहार प्रदेश संस्कार भारती के तत्वावधान में आयोजित दो दिवसीय मगही कला उत्सव के समापन सत्र को सम्बोधित करते हुए बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि संस्कार भारती के इस कार्यक्रम का उद्देश्य सहकार और समरसता की सतत धारा से जन-जन को जोड़ना है ।कला और संस्कृति को लेकर प्रचलित आयातित विमर्श की जगह अपनी मौलिक सनातन सोच को प्रतिष्ठित करना ऐसे आयोजनों का व्यापक लक्ष्य है। आज जब देश अमृत काल में विकसित भारत के बड़े संकल्प के साथ गतिशील है। ऐसे में हमें अपनी कला और संस्कृति से जुड़ी गतिविधियों को लोकमंगल के लक्ष्य के साथ जोड़ना है। हमें अपने सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक समरसता, संस्कारित कुटुंब भाव, प्रकृति से जुड़ाव, अपनी समृद्ध विरासत से जुड़ाव और हर भारतीय के मन में नागरिक कर्तव्य-बोध को जगाने का प्रयत्न करना हैं। इन पांच प्रणों से अमृत-पीढ़ी के हमारे युवाओं को विशेष रूप से दीक्षित करना भी हमारी अहम जिम्मेवारी है। श्री सिन्हा ने आगे कहा कि अपनी कला और संस्कृति के संरक्षण और संवर्द्धन की जब हम बात करते हैं तो हमें सबसे पहले यह विचार करना चाहिए कि कला और संस्कृति के बारे में हमारी मौलिक सोच क्या रही है? हमें यह विचार भी करना चाहिए कि कलाएं केवल मनोरंजन के उद्देश्य को पूरा करने वाली चीज है या उससे व्यापक कोई अर्थ उसमें है? हमारे यहां साहित्य, संगीत, नृत्य या कोई भी कला , साधना का स्वरूप मानी गई है। इसलिए हमारी सनातन संस्कृति में कलाकार को साधक का दर्जा दिया जाता था। श्री सिन्हा ने कहा कि बीच के कालखंड में हमारी सांस्कृतिक सोच में कुछ प्रदूषण आ गया। आयातित विचारों के प्रभाव में हम सत्व पर आधारित आध्यात्मिक संस्कृति से भोगवादी मानसिकता के प्रभाव में आ गए। इस कुप्रभाव के कारण ही हमारे समाज में कला और कलाकार का अवमूल्यन हुआ। श्री सिन्हा ने कहा कि बीते दिनों में राज्य के कला-संस्कृति विभाग के तत्वावधान में अपने समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से राज्य के जन-जन को जोड़ने का एक राज्यव्यापी पहल शुरू की गई है। सांस्कृतिक विरासत ज्ञानोत्सव नामक इस जिलेवार कार्यक्रम के जरिए हमारा प्रयास है राज्य का हर नागरिक अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत पर गौरव करते हुए उसे संरक्षित और संवर्धित करने में अपनी भूमिका को पहचाने। क्योंकि अपनी विशिष्टता और विशेषता को समझे बिना समेकित और स्थायी विकास को सुनिश्चित नहीं किया जा सकता । विरासत की नींव पर टिकी विकास की इमारत ही मौलिक भी होगी और मजबूत भी होगी।

सभी बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ना सरकार का काम : दिलीप

निजी विद्यालयों का समाज निर्माण में बड़ा योगदान

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। प्राइवेट स्कूल एंड चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा आज पटना के रविंद्र भवन में शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह को संबोधित करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने कहा कि सरकार की यह जिम्मेदारी है कि प्रदेश के एक - एक बच्चे को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ा जाए। उन्होंने यह भी कहा कि मेरा मानना है कि यह काम हम सिर्फ सरकार के भरोसे नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि इस कार्य में आज प्राइवेट स्कूल और प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन बड़ी सहभागिता निभा रहा है। भाजपा अध्यक्ष डॉ. जायसवाल ने कहा कि आज हकीकत है कि मंत्री, अधिकारी, सांसद, विधायक सभी अपने बच्चो को प्राइवेट स्कूल में ही पढ़ाना चाहते है। उन्होंने हालांकि यह भी कहा कि सरकार शिक्षा के क्षेत्र में लगातार काम कर रही है। पहले से स्थिति में सुधार भी हुआ है। उन्होंने कहा कि प्राइवेट स्कूल अच्छे रहे और स्कूल प्रबंधन को भी सच्चा न्याय मिले इसकी चिंता भी सरकार को करनी चाहिए। उन्होंने प्राइवेट स्कूल एसोसियेशन के लोगों को भरोसा देते हुए कहा कि उनकी समस्याओं के समाधान की कोशिश की जाएगी। उन्होंने स्पष्ट कहा कि समाज निर्माण में इनका बड़ा योगदान है। इस मौके पर उपस्थित भारतीय पुलिस सेवा के वरिष्ठ अधिकारी विकास वैभव की तारीफ करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के मंत्री डॉ. जायसवाल ने कहा कि सरकारी जवाबदेही को निभाते हुए समाज की जिम्मेदारी निभाना आसान नहीं है। विकास वैभव न केवल यह दोनों दायित्व निभा रहे हैं बल्कि युवाओं को भी आगे ला रहे हैं।

राजद ने बिहार में अपराध पैदा किया उसे इस पर बोलने का हक नहीं

पटना। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने राजद पर कटाक्ष करते हुए कहा कि जिसने बिहार में अपराध पैदा किया हो उसे अपराध पर बोलने का हक नहीं है। उन्होंने विपक्ष के नेता तेजस्वी यादव द्वारा हाल में जारी आपराधिक घटनाओं की सूची जारी करने पर कहा कि पहले उन्हें राजद काल के अपराधिक घटनाओं की सूची जारी करनी चाहिए। डॉ. जायसवाल ने प्रदेश कार्यालय में पत्रकारों से चर्चा के दौरान कहा कि राजद को पहले की गई गलतियों के लिए बिहार की जनता से माफी मांगनी चाहिए। उन्होंने एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि देश की सुरक्षा सबसे जरूरी है और इसके लिए जो भी करना पड़े उसे करना चाहिए। इससे भाजपा कभी पीछे नहीं हटेगी। उन्होंने कश्मीर से जुड़े एक प्रश्न के उत्तर कहा कि 75 वर्षों तक राहुल गांधी के पिता, दादी, नाना सत्ता में रहे, उन्होंने कश्मीर के लिए क्या किया?

2025 में राजद का सूपड़ा पूरी तरह से साफ होगा : राजीव

पटना। जदयू के राष्ट्रीय प्रवक्ता राजीव रंजन प्रसाद ने बिहार सरकार द्वारा किए गए प्रशासनिक फेरबदल एवं मंत्रियों को भ्रष्ट बताये जाने पर कड़ी आपत्ति दर्ज करते हुए कहा कि जनता तक सरकारी योजनाओं का लाभ पहुँचाने, उन्हें त्वरित न्याय प्रदान करने एवं प्रशासन को जनोन्मुखी बनाने के लिए समय समय पर तबादले एवं स्थानांतरण होते हैं। ऐसे फैसलों पर राजद समेत विपक्ष का कोहराम उनका मानसिक दीवालियापन ही कहा जा सकता है। श्री प्रसाद ने कहा कि राजद के नेताओं पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप हैं। तेजस्वी यादव समेत उनके अनेक नेताओं के विरुद्ध अदालतों में मामले लंबित हैं। कांग्रेस की अगुवाई में यूपीए की 2004 से 2014 यानी 10वर्षों तक तक चली सरकार पर 10 लाख करोड़ रुपए के घोटालों के आरोप लगते रहे हैं। इसीलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि इंडिया गठबन्धन जो भ्रष्ट नेताओं का कुनबा है, उनकी ओर से बिहार की एनडीए सरकार के मंत्रियों को भ्रष्ट बताया जा रहा है। दरअसल भ्रष्टाचार से बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार समझौता कर ही नहीं सकते और इस बात को राजद से बेहतर कौन जान सकता है। श्री प्रसाद ने कहा कि श्री तेजस्वी यादव सत्ता की टीस से ग्रसित हैं। कभी डॉक्टर्ड वीडियोज तो कभी भ्रामक खबरों के माध्यम से उनकी पार्टी मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार एवं एनडीए के बीच तनाव की मनगढ़त खबरें प्लांट कराती रहती है। ताकि तेजस्वी जी के लिए सत्ता की मलाई का जुगाड़ हो सके। लेकिन जदयू उनके दुष्प्रचार के झाँसे में फँसने वाली नहीं है। बारंबार मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने कहा कि कभी भी अब राजद के साथ नहीं जाएँगे। स्पष्ट है 2025 में राजद की हैसियत 2010 वाली हो जाएगी। पूरी तरह पार्टी का सूपड़ा साफ होगा।

एनडीए शासन में चरमरा गई है स्वास्थ्य व्यवस्था : अरुण

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। राष्ट्रीय जनता दल के प्रदेश अरुण कुमार यादव ने कहा कि बिहार सरकार के मंत्री मदन साहनी ने स्वास्थ्य व्यवस्था पर सवाल उठाकर साबित कर दिया कि बिहार की स्वास्थ्य व्यवस्था पुनः ध्वस्त हो गया। नीतीश सरकार में 16 साल से अधिक भाजपा कोटे के क्रमशः चंद्रमोहन राय, नंदकिशोर यादव, अश्विनी चौबे और मंगल पांडे स्वास्थ्य मंत्री रहे हैं। इन भाजपा कोटे के स्वास्थ्य मंत्री ने बिहार के स्वास्थ्य व्यवस्था को बर्बाद और चौपट कर दिया। राजद प्रवक्ता ने कहा कि महागठबंधन सरकार में तत्कालीन उपमुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री तेजस्वी यादव ने 17 महीना के सेवाकाल में बिहार की ध्वस्त स्वास्थ्य व्यवस्था को चुस्त दुरुस्त किया था। राजद प्रवक्ता ने कहा कि तेजस्वी यादव के तत्परता के कारण स्वास्थ्य विभाग में मिशन-60, मिशन परिवर्तन और मिशन बुनियाद के तहत बिहार के सभी जिला अस्पतालों से लेकर प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में सफाई, दवाई, जाँच, मरीजों को पौष्टिक आहार एवं चिकित्सकों की अनिवार्य रूप से उपस्थिति सुनिश्चित किया था। जिसके कारण राज्य के सभी अस्पतालों में अभूतपूर्व परिवर्तन दिखने लगा था जिसका लाभ जनता को मिल रहा था।

जिन्हें विकास नहीं दिख रहा वो चक्षु केंद्र जाकर कराएं इलाज : जदयू

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। जदयू प्रदेश कार्यालय में विधान पार्षद सह पार्टी के मुख्य प्रदेश प्रवक्ता नीरज कुमार, प्रदेश प्रवक्ता भारती मेहता, प्रदेश प्रवक्ता अरविंद निषाद एवं प्रदेश प्रवक्ता अनुप्रिया ने संयुक्त तौर पर आयोजित प्रेस वार्ता के दौरान कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जब भारत सरकार के कृषि मंत्री थे तो उन्होंने देश के लोगों को किसानों की परिभाषा समझाई साथ ही उन्होंने स्वामी सहजानंद सरस्वती के नाम पर पुरस्कार की शुरूआत कराने का फैसला लिया एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पूर्वोत्तर क्षेत्रीय कार्यालय खोला। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण बात ये है कि अस्सी के दशक में निर्मित इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थानएशेखपुरा के आधारभूत संरचना एवं मानव बल में वृद्धि करके मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ना केवल बिहारवासियों को लाभ पहुंचाया बल्कि विदेशी मरीजों के साथ साथ देशभर के मरीजों को इसका फायदा मिल सका। पार्टी प्रदेश प्रवक्ताओं ने कहा कि इस तथ्य को आंकड़ों के हिसाब से समझा जा सकता है। उन्होंने कहा कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार एवं राज्य के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे की उपस्थिति में इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान परिसर चक्षु केंद्र का लोकार्पण हुआ। उन्होंने कहा कि ये अस्पताल पूर्वोत्तर क्षेत्र का सबसे बड़ा सरकारी चक्षु अस्पताल है जो आने वाले दिनों में स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक मानक होगा। उन्होंने कहा कि इतने बड़े पैमाने पर अस्पताल के निर्माण के बाद अब तो और बड़े स्तर पर देशभर के लोग यहां अपना इलाज करा सकेंगे। विरोधियों पर निशाना साधते हुए पार्टी प्रवक्ताओं ने कहा कि जिनको भी अब बिहार में स्वास्थ्य संबंधी विकास नहीं दिख रहा हो। पीएमसीएच अस्पताल में पांच हजार बेड की निर्माण प्रक्रिया नहीं दिख रही हो, पटना का मरीन ड्राइव नहीं दिख रहा हो वो महज पांच रुपए में आईजीआईएमएस परिसर स्थित पूर्वोत्तर भारत के सबसे बड़े सरकारी चक्षु अस्पताल में अपना इलाज करा लें। जिनकी रिपोर्ट को अब राजेंद्र नेत्र अस्पताल, एम्स नई दिल्ली भी अमान्य नहीं करेगा।

देश के विभाजन का साजिश रच रहा इंडी गठबंधन :अरविन्द

पटना। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता अरविन्द कुमार सिंह ने कहा है कि अगर कश्मीर के अंदर बिहार के मजदूर को सिर्फ इसलिए गोली मारते हैं कि वह बाहरी है और राहुल गांधी भी जब गैर कश्मीरी भारतीयों को कश्मीर में बाहरी कहेंगे तो यह उनकी देश के विभाजन की मानसिकता को दशार्ता है। श्री राहुल गांधी कश्मीर को भारत का हिस्सा नहीं मानते हैं, कश्मीर को भारत से अलग करके देखते हैं और गैर कश्मीरी भारतीयों को बाहरी कह कर संबोधित करते हैं। तो यह उनका कश्मीर में वोट पाने के लिए भारत को तोड़ने की मानसिकता को दशार्ता है। जबकि जम्मू कश्मीर से धारा 370 को समाप्त करके मोदी सरकार ने एक देश एक निशान एक विधान को स्थापित करने का काम किया हैं। लेकिन जम्मू कश्मीर में कांग्रेस और नेशनल कॉन्फ्रेंस धारा 370 को पुनः जम्मू कश्मीर में लागू करना चाहता है। और जम्मू कश्मीर में देश से अलग संविधान, निशान और विधान स्थापित करना चाहती है जो कि आरक्षण और राष्ट्रवाद के खिलाफ हैं। कांग्रेस को चुनाव में जाने से पहले अनुच्छेद 370 पर अपना रुख स्पष्ट करना चाहिए। श्री अरविन्द ने कहा कि कांग्रेस की मानसिकता देश की जनता को समझ में आ रही है की कैसे कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद और सज्जन सिंह वर्मा बांग्लादेश की तरह हालात देश में देखना चाहते हैं। कांग्रेस के नेता हमेशा मोहब्बत की दुकान के नाम पर सिर्फ नफरत की बात करते हैं। इस बात को सलमान खुर्शीद की बातों से साफ पूर्व के दिनों से समझा जा सकता है, जिनका कहना था कि जो बांग्लादेश में जो हुआ है वह भारत में भी हो सकता है। वो विघटनकारी शक्तियां जो देश को खंडित करना चाहती हैं, उनके साथ प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में विपक्ष को देखकर ये संशय होने लगा है कि क्या इन राष्ट्रीय और प्रादेशिक पार्टियों का एजेंडा देश को कमजोर करने का बन गया है। दूसरी ओर कांग्रेस की शुरू से ही देश को तोड़ने की मानसिकता रही है। 1947 में धर्म के आधार पर देश का विभाजन इतिहास में एक काला अध्याय है। जिसने लाखों लोगों की जान ली और करोड़ों लोगों को विस्थापित किया। उस समय भी कांग्रेस अपने फायदे की राजनीति कर रही थी और आज भी कर रही है।

लोजपा रामविलास प्रदेश कार्य समिति की बैठक 11 को

पटना। लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास की बिहार प्रदेश कार्यसमिति की बैठक बोधगया स्थित महाबोधि सांस्कृतिक केंद्र में आगामी 11 सितंबर को आयोजित होगी। पार्टी के मुख्य प्रवक्ता डॉ राजेश भट्ट ने प्रेस को बताया कि पार्टी की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक ज्ञान की धरती बोधगया स्थित महाबोधि सांस्कृतिक केंद्र में आगामी 11 सितंबर को आयोजित की गई है। उक्त महत्वपूर्ण बैठक में बिहार विधानसभा चुनाव के मद्देनजर सीटों को लेकर चर्चा होने की संभावना है। पार्टी अपने संगठन की मजबूती को लेकर समीक्षा और बिस्तार पर भी जिलेवार सभी बिंदुओं पर चर्चा करेगी। डॉ भट्ट ने बताया कि प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी के अलावे प्रदेश कार्य समिति के सभी सदस्य सभी प्रकोष्ठों के प्रदेश अध्यक्ष पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष प्रदेश महासचिव प्रदेश सचिव सभी प्रवक्ता गण और पार्टी के सभी जिलों के जिला अध्यक्ष इस महत्वपूर्ण बैठक में शामिल होंगे।

गुरु हमें जीवन में अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं: अखिलेश

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष ने दर्जनों शिक्षकों को किया सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। बिहार प्रदेश कांग्रेस शिक्षक प्रकोष्ठ के द्वारा शिक्षक सम्मान समारोह का आयोजन रविवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में आयोजित किया गया। इस मौके पर कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष व राज्यसभा सांसद डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि देश की तरक्की और समाज के विकास के लिए शिक्षकों की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। हमारा देश विश्व गुरु रहा है और इसमें गुरु शिष्य परंपरा का ही योगदान रहा है।

शिक्षा समाज को दिशा देता है और शिक्षक हमें अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का काम करते हैं। पूर्व राष्ट्रपति भारत रत्न स्व. डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन को याद करते हुए उन्होंने कहा कि उनके भाषण और उनके वक्तव्य आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि शिक्षकों की समाज में वर्तमान में भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो गई है और कांग्रेस पार्टी आपसे आह्वान करती है कि वर्तमान दौर में लोकतंत्र की जो हत्या हो रही है, इतिहास को मिटाने का जो कुत्सित प्रयास चल रहा है और जो आजादी पर कुठाराघात किया जा रहा है उसके लिए आपको प्रमुखता से लड़नी होगी और नव जनजागरण का दौर आपको अपने छात्रों के बीच लाना होगा जिससे देश में वास्तविक आजादी स्थापित हो सकें।

विधान परिषद में दल के नेता व पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ मदन मोहन झा ने शिक्षकों की समाज में भूमिका को लेकर कहा कि मैं खुद एक शिक्षक रहा हूं और हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है कि प्रदेश और देश को अनुशासित ढंग से बौद्धिक रूप से आगे बढ़ाने का काम करें। उन्होंने कहा कि शिक्षकों के बदौलत ही मुझे सबकुछ मिला और मेरे जीवन में शिक्षक सबसे महत्वपूर्ण कड़ी रहे हैं। कार्यक्रम को पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ रामजतन सिन्हा ने सम्बोधित करते हुए शिक्षकों के सामाजिक महत्व को रेखांकित किया और वर्तमान दौर में गूगल और न्यू मीडिया के आगमन से शिक्षकों पर बढे दबाव को भी उन्होंने विस्तार से बताया। अपने दौर के शिक्षकों को याद करते हुए उन्होंने बताया कि उनके द्वारा दी गयी शिक्षा ही हमें समाज को लेकर जिम्मेदारियों का एहसास दिलाती है।कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे शिक्षक प्रकोष्ठ के अध्यक्ष अभिषेक सिंह ने कहा कि शिक्षकों का सम्मान करना अपने आप में गर्व की बात है। जिसने हमें दिशा दिखाने का काम किया है और जिनके बताएं रास्तों ने हमें समाज में कुछ योगदान देने लायक बनाया है। कांग्रेस पार्टी ने सदैव शैक्षणिक जगत के लोगों का सम्मान किया है और आगे भी हम प्रतिबद्ध हैं। कार्यक्रम में प्रदेश भर से आमंत्रित विश्वविद्यालयों और विद्यालयों के शिक्षकों को पुष्प गुच्छ, अंग वस्त्र और मोमेंटो देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष व विधान पार्षद डॉ समीर कुमार सिंह, पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक, वीणा शाही, सांसद मनोज राम, विधायक मुन्ना तिवारी सहित अन्य प्रमुख नेताओं ने संबोधित किया। कार्यक्रम के आयोजक और मंच संचालक के रूप में शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अभिषेक सिंह ने जिम्मेदारी निभाई। इस अवसर पर सांसद मनोज कुमार, पूर्व मंत्री कृपानाथ पाठक, वीणा शाही, विधान पार्षद डा समीर कुमार सिंह, विधायक संजय तिवारी, ब्रजेश पाण्डेय, राजेश राठौड़, कपिलदेव प्रसाद यादव, ब्रजेश प्रसाद मुनन समेत अन्य प्रमुख नेतागण मौजूद रहें।

दिगम्बर जैन पर्युषण पर्व के पहले दिन की गयी क्षमा धर्म की पूजा

पटना। दस दिवसीय जैन पर्युषण पर्व के पहले दिन क्षमा धर्म की पूजा होती है। पटना के मीठापुर, कदमकुआँ, मुरादपुर, कमलदह मंदिर गुलजार बाग सहित सभी दिगम्बर जैन मंदिरों में क्षमा धर्म की पूजा की गयी। इससे पहले सभी मंदिरों में दस दिनों के लिए ध्वजारोहण किया गया। दस दिनों के लिए पूजा के पात्रों का चयन किया गया। भगवान का अभिषेक एवं शान्तिधारा की गयी। जैन समाज के एम पी जैन ने बताया कि कदमकुआं स्थित श्रीपार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर में दसलक्षण पर्व सम्पन्न कराने सात प्रतिमाधारी प्राची दीदी एवं तीन प्रतिमाधारी निक्की दीदी पधारी हैं जिनके सानिध्य में दसलक्षण पर्व की पूजा प्रारम्भ हुई। साथ ही इस पूजा को संगीतमय बनाने फिरोजाबाद से संगीतकार सेंकी जैन अपने ग्रुप के साथ पधारे हैं। एम पी जैन ने बताया कि दसलक्षण पर्व में मनुष्य की आत्मा के दस गुणों की पूजा की जाती है । जैन समाज के एम पी जैन ने बताया कि जैन मुनि प्रमाण सागर जी ने क्षमा धर्म के सम्बन्ध में कहा कि क्षमा आत्मा का धर्म है, इसलिए जो मानव अपना कल्याण चाहते हैं, उन्हें हमेशा इस भावना की रक्षा करनी चाहिए।

रग्बी फुटबॉल एसोसिएशन ऑफ बिहार का चुनाव संपन्न

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। रग्बी फुटबॉल एसोसिएशन ऑफ बिहार के कार्यकारणी का चुनाव द ओगेर्नो रिसोर्ट में संपन्न हुआ। चुनाव पदाधिकारी पटना उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उदय शंकर कुमार के देखरेख में चुनाव संपन्न हुआ। इंडियन रग्बी फुटबॉल यूनियन के ओर से पर्यवेक्षक के रूप में रेयान गुलस्तान एवं खेल विभाग, बिहार सरकार के ओर से संजय कुमार, उप निदेशक (खेल) पर्यवेक्षक के रूप में मौजूद थे। रग्बी फुटबॉल एसोसिएशन ऑफ बिहार के चुनाव में निर्विरोध रूप से निम्नलिखित पदाधिकारी चयनित हुए। अध्यक्ष -डॉ संजय प्रकाश मयूख, उपाध्यक्ष -मीनाक्षी प्रभा, उपाध्यक्ष - कृष्णा कुमारी यादव, सचिव - पंकज कुमार ज्योति, संयुक्त सचिव- विशाल, संयुक्त सचिव - संतोष कुमार सिंह, कोषाध्यक्ष -मुकेश कुमार सिंह, कार्यकारी सदस्य-अमित कुमार, कार्यकारी सदस्य- विरमनी लाल चक्रवर्ती।

सभी अनुमंडलीय अस्पतालो में होगी फिजियोथैरेपिस्ट की बहाली : मंगल

स्वास्थ्य के हर फेकल्टी के लिए अब जरुरी है फिजियोथैरेपी: रणवीर

प्रात : किरण संवाददाता

पटना। स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि अब हर सभी अनुमंडलीय अस्पतालों में फिजियोथेरेपिस्ट की बहाली होगी इसके लिए सरकार काम कर रही है। उन्होंने कहा कि अभी राज्य में सभी सदर अस्पतालों में और मेडिकल कॉलेज के अलावा सुपर स्पेशलिटी अस्पतालों में फिजियोथेरेपिस्ट का पद है, और वहां फिजियोथैरेपिस्ट काम कर रहे हैं। सरकार की ओर से कार्यरत फिजियोथैरेपिस्टों को सरकार की ओर से 20 प्रकार के उपकरण दो महीना के अंदर उपलब्ध कराया जाएगा। स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय रविवार को स्थानीय कॉलेज ऑफ कॉमर्स के सभागार में आयोजित फिजियोथैरेपिस्ट डे के मौके पर जीएस वेलफेयर फाउंडेशन की ओर से आयोजित हेल्थकेयर समिट का उद्घाटन कर रहे थे।

उन्होंने कहा की अब सभी प्रकार के बीमारियों में चाहे वह नस से जुड़ी हो या हड्डी से जुड़ी सब में डॉक्टर फिजियोथेरेपिस्ट की सलाह पर ही बीमारी का उचित निदान करते हैं इसलिए स्वस्थ रहने के लिए फिजियोथैरेपिस्ट की सेवा जरूरी होती है। उन्होंने कहा बिहार सरकार स्वास्थ्य शिक्षा के क्षेत्र में काम कर रही है और जनता से जुड़े स्वास्थ्य के संसाधनों के विकास पर काम कर रही है। सरकार जल्द ही प्रदेश में फिजियोथेरेपिस्ट की समस्याओं का भी समाधान करेगी। इस मौके पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व विधान पार्षद डॉ रणवीर नंदन ने कहा कि मानव शरीर के हर अंग के लिए फिजियोथैरेपी जरूरी हो गया है। अब कई गंभीर बिमारियों में भी यह सेवा ली जा रही है। उन्होंने कहा कि जब सारे अंग कमजोर होते हैं, तो उसके निदान के लिए फिजियोथेरेपी जरूरी है आज के विकसित विज्ञान के दौर में फिजियोथेरेपी के भी कई साधन का विस्तार हुआ है। उन्होंने कहा कि कई ऐसी बीमारियों के बचाव के लिए फिजियोथैरेपिस्ट आज रामबाण की तरह काम कर रहे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कॉलेज ऑफ कॉमर्स के प्राचार्य डॉक्टर इंद्रजीत प्रसाद राय ने कहा कि हर तरह की इलाज में आज फिजियोथेरेपिस्ट की भूमिका जिस तरह से पढ़ रही है उसे यह साबित होता है कि फिजियोथैरेपिस्ट स्वास्थ्य सुविधा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कड़ी हैं और दिन व दिन इनकी जरूरतें और बढ़ेंगी। मौके पर आगत अतिथियों का स्वागत संयोजक डॉ अभिनव आनंद ने किया जबकि कार्यक्रम का संचालन डॉ रतन ने किया। इस मौके पर डॉक्टर एके जायसवाल, डॉक्टर नवनीत, डॉक्टर अमर ,डॉक्टर संजय, डॉक्टर वेदांशी सिंह, डॉक्टर पल्लवी, डॉक्टर बदल, डॉक्टर देवलाल ,सहित कई लोगों को स्वास्थ्य मंत्री ने विशिष्ट फिजियोथैरेपिस्ट सम्मान से सम्मानित किया। इस मौके पर एलएनजेपी अस्पताल के निदेशक डॉक्टर सुभाष चंद्र, एनएमसीएच के डॉ प्रवीण, एन ओ यू के कुलपति डॉ संजय कुमार, पाटलिपुत्र यूनिवर्सिटी के डिप्टी प्रॉक्टर प्रो धर्मराज, अजय यादव, डॉ रीतेश राज, बीसीसीआई के फिजियो डॉ कुंदन कुमार, अवधेश मंडल, उमेश यादव, डॉ आशीष कुमार, डॉ अर्चना कुमारी, एलएनजेपी अस्पताल के फिजियोथैरेपिस्ट डा.मृत्युंजय कुमार और डा.स्नेहा सुमन सहित कई फिजियोथैरेपिस्ट ने विचार व्यक्त किए।

सम्मेलन साहित्य सम्मेलन में आयोजित कवयित्री-सम्मेलन में बोलें-केंद्रीय गृह राज्य मंत्री

देश को एक सूत्र में बांधने के लिए एक संपर्क भाषा आवश्यक : नित्यानंद

प्रात : किरण

पटना। संपूर्ण देश को एक सूत्र में जोड़ने और परस्पर सौहार्द बढ़ाने के लिए एक संपर्क-भाषा का होना आवश्यक है। उत्तर-दक्षिण का भेद मिटाने के लिए यह बहुत ही आवश्यक है। भारत की एक राष्ट्रभाषा हो, इसके लिए बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रयास सराहनीय और समर्थन योग्य है। वर्तमान सरकार ने ऐसी व्यवस्था की है कि गैर-हिन्दी प्रदेश के अधिकारी अब शिक्षकों से हिन्दी सीख रहे हैं। अब वे भी गर्व से कहते हैं कि हम हिन्दी जानते हैं।

हमारी सरकार हिन्दी को इतना बढ़ावा देगी कि पूरे देश में हिन्दी के बिना किसी का कार्य नहीं चलेगा। यह बातें रविवार को बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन में विगत १ सितम्बर से आयोजित हिन्दी पखवारा और पुस्तक चौदस मेला के आठवें दिन कवयित्री-सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए, केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने कही। श्री राय ने कहा कि यह भारत का दुर्भाग्य है कि स्वतंत्रता के समय इस देश में हिन्दी-मन वाला कोई नेता नहीं रहा। यदि हिन्दी-मन वाले किसी नेता के हाथ में भारत के हाथ में सत्ता आयी होती तो अवश्य ही देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी हो गयी होती। किंतु हिन्दी के सामने इतनी बाधाएँ खड़ी कर दी गयी है कि यह कार्य कठिन हो गया है। इसके पूर्व सम्मेलन अध्यक्ष डा अनिल सुलभ ने श्री राय का, उनके पुनः केंद्रीय मंत्रिपरिषद में सम्मिलित की जाने पर अभिनन्दन किया तथा उन्हें सम्मेलन की शीर्ष समिति स्थायी समिति की मानद सदस्यता प्रदान की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में डा सुलभ ने केंद्रीय गृह राज्यमंत्री से हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा घोषित करने हेतु प्रधानमंत्री तक उनकी बात पहुँचाने का आग्रह किया। उन्होंने इस भ्रांति को दूर किया कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनाए जाने से भारत की किसी अन्य भाषा का कोई अहित होगा। उनका कहना था कि इससे भारत को अंग्रेजी की दासता से मुक्ति मिलेगी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का भी उन्नयन होगा। इस अवसर पर बिहार विधान परिषद के सदस्य संजय मयूख, नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति संजय कुमार, सम्मेलन के उपाध्यक्ष डा शंकर प्रसाद, सम्मेलन के संरक्षक सदस्य डा विनोद शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर आयोजित कवयित्री सम्मेलन का आरंभ चंदा मिश्र की वाणी-वंदना से हुआ। वरिष्ठ कवयित्री और सम्मेलन की उपाध्यक्ष डा मधु वर्मा, आराधना प्रसाद, डा पूनम आनन्द, सागरिका राय, डा शालिनी पाण्डेय, डा सीमा रानी, प्रो सुधा सिन्हा, डा सुमेधा पाठक, डा पुष्पा जमुआर, डा तलत परवीन, मधुरानी लाल, सुनीता रंजन, अनीता मिश्र सिद्धि, डा अर्चना चौधरी अर्पण, रंजना लता, उत्तरा सिंह, मीरा श्रीवास्तव, डा सुषमा कुमारी,लता प्रासर, अभिलाषा कुमारी, संगीता मिश्र, संध्या साक्षी, राज प्रिया रानी, डा वंदना मिश्र, कीर्ति मिश्रा, विभा देवी समेत तीन दर्जन से अधिक कवयित्रियों ने अपनी सुमधुर काव्य-रचनाओं से श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर दिया। डा रामरेखा सिंह, डा मेहता नगेंद्र सिंह, दिनेश्वरलाल दिव्यांशु, प्रो सुशील कुमार झा, अंबरीष कांत, उमेंद्र सिंह, कृष्ण रंजन सिंह, अभिजीत कश्यप, डा कृष्णा सिंह, डा विशाल मिश्रा, सनोज यादव, भानु प्रताप सिंह, अभय सिन्हा, शंकर शरण मधुकर आदि प्रबुद्ध श्रोता उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

भारी मात्रा में विदेशी शराब के साथ 2 अपराधकर्मी गिरफ्तार

मुजफ्फरपुर। पुलिस एवं मद्यनिषेध विभाग ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए बड़ी मात्रा में विदेशी शराब बरामद किया है।इस मामले में दो लोगों को भी गिरफ्तार किया गया है।मद्यनिषेद्य विभाग द्वारा सदर थानाध्यक्ष को मिली गुप्त सूचना के आधार पर सदर थाना क्षेत्र अंतर्गत एल०एन० कॉलेज के पास से वाहन चेकिंग के क्रम में एक कंटेनर से कुरकुरे में छुपाकर ले जा रहे कुल विदेशी शराब 8874.360 लीटर के साथ अपराधकर्मी गिरधारी जाट पिता देवाराम जी जाट ग्राम भीमगुड़ा, एवं रमेश कुमार पिता बगता राम ग्राम कलजी की बेरी दोनो थाना सरवाना जिला जालोर, राजस्थान को गिरफ्तार किया गया है।कंटेनर को भी जप्त कर लिया गया है। पुलिस इस संबंध में सदर थाना कांड सं0-579/24 दर्ज किया गया है।

भाजपा विकास करने में विश्वास रखती है : डॉ मुरारी मोहन

दरभंगा।केवटी भाजपा पश्चिम मंडल के मंगरथु उच्च विद्यालय में भाजयुमो अध्यक्ष ज्ञान रंजन चौधरी के अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि केवटी विधायक डॉ मुरारी मोहन झा उपस्थित हुए।डॉ झा ने अपने सम्बोधन में कहा कि भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी है और भाजपा हर साल छ बर्ष में सदस्यता अभियान चलाती है। आज भाजपा के पास दुनिया की सबसे बड़ी कार्यकताओं की फौज खड़ी है भाजपा विकास करने में विश्वास रखती है। भारत की जनता ने नरेंद्र मोदी का तीसरी बार चुनकर साबित कर दिया बिहार में डबल इंजन की सरकार है विकास करने के साफ नियत सही विकास सबका साथ सबका विकास पर काम रही है। भाजपा आज दुनिया की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी के रूप में उभरी है इस कार्यक्रम में ज्ञान रंजन चौधरी,अरमान जी, रौशन झा, प्रकाश शाह,विमल दैवी,मोहन यादव,प्रकाश शाह ,विकास यादव,राहो दैवी उपस्थित थे।

एसएसबी द्वारा मधवापुर मे अवैध शराब किया जब्त

मधुबनी मधवापुर सशस्त्र सीमा बल एसएसबी ने मधवापुर क्षेत्र बिहारी में एक बड़ी कार्यवाही करते हुए 860 बोतल अवैध शराब जब्त किया। यह कार्यवाही एसएसबी के निरंतर अभियान का हिस्सा है जिसका उद्देश्य अवैध शराब की तस्करी और बिक्री पर अंकुश लगाना है। जब्त सामग्री 860 बोतल अवैध नेपाली शराब और 02 मोटर साइकल एसएसबी के वरिष्ठ अधिकारी विवेक ओझा कार्यवाहक कमांडेट ने बताया हमारी टीम को गुप्त सूचना मिली थी कि दु शराब तस्कर मोटर साइकल से नेपाल से शराब लेकर भारत आ रहे है जिसके आधार पर यह कार्यवाही की गई। यह जब्ती स्थानीय समुदाय में अवैध शराब के प्रसार को रोकने में एक महत्वपूर्ण कदम है। जब्त की गई शराब को कानूनी प्रक्रिया के तहत नष्ट किया जाएगा। इस मामले में किसी की गिरफ्तारी नही हुई है ,लेकिन जांच जारी है ,एसएसबी ने स्थानीय नागरिको से अपील की है कि वे अवैध गतिविधियों के बारे में जानकारी साझा करे। गोपनीयता बनाए रखने का आश्वासन दिया गया है। यह कार्यवाही एसएसबी की समाज में नशे के खिलाफ लड़ाई और कानून व्यवस्था को बनाए रखने की प्रतिबद्धता को दशार्ती है।

गणेश पूजनोत्सव का फीता काट कर किया गया उद्घाटन

विभूतिपुर/समस्तीपुर प्रखंड अंतर्गत नरहन स्थित श्री श्री 108 गणेश पूजा समिति द्वारा गणेश पूजनोत्सव का आयोजन किया गया। उद्घाटन समाजसेवी दिलीप नारायण सिंह उर्फ पप्पू जी एवं श्याम किशोर कुशवाहा ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया। मौके पर समिति के अध्यक्ष प्रभु नारायण राय, सचिव दिलीप राय उर्फ पुलिंदर राय, कोषाध्यक्ष अंकित कुमार, सदस्य सुमन कुमार, रितेश कुमार, संजीव कुमार,अजय, सोनू, सुशील, देवनारायण, तरुण कुमार, गिरीश कुमार, संजीत कुमार, ग्रामीण अरुण राय, सत्यनारायण राय, कमलेश राय, धनश्याम कुमार, अशोक साह, शेखर प्रसाद सिंह, राजीव रंजन, रंजीत राय, सुधांशु कुमार, क्रांति कुमार एवं पंडित के रूप में दिवाकर झा एवं पुजारी विक्रम, संदीप, देवांशु, विवेक, सचिन, राजू उपस्थित थे।

जेपी नड्डा ने सुपर स्पेशियलिटी उद्घाटन कर दरभंगा वासियों को बहुत बड़ी तोहफा दिया : पप्पू सिंह

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।दो दिवसीय बिहार दौरे पर पहुंचे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा को दरभंगा पहुंचे। जहां उन्होंने दरभंगा डीएमसीएच मेडिकल कॉलेज में 210 बेड वाले सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल का उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने शोभन स्थित दरभंगा के लिए एम्स के प्रस्तावित जमीन का मुआयना किया। इस मौके पर किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष संजय सिंह उर्फ पप्पू सिंह हजारों की संख्या में कार्यकर्ता के साथ दरभंगा पहुंचे। जहां उन्होंने दरभंगा एयरपोर्ट के वायु सेवा मार्ग के निकट स्वास्थ्य मंत्री का भव्य स्वागत किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि दरभंगा में उत्तर बिहार के लोग कई वर्षों से सुविधा शुरू होने की आस लगाए बैठे थे, लेकिन आज वह घड़ी आ गया है जब बिहार के उपमुख्यमंत्री सह पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी, बिहार के स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडे के साथ मिलकर राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने इस मेडिकल स्पेशियलिटी का उद्घाटन कर दरभंगा वासियों को ईलाज के लिए अब शुरू कर दिया गया है। उन्होंने आगे कहा कि उनके स्वागत के लिए अलीनगर विधानसभा से हजारों की तादाद में कार्यकर्ता साथी मोटरसाइकिल से दरभंगा पहुंचे और उनके कार्यक्रम को भव्य बनाया। इस मौके पर किसान मोर्चा के महामंत्री सुजीत चौधरी, किसान मोर्चा के मंत्री राकेश झा, किसान मोर्चा के महामंत्री मुनेंद्र यादव, मीडिया जिला प्रभारी ललकांत झा, पिंटू झा, अलीनगर मंडल संयोजक लाल मुखिया, रामनाथ सहनी, राघव झा, कुंदन सिंह, प्रकाश झा, चंदन सिंह, ललित मोहन झा, राहुल कुमार सिंह, अमित सिंह आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कांग्रेस सभी समुदायों को साथ लेकर चलने वाली पार्टी है : सीताराम चौधरी

● नव नियुक्त अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के जिला अध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। कांग्रेस जिला अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ के नवनियुक्त अध्यक्ष सरफराज अनवर को जिला कांग्रेस कमिटी द्वारा कांग्रेस कार्यालय में सम्मानित किया गया। जिलाध्यक्ष सीताराम चौधरी ने कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए सबसे पहले मिथिला के परंपरा अनुसार पाग चादर से सम्मानित किया और कहा कि कांग्रेस का अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ का मुख्य उद्देश्य कांग्रेस की विचारधारा और सोच को अल्पसंख्यक समुदाय के बीच जाकर बताना और पार्टी में जोड़ना है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी हिंदू, मुस्लिम सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन, अगड़ा, पिछड़ा सभी समुदायों को साथ लेकर चलने वाली पार्टी है। कहा कि जो जिम्मेदारी इन्हें सौंपी गई है, उसे बखूबी निभाने का काम करेंगे। इस अवसर पर कांग्रेस कार्यकताओं मे भारी उत्साह देखा गया। इस मौके पर उपस्थित उप महापौर नाजिया हसन, पूर्व महापौर अजय जालान, अब्दुल हादी सिद्दीकी,जिला महासचिव सुशील कुमार सिंह, रामनारायण झा, महिला कांग्रेस जिलाध्यक्ष पूनम झा, जिला प्रवक्ता मो.असलम, रेयाज अली खां, रतिकांत झा, गणेश सिंह ने माला पहनाकर स्वागत किया। अल्पसंख्यक सेल के नवनियुक्त अध्यक्ष सरफराज अनवर ने कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मुझे जो दायित्व सौंपा गया है उसका निर्वहन मै तन-मन-धन से करूँगा। इस अवसर वरिष्ठ कांग्रेस नेता परमानंद झा, पिंकू गिरी, संगीत साह, सुधीर पांडे, उदितनारायण चौधरी, जयशंकर चौधरी, राजा अंसारी, मनोरंजन झा, मो. चांद, मो.अंसार हसन, प्रिंस परवेज, सैयद तनवीर अनवर, धनंजय सिंह, दिनेश गंगनानी, अकबर खान, हसमत अंसारी, विशाल महतो, शादाब अतिकी, सिबली नोमानी, कासिफ कमर, सुनील राय, जावेद इकबाल, मो.गुड्डू आदि उपस्थित थे।

केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री ने किया एम्स के प्लाट का निरिक्षण

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। दरभंगा मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में बने 210 शैय्या वाले सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल का उद्घाटन पूर्व केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग सह रसायन एवं उर्वरकमंत्री ने सोभान में एम्स के प्लाट का निरिक्षण। इस अवसर पर सम्राट चौधरी उपमुख्यमंत्री बिहार सरकार, मंगल पांडे मंत्री स्वास्थ्य विभाग,बिहार, मंत्री हरी सहनी, मंत्री मदन सहनी, सांसद गोपाल जी ठाकुर, राज्यसभा सांसद सह जदयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय कुमार झा, राज्यसभा सांसद धर्मशिला गुप्ता, सांसद अशोक कुमार यादव, नगर विधायक संजय सरावगी, विधायक बेनीपुर विनय कुमार चौधरी, विधायक जाले जीवेश मिश्रा, विधायक केवटी मुरारी मोहन झा, विधायक हायाघाट रामचंद्र साह, विधायक अलीनगर मिश्री लाल यादव, विधान परिषद के सदस्य तरुण कुमार,जिलाधिकारी दरभंगा राजीव रौशन व वरीय पुलिस अधीक्षक जगुनाथ रेड्डी जला रेड्डी, डीएमसीएच के अधीक्षक आदि उपस्थित थे। केंद्रीय मंत्री जे.पी नड्डा ने एम्स स्थल निरीक्षण के दौरान कहा कि बहुत जल्द ही दरभंगा के शोभन मे एम्स बनने जा रहा है, जिसे सभी नागरिकों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो पाएगी। इस अवसर पर भाजपा के जिला अध्यक्ष जीवछ सहनी, किसान मोर्चा के जिला अध्यक्ष संजय कुमार सिंह ऊर्फ पप्पू सिंह, किसान मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता अश्वनी यादव,जिला प्रवक्ता शिवशंकर सिंह,मनीष जयसवाल, राजू तिवारी, सचिन जैन, सुजीत मल्लिक सहित भाजपा के जिला से लेकर प्रखंड अस्तर के नेता मौजूद थे।

निराला निकेतन में हुआ काव्यगोष्ठी का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। प्रत्येक माह की भाँति आज दिनाक 7 सितम्बर को निराला निकेतन में महावाणी स्मरण के तत्वावधान में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। इसकी अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार एंव गीतकार सत्येन्द्र कुमार सत्येन ने की और संचालन उमेश राज ने किया। इसमें शहर के वरिष्ठ कवि एंव साहित्यकारों ने शिरकत की। सर्वप्रथम अंजनी कुमार पाठक ने शास्त्री जी के गीतों को गाकर काव्य गोष्ठी की शुरूआत की। रामवृक्ष राम चकपुरी ने -आज स्मार्ट शहर, दुर्गंधभरी बस्तियों में तबदील हो गया सुनाया।डा. हरि किशोर प्रसाद सिंह ने क्या भूलूं क्या याद करूं सुनाकर वाहवाही बटोरी। आलोक कुमार अभिषेक ने ह्यसागर खारा नदियां मैली सूख रहे तालाब सभी,आदमी की वजाहत के टूट रहे हैं ख़्वाब सभी ह्य सुनाया। वरिष्ठ साहित्यकार सत्येन्द्र कुमार सत्येन ने काहे अईलु सपनवा में राम,मोरा हो गईल निंदिया हरामह्न सुना कर खूब तालियां बटोरीं।अरूण कुमार तुलसी ने अतीत के मर्म स्थल से वर्तमान के पटल पर सुनाया। जगदीश शर्मा ने ह्य कब्र में छुपा किनका अस्त्रह्नकविता का पाठ किया। नरेन्द्र मिश्र ने ह्यफूंक दो प्रलय की आग, फूंक दो कि जल उठे कुबेर का भवन-सुनाकर खूब प्रशंसा बटोरी। उमेश राज ने ह्यदर्द जब मुहब्बत का दिलों में उतर आया होगा गीत सुनाया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन समाजसेवी मोहन प्रसाद सिन्हा ने किया। कार्यक्रम की समाप्ति के बाद राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ के प्रांतीय पूर्व सर संघ चालक प्रद्युमन प्रसाद के असामयिक निधन पर गहरा दुख प्रकट किया गया एंव उनके सम्मान में दो मिनट का मौन रखा गया।

अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर मुसहर समुदाय में जागरूकता अभियान चलाया

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर एक्शन एड के तत्वावधान में मणिका मूर्रा,मुसहर टोली में एक्शन एड द्वारा मुसहर समुदाय के बच्चों तथा समुदाय के सदस्यों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में टोला में निरक्षरता से होने वाले दिक्कतों पर चर्चा की गई। चर्चा में बात सामने आई कि लगभग अधिकांश लोग निरक्षर हैं। बैठक में अरविन्द कुमार, जिला समन्वयक, एक्शन एड ने लोगों से अपील की कि यदि वे साक्षर हो जायेंगे तो बहुत सारी समस्याओं से निजात मिल जाएगी। एक साधारण फोन में नंबर सेव करना, कहीं भी जाने पर स्थान की जानकारी बोर्ड पढ़कर करना, कहीं भी हस्ताक्षर करना, हस्ताक्षर करने से पूर्व वहां लिखी गई बातों को पढ़ना, अपने बच्चों को पढ़ाना आदि। वहां उपस्थित समुदाय सदस्यों में अनिता देवी, ललिता देवी, पिंकी देवी , सुमन देवी, गणेश मांझी, उमेश मांझी ने बाल मैत्री स्थल में सहयोग का आश्वासन दिया। विदित हो कि मनिका मूर्रा मुसहर बस्ती में एक्शन एड द्वारा बाल मैत्री सह अध्यापन केन्द्र चलाया जा रहा है, जहां वैसे 80 चिन्हित बच्चों को वोलिंटियर के माध्यम से आनन्ददायी तरीके से सिखने सिखाने की आपसी प्रक्रिया चला कर स्कूल से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है जो या तो विद्यालय से बाहर हैं या फिर नियमित विद्यालय नही जा रहे हैं।

आज अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर एक्शन एड के प्रखंड समन्वयक, राजगीर कुमार ने विद्यालय से मिलने वाली सुविधाएं यथा छात्रवृति, किताब, पोशाक, मध्याह्न भोजन आदि पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। एक्शन एड के स्वयंसेवक जगदीश मांझी, मुन्नी देवी साथ साथ बाल मैत्री स्थल के बच्चों ने हाथ में विभिन्न तरह के साक्षरता संबंधित नारा लिखे प्ले कार्ड के साथ टोले में जागरुकता अभियान चलाया।

बिहार प्रदेश जीविका कैडर संघ नें की बैठक, जिसमें आदेश की प्रति जारी संशोधन का जलाकर किया प्रतिकार

प्रात : किरण संवाददाता

मधुबनी आज राम ललित शर्मा की अध्यक्षता में जिला स्तरीय एक निजी होटल में एक दिवसीय बैठक किया गया और बिहार प्रदेश जीविका कैडर संघ नें जारी संशोधित सामुदायिक कैडर मानदेय कार्यालय आदेश की प्रति जलाकर प्रतिकार किया है। कैडरों का कहना है कि सरकार नें कैडर के साथ छल किया गया है। कैडर अब सड़क पर उतर कर आर - पार के मूड में है। इस मौके पर कैडरों ने शपथ लिया है कि सरकार ने कैडर मानदेय पॉलिसी नहीं बदला तो हम 2025 के बिहार विधानसभा चुनाव में सरकार बदल देंगे। विदित हो कि जीविका माननीय मुख्यमंत्री जी की एक महत्वाकांक्षी परियोजना है। जिसने बिहार कि सूरत बदलने का हरसंभव प्रयास किया। ग्रामीण क्षेत्रों में बदलाव की बाहर जो आज दिख रही है उसमें जीविका का एक बड़ा योगदान हैं। लेकिन बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा हैं कि आज जीविका में कार्यरत लगभग 1.5 लाख कैडरों का मानदेय भुगतान पद्धति बिल्कुल बंधुआ मजदूर वाली है। जिसमें 90% महिला कैडर शामिल हैं। जीविका प्रबंधन से कई बार अनुरोध करने पर भी अभी तक उसमें कोई पहल नहीं हो पाया है। जिससे जीविका कैडरों के बीच जीविका प्रबंधन और सरकार के प्रति असंतोष व्याप्त है। सभी कैडर अल्प मानदेय पर काम करने वाले गरीब तबके के लोग हैं। उनके सामने आर्थिक समस्या उत्पन्न हो गई है। इसलिए कैडर मानदेय भुगतान हेतु जारी आदेश को अबिलम्ब बदला जाय। इस मौके पर,जिला अध्यक्ष बसंत कुमार,मंडल जिला महासचिव अमरेश कुमार, पूर्व जिला कोषाध्यक्ष गुरदेव सिंह, लीला राखी, राम लक्ष्मण, सुशील, संतोष, राम परीक्षण, संजय, रानी, वीरेंद्र,अर्जुन, अमरेश, जय नारायण, भगवान, खुशबू सहित सैकड़ों जीविका कैडर और दीदी वहां उपस्थित थे।

सुपर स्पेस्लिस्ट हॉस्पिटल का उद्घाटन सिर्फ छलावा है : राकेश नायक

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा।युवा राष्ट्रीय जनता दल के महानगर अध्यक्ष राकेश नायक ने भारतीय जनता पार्टी और बिहार सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए जनता के कई महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया। श्री नायक ने कहा कि भाजपा दोहरी मानसिकता के है यह जनता के साथ छलावा है। ये लोग नौटंकी करने में व्यस्त हैं, जबकि जनता की असली समस्याएं अनदेखी हो रही हैं। भाजपा नेताओं से सवाल किया कि आखिर कब वे इस दिखावटी राजनीति को छोड़कर जनता की भलाई के लिए गंभीर कदम उठाएंगे।श्री नायक ने दरभंगा मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल की स्थिति पर भी कड़ी टिप्पणी की। उन्होंने कहा की सुपर स्पेशलिटी अस्पताल का केवल शुभारम्भ हो रहा है, लेकिन ओपीडी सेवाएं कब शुरू होंगी, यह सवाल आज भी जनता के सामने है। अस्पताल के भवन तैयार हो जाने के बाद भी मरीजों को इसका लाभ नहीं मिल रहा।इसके अलावा, 100 बेड के सदर अस्पताल को कैंसर अस्पताल में परिवर्तित करने की योजना की भी आलोचना की गई। यह अस्पताल वर्षों से तैयार है, लेकिन कैंसर के मरीज आज भी दरभंगा में इधर-उधर भटकने को मजबूर हैं। उन्हें देश-विदेश जाकर इलाज कराना पड़ता है, क्योंकि यहां इलाज की सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। महानगर अध्यक्ष श्री नायक ने कहा कि जब भी मुख्यमंत्री दरभंगा आते हैं, तो सरकारी अस्पताल और अन्य संस्थानों को सिर्फ उनके दौरे के लिए सजाया जाता है। मुख्यमंत्री के जाते ही फिर वही जर्जर स्थिति लौट आती है। डीएमसीएच का परिसर सालों से खराब हालत में है, लेकिन उसे स्थायी रूप से ठीक करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है। ये केवल दिखावटी काम हैं, जो जनता को भ्रमित करने के लिए किए जाते हैं।राजद की ओर से यह स्पष्ट किया गया कि पार्टी जनता की इन समस्याओं को प्रमुखता से उठाती रहेगी और जब तक दरभंगा और बिहार के नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिलतीं, तब तक संघर्ष जारी रहेगा।

संविधान विरोधी वक़्फ संशोधन विधेयक वापस लेने की मांग

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर। तंजीम इमारत-ए-शरिया मुजफ्फरपुर के बैनर तले रविवार को चंदवारा के स्थित नवाब रोड में तहफ़्फ़ुज-ए-अवकाफ कांफ्रेंस का आयोजन किया गया,इस अवसर पर तंजीम इमारत-ए-शरिया मुजफ्फरपुर के उपाध्यक्ष जावेद अमहद ने वक़्फ संशोधन विधेयक 2024 को सविंधान विरोधी करार देते हुए केन्द्र सरकार से इस विधेयक को अविलंब वापस लेने की मांग की है।जावेद अहमद ने कहा कि जैसा कि आप जानते हैं कि संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) ने वक़्फ संशोधन विधेयक 2024 के सम्बंध में विचार मांगे हैं। एक सम्मानित नागरिक होने के नाते यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस अवसर पर जेपीसी को अपनी राय अवश्य बताएं। इस संबंध में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और इमारत-ए-शरिया फुलवारीशरीफ पटना के मंच से मजबूत संगठित और सर्वसम्मत तरीके से राय देने का सिलसिला शुरू किया है। अपनी दीनी, ईमानी, शरई और व्यक्तिगत जिम्मेदारी समझते हुए अपनी राय अवश्य भेजें. जावेद अहमद ने कहा कि सविंधान विरोधी वक्फ संशोधन विधेयक के खिलाफ इमारत-ए-शरिया बिहार, उड़ीसा और झारखंड के बैनर तले अमीर-ए- शरीयत हजरत मौलाना सैय्यद अहमद वली फैसल रहमानी साहब की अध्यक्षता में 15 सितंबर को पटना के स्थित बापू सभागार में आयोजित तहफ़्फ़ुज-ए-अवकाफ कांफ्रेंस में मुजफ्फरपुर से भी बड़ी संख्या में लोग शामिल होंगे और केन्द्र सरकार से वक्फ संशोधन विधेयक 2024 को अविलंब वापस लेने की मांग करेंगे. इस अवसर पर दी गाइडेंस आईटीआई कॉलेज मालीघाट, मुजफ्फरपुर के डायरेक्टर इंजीनियर जफर आजम भी उपस्थित थे।

विश्व फिजियोथेरेपी दिवस जोश, उमंग व हर्षोल्लास के साथ उत्सव के रूप में मनाया

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

जिले सिंघिया खुर्द स्थित एसके मंडल ग्रुप ऑफ इन्स्टीच्यूशन्स के कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग एवं पैरामेडिकल साइंसेज में रविवार को विश्व फिजियोथेरेपी दिवस जोश, उमंग व हर्षोल्लास के साथ उत्सव के रूप में मनाया गया। इस विशेष अवसर पर इन्स्टीच्यूशन्स के अध्यक्ष एसके मंडल ने सभी संस्थानों के शिक्षकों, छात्रों और कर्मचारियों के साथ भाग लिया और फिजियोथेरेपी के महत्त्व पर विशेष जोर दिया। बताया गया कि यहां के साथ-साथ राज्य व जिले में इन्स्टीच्यूशन्स के अंतर्गत संचालित संस्थानों में भी मनाया गया। एसके मंडल ने अपने भाषण में फिजियोथेरेपी के क्षेत्र में हो रहे विकास और उसकी बढ़ती हुई भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा, फिजियोथेरेपी न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को सुधारने में मदद करती है, बल्कि यह मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को भी सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। वर्तमान युग में यह चिकित्सा क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बन चुका है। हमारे ग्रुप ऑफ इन्स्टीच्यूशन्स के संस्थानों के माध्यम से हम इस क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता की शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। कार्यक्रम के दौरान छात्रों ने फिजियोथेरेपी के विभिन्न पहलुओं पर प्रस्तुति दी, जिसमें उन्होंने आधुनिक तकनीकों और इसके विभिन्न लाभों को समझाया। कई छात्रों ने केस स्टडी के माध्यम से बताया कि कैसे फिजियोथेरेपी ने विभिन्न प्रकार की बीमारियों और चोटों से जूझ रहे लोगों को राहत दिलाई है। इसके अतिरिक्त, कुछ शिक्षकों ने भी अपने अनुभव साझा किए और फिजियोथेरेपी के महत्व पर जोर दिया। इस दौरान प्रिंसिपल ने कहा कि फिजियोथेरेपी का महत्व केवल शारीरिक दर्द या चोटों के उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस अवसर पर विभिन्न संस्थानों के छात्र-छात्राओं ने जागरूकता रैली भी निकाली, जिसमें उन्होंने फिजियोथेरेपी के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए पोस्टर, बैनर और स्लोगन के माध्यम से संदेश दिया।

कार्यक्रम के अंत में एसके मंडल ने सभी छात्रों और शिक्षकों को उनके उत्साह और समर्पण के लिए बधाई दी। उन्होंने कहा कि एसके मंडल ग्रुप ऑफ इन्स्टीच्यूशन्स के सभी संस्थान इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित करते रहेंगे और फिजियोथेरेपी जैसे महत्वपूर्ण विषय को और भी आगे बढ़ाएंगे। इस अवसर ने सभी को फिजियोथेरेपी के महत्व को समझने और इस क्षेत्र में किए गए काम की सराहना करने का एक अद्वितीय अवसर प्रदान किया। विश्व फिजियोथेरेपी दिवस का यह उत्सव आने वाले समय में भी प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

भू-माफियाओं के द्वारा दुकान की जमीन कब्जाने के विरोध में वृद्ध महिला ने पुलिस से लगायी गुहार

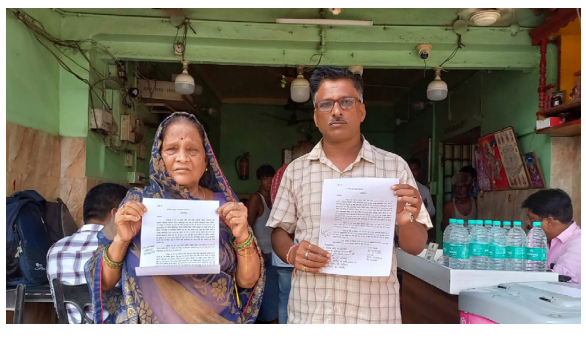

समस्तीपुर, प्रात : किरण संवाददाता

अपने पति की खरीदी हुई लाखों रुपए मूल्य की जमीन जिस पर जीवन बसर करने को लेकर होटल खोलकर अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही वृद्ध महिला ने दुकान की उस जमीन पर भू-माफियाओं के जबरन कब्जा करने के प्रयास से बचाने व परिवार के जान-माल की सुरक्षा को लेकर नगर थाना पुलिस व सदर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी-1 को आवेदन देकर न्याय की गुहार लगायी है। दिए आवेदन में शहर के बंगाली टोला वार्ड नंबर 22 के स्व० रघुनाथ प्रसाद की पत्नी आशा देवी ने कहा है कि शहर के स्टेशन चौक स्थित गांधी स्मारक के पास उनकी जमीन है, जिस पर खानपान से संबंधित एक होटल चला कर वह अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही है। उन्होंने कहा है कि भू-माफिया उनके होटल वाली जमीन को जबरदस्ती कब्जा करना चाहते हैं। उन्होंने आशंका जाहिर करते हुए कहा है कि अपराधी प्रवृत्ति के लोग उनके साथ कभी कोई जघन्य अपराध की घटना कर सकते हैं। साथ ही वह लोग उनके पुत्र को किसी भी अप्रिय घटना में फंसा सकते हैं। उन्होंने कहा है कि वह दुकान वाली जमीन उनके पति ने वर्षों पहले खरीदी थी और यह उनके जीवन यापन का एकमात्र सहारा है। उन्होंने आवेदन के आधार पर उन लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है। वहीं इस संबंध में एएसपी सह सदर एसडीपीओ- 1 संजय कुमार पाण्डेय ने कहा कि आवेदन प्राप्त हुआ है, थानाध्यक्ष को विधि-व्यवस्था कायम रखने का निर्देश दिया गया है।

बिहार प्रतिपक्ष के नेता का आगमन को लेकर राजद की बैठक

प्रात : किरण संवाददाता

कुशेश्वरस्थान(दरभंगा)।कुशेश्वरस्थान विधानसभा स्तरीय राजद कार्यकताओं की बैठक बाजार स्थित राम जानकी मंदिर परिसर में पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष झड़ी लाल सदा की अध्यक्षता में हुई। जिसमें पार्टी नेता व विधानसभा में प्रतिपक्ष के नेता तेजस्वी यादव का 12 एवं 13 सितंबर को दरभंगा में प्रस्तावित जन संवाद यात्रा में पार्टी के प्रमुख कार्यकताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने एवं विगत लोकसभा चुनाव में कुशेश्वरस्थान विधानसभा में बूथ वार मतदान की समीक्षा किया गया। बूथ वार समीक्षा के दौरान ऐसे बूथ जहां महागठबंधन के उम्मीदवार को कम वोट मिले उन बूथों पर पार्टी के मजबूत करने और जनाधार बढ़ाने के लिए गांव गांव जाकर अधिक से अधिक लोगों को पार्टी में जोड़ने का निर्णय लिया। कार्यकताओं को संबोधित करते हुए पार्टी के प्रदेश महासचिव राम नरेश यादव ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार आरक्षण विरोधी और जनसरोकार से जुड़े मंहगाई और बेरोजगारी से मुंह मोड़ चुकी है। वहीं बिहार में नीतीश कुमार अप्रसंगी हो गया है। उनकी मंशा सिर्फ मुख्यमंत्री बने रहना रह गया है। कहा कि बिहार के गरीब गुरबा और बेरोजगार नौजवान जदयू भाजपा गठबंधन की सरकार को उखाड़ फेंकेगी और 2025 के विधानसभा चुनाव में महागठबंधन को भारी बहुमत से जीत दिलाकर तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाएंगे। कार्यक्रम का संचालन पार्टी के कुशेश्वरस्थान प्रखंड अध्यक्ष उमाशंकर राय ने किया। मौके पार्टी नेता जयप्रकाश नारायण पासवान, नगर पंचायत के मुख्य पार्षद शत्रुघ्न पासवान ,अब्दुल कैयूम फारूकी, चंद्रवली प्रसाद यादव, कामेश्वर राम,हीरा पासवान, संतोष पासवान,मो0 जिकीर सहित अनेक पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

गणेश पूजा में डीजे बजाने को लेकर हुआ मारपीट, प्राथमिकी दर्ज

जमुई [झाझा] गणेश पूजा में डीजे बजाने को लेकर गांव के ही कुछ लोगों के द्वारा एक घर के परिवार के साथ की गई बेरहमी से मारपीट जिसका मामला झाझा थाना में दर्ज किया गया । अपने लिखित आवेदन में परासी गांव के रहने वाले कैलाश दास ने बताया कि शनिवार की शाम लगभग 7:00 बजे गांव के ही पिन्टू दास , मिंटू दास , अजय दास हमारे घर के पास गणेश पूजा में डीजे बजाने को लेकर हमारे द्वारा विरोध करने पर लाठी डंडा रड से लेस होकर मेरे घर के अंदर बायजबरन घुस गया तथा गंदी-गंदी गाली देते हुए मेरी पत्नी रमणी देवी को लात घुसे और लाठी डंडे से मारते पिटते हुए घसीट कर घर से सड़क पर ले आया, और उसके साथ ताबड़तोड़ मारपीट करने लगा । मेरी पत्नी को पिटता देखकर मेरा भगना राजेंद्र दास , मेरा लड़का अभिषेक कुमार , हमारी लड़की सोनम कुमारी तीनों लोग बचाने के लिए वहां पहुंची तो उन लोगों ने इन्हें भी बुरी तरीके से मारना शुरू कर दिया । उन लोगों द्वारा किया गया प्रहार से मेरी पत्नी रामानी देवी को काफी अंदरूनी चोट पहुंची । पिंटू दास ने हमारी पत्नी को लाठी से सीने पर मारा , मिंटू दास ने रड से पैर पर मार के चोटिला कर डाला है । जिसका मामला थाना में दर्ज किया गया ।मामला दर्ज करने के बाद पुलिस के द्वारा आगे कार्रवाई में जुट गई ।

मॉक ड्रिल के माध्यम से ग्रामीणों के बीच आग से बचाव की दी गई जानकारी

सदर मुंगेर। इन दोनों मुफस्सिल थाना के अग्नि टीम द्वारा ग्रामीणों के बीच आग से बचाव हेतु जानकारियां देने में जोर-शोर से लगे हुए हैं। रविवार को जमालपुर प्रखंड अंतर्गत बैंक पंचायत के वार्ड नंबर 14 में मुफस्सिल थाना की अगली विभाग के टीम विपुल कुमार द्वारा ग्रामीणों के बीच आग से बचाव हेतु मॉक दिल के माध्यम से लोगों को जानकारी दिए काहे की आग लगे तो घबराएं नहीं पंपलेट पर दिए गए नंबर पर कॉल करें तुरंत अग्नि विभाग की टीम आकर आग पर काबू पाएंगे। तथा जिस तरह से मैंने आग से बचाव की जानकारी दिया इस तरह से आप लोग भी आग पर काबू पाने का प्रयास करें। मौके पर उपस्थित दर्जनों ग्रामीण तथा अग्नि विभाग की टीम उपस्थित थे।

विधानसभा चुनाव को लेकर बूथों के संशोधन पर की गई चर्चा

बूथों के प्रारूप सूची का किया गया प्रकाशन, 07 से 17 सितंबर तक दर्ज करें दावा - आपत्ति

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (बिहार) । निर्वाचन विभाग की बैठक शनिवार को समाहरणालय सभा कक्ष में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह की अध्यक्षता में आयोजित हुई । बैठक में तीनों विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत मतदान केंद्रों के युक्तिकरण व संशोधन पर मुख्य रूप से चर्चा की गई। इस अवसर पर मुंगेर विधायक प्रणव कुमार, सदर अनुमंडल पदाधिकारी शैलेंद्र कुमार, भूमि सुधार उप समाहर्ता अनु कुमार, उप निर्वाचन पदाधिकारी राजीव कुमार सहित अन्य पदाधिकारी एवं प्रमुख राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता उपस्थित थे। सभी राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं को प्रारूप की सूची भी उपलब्ध कराई गई। जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिलाधिकारी ने कहा कि भारत निर्वाचन आयोग तथा उप मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, बिहार, पटना के निदेश के आलोक में आज मुंगेर जिले के सभी तीन विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों यथा 164-तारापुर 165-मुंगेर एवं 166 जमालपुर विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के मतदान केन्द्रों का भारत निर्वाचन आयोग द्वारा दिये गये दिशा निर्देश के आलोक में मतदान केन्द्रों के युक्तिकरण व संशोधन के पश्चात विनिर्दिष्ट स्थलों पर मतदान केन्द्रों की प्रारूप सूची का प्रकाशन कर दिया गया है। उन्होंने उपस्थित राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं से कहा कि यदि मतदान केन्द्रों की प्रारूप सूची के विरूद्ध कोई दावा व आपत्ति व सुझाव देना चाहते हों, तो वे लिखित रूप से दावा व आपत्ति व सुझाव कार्यालय अवधि में निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी, 164-तारापुर विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र-सह-अनुमंडल पदाधिकारी, तारापुर, निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी, 165-मुंगेर विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र-सह-अनुमंडल पदाधिकारी, सदर मुंगेर एवं निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी 166-जमालपुर विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र-सह-भूमि सुधार उप समाहर्ता, सदर मुंगेर तथा जिला निर्वाचन कार्यालय, मुंगेर के कार्यालय में दिनांक 07.09.2024 से 17.09.2024 तक दे सकते हैं। प्राप्त सभी दावा विपत्ति व सुझाव का नियमानुसार निस्तार कर एवं जिला के सभी माननीय सांसद, माननीय विधायकगण, मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के अध्यक्ष एवं सचिव से विचार विमर्श कर सहमति के उपरान्त मतदान केन्द्रों की प्रारूपित सूची में यदि आवश्यक हो, तो संशोधन करते हुए इसे आयोग को अनुमोदन हेतु भेजा जाएगा। दावा व आपत्ति समर्पित करने की अवधि के पश्चात प्राप्त सुझाव व दावा व आपत्ति को स्वीकार नहीं किया जायेगा तथा किसी प्रकार का विचार नहीं किया जायेगा। उन्होंने कहा कि मुंगेर जिला अंतर्गत 1400 से अधिक निर्वाचक होने के कारण नए प्रस्तावित मतदान केंद्रों की कुल संख्या 62 हो गई है, जिसमें 164 तारापुर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 22, 165 मुंगेर विधान सभा क्षेत्र अंतर्गत 25 तथा 166 जमालपुर विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत 15 मतदान केंद्र बनाए जाएंगे।

विश्व साक्षरता दिवस पर किया गया प्रतियोगिता का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई। विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर साइकिल यात्रा एक विचार मंच के द्वारा आज बच्चो में पर्यावरण शिक्षा के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य को लेकर एडू-एनवायरनमेंट (एॅ४-एल्ल५१ङ्खल्लीेल्ल३) मुहिम की शुरूवात की गई। मौके पर उपस्थित मंच के संस्थापक विवेक कुमार ने इस मुहिम के उद्देश्य को लेकर बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता केवल किसी संस्थान द्वारा मात्र पौधा रोपण कर देने से नहीं होगा। इसके लिए अधिक से अधिक लोगो को जागरूक होना आवश्यक है। मंच द्वारा निर्णय लिया गया की बच्चो को शिक्षा के साथ साथ पर्यावरण शिक्षा में जोड़ दिया जाए तो बेहतर परिणाम दिख सकता है। इस मुहिम के माध्यम से बच्चो को अपने ज्ञानवर्धक और रचनात्मक कार्य करवा कर पर्यावरण के पार्टी सजग बनाना है।

सदस्य शैलेश भारद्वाज ने बताया की साईकिल यात्रा एक विचार के एक दर्जन सदस्य अपने 453वीं यात्रा के क्रम में दाबील ग्राम पहुंची जहां संस्कार भारती विधालय परिसर में लगभग 100 बच्चो के साथ एडू एनवायरमेंट मुहिम के तहत पर्यावरण जागरूकता हेतु ज्ञानवर्धक कार्य कराया गया। बच्चो के साथ पर्यावरण प्रश्नोत्तरी, चित्रकला प्रतियोगिता और पेड़ लगाओ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ताकि बच्चे पर्यावरण में प्रति जागरूक हों।

मौके पर उपस्थित लड्डू मिश्रा ने विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर संबोधित करते हुए शिक्षा केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक विकास की नींव भी है। साक्षरता एक व्यक्ति को न केवल पढ़ने और लिखने में सक्षम बनाती है, बल्कि उसे समाज में अपनी भूमिका समझने और जीवन में नए अवसरों का लाभ उठाने में भी मदद करती है।

विश्व पर्यावरण परिषद के सदस्य नंदलाल जी ने बताया की जीवन को सुरक्षित रखने के लिए जल संरक्षण भी करना आवश्यक है बहते जल को बचाना, नदी, तालाब आदि में जल का संरक्षण करना अति आवश्यक है अन्यथा भविष्य में जल विहीन क्षेत्र होने पर हमे पलायन का सामना करना पड़ सकता है।

साइकिल यात्रा एक विचार मंच के सदस्य कुंदन सिन्हा, हर्ष कुमार, राकेश कुमार, शैलेश भारद्वाज, शांतनु सिंह, सचीराज पद्माकर, नंदलाल सिंह, लड्डू मिश्रा एवं संस्कार भारती विद्यालय के मनीष कुमार, दिवाकर कुमार, अमरेश कुमार सिंह, पिंटू कुमार, शबनम मिश्रा, वंदना पांडे, वंदना पांडे, विमल देवी, निभा कुमारी, अमूल खान, सहित सैकड़ों छात्र छात्रा शामिल हुए। आहूत प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागी को सम्मानित कर किया गया प्रोत्सहित। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में युवराज कुमार ने सर्वाधिक अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि दूसरे स्थान पर दिलकुश कुमार और प्रिया एवं तीसरे स्थान पर शिवांश कुमार तो चित्रकला प्रतियोगिता में प्रथम स्थान विद्या भारती, दूसरे स्थान पर जिशान खान और तीसरे स्थान पर आकाश कुमार ने सफलता प्राप्त की। सभी सफल प्रतिभागी को प्रोत्साहित हेतु प्रमाण पत्र एवं पौधा देकर सम्मानित किया गया।

दुर्गापूजा को लेकर आयोजित कि गई बैठक, विकास बने कमेटी के अध्यक्ष

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] रेलवे कॉलौनी स्थित रेलवे इंडियन इंस्टीच्यूट में इस वर्ष होने वाले दुगार्पूजा को लेकर रविवार को मंदिर परिसर में पुरानी कमेटी के द्वारा एक बैठक आयोजित किया गया। इस वर्ष होने वाले दुगार्पूजा को लेकर पुरानी कमेटी को भंग कर नई कमेटी का गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष के पद पर वार्ड पार्षद विकाश शर्मा को मनोनित किया गया जबकि संयुक्त अध्यक्ष के पद शुभम माथुर, सचिव के लिए नीलेश कुमार, कोषाध्यक्ष में राजीव रौशन, कार्यकारिणी अध्यक्ष में ओमप्रकाश को मनोनित किया गया।

इसके अलावे सजावट मंत्री, स्वागतमंत्री, प्रसाद मंत्री एवं अन्य अलग अलग पदो पर अलग अलग सदस्यों को नियुक्त किया गया। बैठक में इस वर्ष भव्य पंडाल सहित भव्य रूप से सजावट एवं अन्य कई तरह की तैयारी से जुड़ी बिंदुओं पर चर्चा किया गया। बैठक में मनोनित अध्यक्ष ने कहा कि इस वर्ष दुगार्पूजा को भव्य रूप से शांतिपूर्वक मनाना है। प्रशासन की ओर से जो भी दिशा निर्देश दिया जाएगा उसका पालन पूरी कमेटी के लोगों के द्वारा किया जाएगा। दुगार्पूजा में शांति व्यवस्था बनाए रखने को लेकर कमेटी के सदस्यों की भी जगह जगह नियुक्ति कि जाएगी। इसके अलावे एक हेल्प डेस्क भी बनाया जाएगा ताकि अगर किसी श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की कोई परेशानी होती है तो वे हेल्प डेस्क पर नियुक्त कमेटी के सदस्यों के पास अपनी समस्या रख सके। मौके पर सुभाष वर्मा, विकास पासवान, पंकज कुमार, चंदन गुप्ता, भोलू, सूरज, संतोष कुमार, पारस पासवान, मंदिर पुजारी गौतम पांडेय सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

बढ़ौनियां गांव पहुंचे जन आशिर्वाद पद यात्रा

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। जन आशिर्वाद पद यात्रा के दौरान पूर्व प्रत्याशी संजय कुमार उर्फ संजय यादव रविवार को तारापुर विधानसभा क्षेत्र अन्तर्गत बढ़ौनियां गांव पहुंच कर पंचायत भवन में सभा का आयोजन बरुण कुमार सिंह की अध्यक्षता में किया । जबकि संचालक जयमुर्ति सिंह ने की।मौके पर पूर्व प्रत्याशी श्री यादव ने अपने सम्बोधन में कहा कि तारापुर विधान सभा से 5 जुलाई को जनकपुर गांव से शुरू किया गया है।और हर गांव तक जाना है,2003 से लगातार जनता की सेवा करते आ रहे है।उन्होने कहा राष्ट्रीय जनता दल के स्लोगन पर 17 साल बनाम 17 महीने के कार्यकलापों पर तेजस्वी यादव की चर्चा की जिसमें जाति जनगणना, आरक्षण की सीमा 75% बढ़ाने की बात, 5 लाख से अधिक सरकारी नौकरी देने की बात, नियोजित शिक्षकों को राज्य कर्मी का दर्जा देने की बात, लाखों बहाली और नौकरियां देने के लिए खेल में मेडल आओ नौकरी पाओ योजना लागू करने के लिए स्वास्थ्य सेवा में सुधार करने के लिए और शहरों में वाटर ड्रेनेज व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए उन्हें धन्यवाद दिया जा रहा है।उन्होने कहा कि हमारा उद्देश्य तारापुर विधान सभा को विकास के प्रथम श्रेणी में लाना है।जिसमें 13 मुद्दा सम्मिलित है। बढ़ौनियां में डिग्री कालेज,और 100 वैंड का अस्पताल के लिए जगह रहने के बाद भी अबतक नही हुआ है। इन सब पर कार्य किया जाना है।वही राजद जिला किसान मोर्चा के प्रकोष्ठ अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह ने कहा कि अबतक तारापुर विधान सभा में जनता ठगी महसूस कर रहे है,आगामी विधान सभा 2025 में परिवर्तन जरुरी है।संग्रामपुर में सिंचाई का पर्याप्त साधन नही है।धान के खेतों में दरार आने लगें इसपर सरकार की नजर नही है।इस कार्यक्रम में राजद के प्रखंड अध्यक्ष मुकेश कुमार दास,सरपंच कुणाल सिंह,शंभू प्रसाद सिंह,कन्हैया जी, पिन्टू शर्मा,रमाशंकर शर्मा,राजद पंचायत अध्यक्ष विजय कुमार सिंह,कुनकुन सिंह,मंगल सिंह संतोष सिंह,कौशल सिंह,कृष्ण मोहन सिंह,सुधीर सिंह आदि दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे।

शिव बाजार में गणेश पूजा पर शुरू हुआ दो दिवसीय डांस प्रतियोगिता

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] गणेश पूजा के उपलक्ष्य में शिव बाजार में दो दिवसीय डांस प्रतियोगिता का आयोजन शनिवार की देर शाम को किया गया। जिसका विधिवत उदघाटन केशरवाणी समाज के अध्यक्ष सेवानिवृत डीएसपी कपिलदेव केशरी ने फीता काट कया। प्रतियोगिता में नप मुख्य पार्षद संजय यादव, समाजसेवी गुडडु यादव, उपमुख्य पार्षद विपीन साव भी शिरक्त किए। दो दिवसीय डांस प्रतियोगिता में पहले दिन 15 प्रतिभागियों को मौका दिया गया। सभी प्रतिभागियों ने प्रतियोगिता में अपनी अपनी प्रतिभा को उजागर किया। अध्यक्ष ने कहा कि दो दिवसीय डांस प्रतियोगिता में कुल 30 प्रतिभागी शामिल हुए है जो अंडर 12 वर्ष तक के है। रविवार को फाइनल मुकाबला का आयोजन कर विजेता प्रतिभागी को सम्मानित किया जाएगा। अध्यक्ष ने कहा कि हमारे समाज वैसे लोग जो सामाजिक कार्यो को करते हुए वृद्धा अवस्था में पहुंच चुके है उनलोगों के लिए भी रविवार की देर शाम को होने वाले सम्मान समारोह में सम्मानित किया जाएगा। मौके पर आयोजनकर्ता कुणाल टंडेसी, सुजीत कुमार, अमित टंडेसी, रामू केशरी, जयनारायण केशरी, सुधांश केशरी, शिवम केशरी सहित कई लोग मौजूद थे।

अलीगंज में कई जगह पंडालों में विराजे गणपति, श्रद्धालुओं ने की पूजा अर्चना

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई/ई०अलीगंजः- गणेश महोत्सव भगवान गणेश की पूजा-अर्चना का प्रमुख पर्व है। जिसे पूरे भारत में बड़े हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ मनाया जाता है। यह महोत्सव विशेष रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, और गोवा में लोकप्रिय है, उसके बाद बिहार में भी उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। वहीं जमुई जिले के अलीगंज में भी बड़े धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ कई वर्षो से मनाने की परम्परा है। वहीं रविवार को ई०अलीगंज में आधा दर्जन स्थान पर विभिन्न पूजा समितियां ने भव्य पंडाल का निर्माण कर प्रतिमा स्थापित किया। साथ ही कई लोगों ने अपने घरों में ,दुकानों में भी गणेश जी का पूजा वैदिक विधान के साथ किया। वहीं गणेश पूजा समिति स्टूडेंट क्लब, सृष्टि क्लब,धर्मवीर बालक दल,ग्रेट क्लब क्रांति, बुढ़वा गणेश पूजा समिति के द्वारा भव्य एवं आकर्षक पंडाल में गणपति विराजमान हुए। गणेश महोत्सव के दौरान तीन दिनों तक भव्य मेला का आयोजन होता है।, जिसको लकर महीनों दिन से झारखण्ड, बंगाल सहित अन्य जगह से कारीगर के द्वारा तरह तरह के आकर्षक पंडाल एवं बड़ी बड़ी प्रतिमा स्थापित कर पूजा अर्चना होती है, और पूरा इलाका गणपति बप्पा मोरया,से गूंजमान एवं भक्तिमय में है,पूरे महोत्सव के दौरान विभिन्न धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें आरती, भजन, कीर्तन, और नृत्य-संगीत शामिल होते हैं। इस दौरान लोग भगवान गणेश से सुख-समृद्धि, शांति और विद्या की प्रार्थना करते हैं। गणेश पूजा के दौरान तीन दिनों तक लगता है भव्य मेला, मेलों में बच्चों और बड़ों के मनोरंजन और खाने-पीने की व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए कई प्रकार के स्टॉल और आकर्षण होते हैं। छोटे झूले, मिकी माउस राइड, ट्रेन राइड, बाउंसिंग कैसल, बड़े झूले, एवं खिलौनों के स्टॉल, जहां पर विभिन्न प्रकार के खिलौने, का स्टाल लगाया गया, यह मेला लोगों के लिए एक उत्सव का माहौल पैदा करता है, जहां वे गणेश पूजा के साथ-साथ मेलों की मस्ती का भी आनंद लेते हैं। वहीं पूजा समिति सदस्य छोटू कुमार,सौरभ कुमार,जितेश मेहता,विक्की कुमार, प्रमोद कुमार, धर्मेन्द्र कुमार, अभिषेक, धर्मेन्द्र चौधरी, सहित लोगो ने बातया की जिले के अलीगंज में गणेश पूजा हर वर्ष बड़े हर्षोल्लास और धूमधाम के साथ मनाई जाती है। यह आयोजन पूरे जिले में विशेष महत्व रखता है, और इसे देखने और भाग लेने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। अलीगंज का यह स्थान गणेश पूजा के लिए प्रसिद्ध है, और यहां की पूजा की भव्यता और विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम इसे और भी आकर्षक बनाते हैं।और पूरा अलीगंज मेन रोड से मानपुर तक लाइट की आकर्षक सजावट से जगमगा जाता है पूजा के दौरान विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिसमें नृत्य, संगीत, नाटक और अन्य पारंपरिक कला रूप शामिल होते हैं। इन कार्यक्रमों में स्थानीय लोग बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं, और इसके साथ ही बाहर से आने वाले लोग भी इसमें शामिल होते हैं। गणेश पूजा का यह उत्सव केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक मेल-जोल का भी एक बड़ा अवसर है, जो हर साल अलीगंज में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है।

घर-घर जाकर मतदाता से सम्पर्क करें पंचायत अध्यक्ष : जिला अध्यक्ष

- पार्टी की मजबूती को लेकर पंचायत अध्यक्ष के साथ बैठक आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

सदर मुंगेर। गुरुवार को सदर प्रखंड अंतर्गत राष्ट्रीय जनता दल जिला अध्यक्ष त्रिलोकी नारायण शर्मा के आवास पर सदर प्रखंड अंतर्गत सभी राजद पंचायत अध्यक्ष की बैठक आयोजित। बैठक की अध्यक्षता सदर प्रखंड अध्यक्ष अशोक चौधरी ने किया। बैठक में उपस्थित प्रदेश महासचिव प्रमोद यादव, पंकज यादव ,वरिष्ठ राजद नेता नरेश सिंह यादव, बुद्धिजीवी प्रकोष्ठ प्रदेश महासचिव प्रोफेसर विनय कुमार सुमन द्वारा पार्टी के विस्तार हेतु पार्टी की मजबूती पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालें। तथा यह भी कहे की सभी लोगों को एक साथ मिलकर मजबूती से चलना होगा तभी हमारी पार्टी मजबूत रहेगी। वही 65% आरक्षण की भी बात पर चर्चा किया गया। वही जिला अध्यक्ष द्वारा अपने संबोधन में कहा की 17 साल बनाम 17 महीने की चर्चा देश नहीं विदेश में भी हो रही है जो हमारे पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी प्रसाद यादव के द्वारा किया गया। वहीं उपस्थित अतिथि के द्वारा सभी पंचायत अध्यक्ष को पार्टी की ओर से दी गई दीवाल घड़ी देकर सम्मानित करने का काम किया गया। उपस्थिति पंचायत अध्यक्ष अखिलेश राय, शैलेंद्र यादव, पिंटू कुमार, अरुण यादव सौरभ कुमार, किष्टो कुमार, सहित अन्य राजद कार्यकर्ता मुख्य रूप से बैठक में उपस्थित थे।

सपा अध्यक्ष ने किया दौरा किसानों के साथ की बैठक

फसल मुआवजे की मांग को लेकर मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर (बिहार)। बाढ़ की विभिषिका के उहापोह के बीच डूबे हुए फसलों से मर्माहत किसानों के बुलावे पर सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव जिले के मुंगेर सदर बरियारपुर जमालपुर धरहरा प्रखंड के क्षेत्रों का दौरा कर किसानों के साथ बैठक की और सरकार से किसानों की नष्ट हुए फसलों के मुआवजे की मांग की एक तरफ जहां सपा जिला अध्यक्ष किसानों के साथ बैठक मे सरकार के अकर्मण्यता पर बिफरते हुए कहा कि बिहार सरकार के पास किसानों की सहायता के लिए कोई रोड मैप नहीं है और प्रकृति पर निर्भर किसान बाढ़ और सुखाड का बुरी तरह दंश झेलते हैं। और सरकार आपदा को अवसर में बदलने के लिए बाढ़ का वाट जोह रहीं हैं वहीं दूसरी तरफ श्री यादव ने मुख्यमंत्री नितीश कुमार को पत्र भेज कर जिले के गंगा से सटे धरहरा जमालपुर सदर मुंगेर बरियारपुर प्रखंड के किसानों के डुबे हुए फसल का सर्वे करा कर अभिलंब मुआवजा की घोषणा करने की मांग की है श्री यादव ने अपने लिखे पत्र में कहा कि गंगा के जलस्तर के घटने बढ़ने के कारण हर वर्ष इन चार प्रखंड के किसानों को काफी आर्थिक शारीरिक व मानसिक नुकसान उठाना पड़ता है सबसे बुरी स्थिति क्षेत्र के बटाईदार एवं सीमांत किसानों की होती है वावजूद सरकार के पास इसके लिए कोई योजना नहीं है जिससे किसानों में काफी आक्रोश है। श्री यादव ने आगे कहा कि अगर सरकार जल्द ही डूबे हुए फसलों का सर्वे कराकर मुआवजे की घोषणा नहीं करती है तो इस क्षेत्र के किसान आंदोलन के लिए सड़क पर उतरेंगे ।

राज्य सभा सांसद ने 22 को होने वाले चन्द्रवंशी ललकार सम्मेलन को लेकर किया प्रेसवार्ता

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई । परिसदन भवन पहुंचे राज्यसभा सांसद डॉ भीम सिंह चंद्रवंशी ने 22 सितंबर को होने वाले चंद्रवंशी ललकार सम्मेलन के लिए सभी चंद्रवंशी समाज के लोग को आमंत्रित किया । चंद्रवंशी चेतना मंच के बैनर तले भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सांसद डॉ भीम सिंह चंद्रवंशी का जमुई जिले के कई गांवों में अपने चंद्रवंशी परिवार के लोगों के बीच जाकर आगामी 22 सितंबर को होने वाले चंद्रवंशी ललकार सम्मेलन के लिए मंझवे ,ढांढ, मणियाद्दा होते हुए जमुई परिसदन में सैकड़ो कार्यकताओं से संवाद किए और आगहरा, चारण ,सिकंदरा के कई गांव में अपने समाज के लोगों से मिलते हुए एवं निमंत्रण देते हुए पटना लौटे। इस मौके पर इस मौके पर चंद्रवंशी चेतना मंच के जिला अध्यक्ष आमोद चंद्रवंशी , सुधीर राम चंद्रवंशी, अयोध्या राम चंद्रवंशी सकलदेव राम चंद्रवंशी दाबिल मुखिया योगेंद्र राम ,सिकंदरा प्रमुख घनश्याम राम,धनंजय राम,दिवाकर राम,इऊ राम,झाझा,जागेश्वर मुखिया,जयद्रथ राम,शंभू राम,कृष्ण कुमार चंद्रवंशी,गणेश प्रसाद,शशि राम,प्रमोद राम,सहित सैकड़ो पदाधिकारी एवं सदस्य साथ चल रहे थे।

असफलता को सफलता में बदलने वाली आईएएस अभिलाषा शर्मा बनी जमुई की डीएम

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई । अभिलाषा शर्मा, जिन्होंने तीन बार यूपीएससी प्रीलिम्स परीक्षा में असफलता का सामना किया, अब 2017 बैच की भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी के रूप में बिहार के जमुई जिले की नई जिला अधिकारी नियुक्त हुई हैं। उनके जीवन का यह सफर असाधारण है, जिसमें दृढ़ निश्चय, ससुराल का सहयोग, और कड़ी मेहनत का मेल देखा जा सकता है। यह कहानी उन लोगों के लिए प्रेरणा है जो लगातार असफलताओं का सामना करने के बाद भी अपने सपनों को हासिल करना चाहते हैं। अभिलाषा शर्मा की शुरूआती जीवन और शिक्षा अभिलाषा शर्मा का जन्म और पालन-पोषण गुरुग्राम के ओल्ड दिल्ली रोड स्थित सेक्टर 12 में हुआ। इनकी जन्म तिथि 7-8-1990 है। बचपन से ही वह एक मेधावी छात्रा रही हैं और विज्ञान विषयों में उनकी विशेष रुचि रही। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा विज्ञान के साथ पूरी की, और इसके बाद इंजीनियरिंग की दुनिया में कदम रखा। उन्होंने फरीदाबाद के एक प्रतिष्ठित निजी संस्थान से बीटेक की डिग्री हासिल की। इंजीनियरिंग की पढ़ाई के दौरान ही उन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने की प्रेरणा मिली। उनका सपना था कि वह देश की सेवा करें और समाज में बदलाव लाने के लिए काम करें। इस उद्देश्य के साथ, उन्होंने साल 2013 में सिविल सेवा की परीक्षा के लिए तैयारी शुरू की। हालांकि, उनका यह सफर उतना सरल नहीं था जितना उन्होंने सोचा था। यूपीएससी की कठिनाइयाँ : असफलता से सफलता तक अभिलाषा शर्मा ने सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के दौरान कई चुनौतियों का सामना किया। उन्होंने तीन बार प्रीलिम्स की परीक्षा दी, लेकिन हर बार असफल रहीं। पहली बार उन्होंने परीक्षा दी तो वह इसे समझने में चूक गईं, क्योंकि उन्हें एप्टीट्यूड टेस्ट में कठिनाइयाँ हो रही थीं। दूसरा प्रयास भी वैसा ही रहा, और तीसरे प्रयास में भी उन्हें सफलता नहीं मिली। यह वह समय था जब कई लोग हार मान लेते हैं, लेकिन अभिलाषा के दृढ़ संकल्प ने उन्हें हारने नहीं दिया। शादी के बाद सफलता की शुरूआत तीन बार असफल होने के बावजूद अभिलाषा ने हार नहीं मानी। इस बीच उनकी शादी अंकित शर्मा से हो गई, जो एक बिजनेसमैन हैं।

इनकी माता विमला शर्मा और पिता विजय मोहन शर्मा, सास अलका शर्मा और ससुर विंग कमांडर एसपी शर्मा है। शादी के बाद, अभिलाषा के जीवन में बड़ा बदलाव आया। उनके ससुराल वालों ने उनकी पढ़ाई और परीक्षा की तैयारी में उनका भरपूर सहयोग किया। उनके पति अंकित ने हमेशा उन्हें प्रोत्साहित किया, और उनके सास-ससुर ने घर के कामों को खुद संभाल लिया ताकि वह पूरी तरह से पढ़ाई पर ध्यान दे सकें। अभिलाषा शर्मा की चौथे प्रयास में सफलता अभिलाषा शर्मा ने अपनी असफलताओं से सबक लेते हुए चौथे प्रयास की तैयारी की। उन्होंने अपनी कमजोरियों को पहचाना और उन पर गंभीरता से काम किया। उन्होंने करेंट अफेयर्स के लिए नियमित रूप से अखबार पढ़ना शुरू किया और साथ ही किताबों का गहराई से अध्ययन किया।

बीजेपी द्वारा संयुक्त मोर्चा एवं प्रकोष्ठ की बैठक कर सदस्यता अभियान का किया गया आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई नगर के बोधवन तालाब के समीप स्थित महावीर वाटिका में भारतीय जनता पार्टी द्वारा जिला संयुक्त मोर्चा एवं प्रकोष्ठ की बैठक सह सदस्यता अभियान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष कन्हैया सिंह ने की। जमुई की विधायक श्रेयसी सिंह ने कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए महाराजगंज के सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल, राज्य सभा सांसद भीम सिंह, विधान पार्षद लालमोहन गुप्ता, विधान पार्षद प्रमोद चंद्रवंशी का अंगवस्त्र पहनाकर मंच पर स्वागत किया। भाजपा के राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान के तहत आयोजित इस कार्यक्रम में प्रदेश उपाध्यक्ष राजेंद्र सिंह, ओबीसी मोर्चा के प्रदेश प्रभारी अचल सिन्हा, राष्ट्रीय परिषद सदस्य प्रकाश भगत, सदस्यता अभियान के जिला प्रभारी सोनेलाल पासवान, जिला महामंत्री विनय पांडे, सिकंदर पटेल, जिला उपाध्यक्ष और मंच संचालक दुर्गा केसरी, बृजनंदन सिंह, परमानंद सिंह सहित बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

सम्पादकीय

हरियाणा : बैकफुट पर भाजपा

90 विधानसभा सीटों वाला हरियाणा प्रदेश आगामी 5 अक्टूबर को विधानसभा के आम चुनावों का सामना करने जा रहा है। गत वर्षों में हुये किसान आंदोलनों में अपनी सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाला हरियाणा, किसान आंदोलनों के बाद पहली बार विधानसभा चुनावों से रूबरू होने जा रहा है। चूंकि हरियाणा विगत दस वर्षों से भाजपा शासित राज्य रहा है इसलिये यहाँ की हरियाणा सरकार पर ही यह सबसे बड़ी जिम्मेदारी थी कि किसान आंदोलन के दौरान राज्य सरकार किसी भी तरह से दिल्ली जाने की गरज से पंजाब से आने वाले किसानों को भी हरियाणा में प्रवेश करने से रोके और साथ ही हरियाणा -दिल्ली सीमा पर इन्हें दिल्ली प्रवेश से भी रोके। जाहिर है हरियाणा की तत्कालीन खट्टर सरकार ने केंद्र की उम्मीदों पर खरा उतारते हुये ऐसा ही किया। खट्टर सरकार को राज्य की पंजाब व दिल्ली की सीमाओं पर भारी पुलिस तैनाती करनी पड़ी। किसानों पर लाठी चार्ज, आंसू गैस, वाटर केनन का इस्तेमाल किया। यहाँ तक कि गोलियां भी चलानी पड़ीं। इसी गोलीबारी में कई लोग घायल हुये और एक युवा किसान की हत्या भी हो गयी। परन्तु किसानों से की गयी इस जोर आजमाइश के कारण भाजपा की राज्य व केंद्र सरकार को भारी किसान असंतोष का सामना भी करना पड़ा। किसानों की नाराजगी पिछले दिनों हुये लोकसभा 2024 के चुनाव में ही स्पष्ट हो गयी थी। क्योंकि जिस हरियाणा में 2019 में भाजपा को राज्य की सभी दस लोकसभा सीटों पर जीत हासिल हुई थी वहीँ इस बार 2024 के चुनाव में उसे 5 सीटें ही मिल सकीं जबकि कांग्रेस भाजपा से 5 सीटें झटकने में कामयाब रही। हालांकि पिछले लोकसभा चुनाव से पूर्व मनोहर लाल खट्टर को मुख्यमंत्री पद से हटाकर केंद्र में भी इसी मकसद से ले जाया गया है ताकि शायद किसानों का गुस्सा कुछ कम हो सके। गौरतलब है कि खट्टर के मुख्यमंत्री रहते उनकी सरकार ने कई बार न केवल किसानों पर दमनात्मक कार्रवाई की थी बल्कि स्वयं खट्टर ने ही अपने समर्थकों को किसानों के विरुद्ध हिंसा करने के लिये भी भड़काया था। आज भी हरियाणा सरकार ने शंभु बॉर्डर पर किसानों को रोकने के लिये बैरियर बना रखे हैं जिसकी वजह से राजस्थान, कश्मीर व पंजाब की तरफ से दिल्ली हरियाणा व उत्तर प्रदेश की ओर जाने वाले वाहनों को भारी परेशानी व जाम का सामना करना पड़ रहा है। पिछले दस वर्षों की सत्ता विरोधी लहर होने के साथ ही इस बार चुनावों में भाजपा के महिला सुरक्षा के दावे और उसकी हकीकत भी एक बड़ा मुद्दा बनने जा रहा है। खास तौर पर ऐसे वक़्त में जब देश का विश्व में नाम रोशन करने वाली विश्व प्रसिद्ध पहलवान विनेश फोगट और बजरंग पुनिया जैसे ओलम्पियंस कांग्रेस में शामिल हो चुके हैं। विनेश फोगाट को राज्य की जुलाना विधानसभा सीट से पार्टी प्रत्याशी घोषित किया गया है जबकि बजरंग पुनिया को किसान कांग्रेस का कार्यकारी अध्यक्ष बनाकर उन्हें संगठन में और भी बड़ी जिम्मेदारी सौंपी गयी है। जहाँ किसान नेता, भाजपा सांसद व कुश्ती महासंघ के तत्कालीन अध्यक्ष बृज भूषण सिंह के खिलाफ उसके नारी शोषण के विरुद्ध किये जा रहे आंदोलन में इन ओलम्पियन्स के साथ खड़े थे वहीँ यह ओलम्पियन्स भी किसान आंदोलन का समर्थन करते देखे गये थे। क्योंकि यह पहलवान भी दरअसल किसान घरानों से ही आते हैं और किसानों की जायज मांगों से बखूबी वाकिफ हैं। हालाँकि इन खिलाड़ियों के कांग्रेस का दामन थामने के बाद बृज भूषण सिंह ने जोर शोर से यह कहना शुरू कर दिया है कि पहलवानों द्वारा उनके विरुद्ध शोषण का आरोप लगाना कांग्रेस द्वारा दो वर्ष पूर्व लिखी गयी स्क्रिप्ट का हिस्सा थी। राज्य में भाजपा पर कांग्रेस की जबरदस्त बढ़त के दो और भी कारण हैं। एक तो यह कि राहुल गाँधी द्वारा कन्याकुमारी से कश्मीर तक तय की गयी भारत जोड़ो यात्रा, हरियाणा से होकर गुजरी थी। इस यात्रा ने न केवल राज्य के मतदाताओं पर अपना प्रभाव छोड़ा था बल्कि राज्य के कांग्रेस जनों में भी जोश व उत्साह का संचार किया था। जिसका नतीजा लोकसभा चुनाव में 5 सीटें जीतने के रूप में सामने भी आया। अब जहां कांग्रेस 5 लोकसभा सदस्यों की जीत के साथ बुलंद हौसले से चुनाव मैदान में है वहीं भाजपा जिताऊ उम्मीदवार मैदान में उतारने के चक्कर में न केवल कई दलबदलुओं को भाजपा प्रत्याशी बना रही है बल्कि परिवारवाद के विरुद्ध लंबे चौड़े प्रवचन देने के बावजूद खुद भी कई ह्यपरिवारवादी सूरमाओंह्ण पर दांव लगा रही है। क्योंकि भाजपा को अपने दल में योग्य व जिताऊ नेताओं की कमी महसूस हो रही है। इसी उधेड़बुन में भाजपा ने पिछले दिनों राज्य में 67 पार्टी प्रत्याशियों की जो पहली सूची जारी की उसमें रणजीत चौटाला जैसे मंत्री सहित 9 वर्तमान विधायकों के टिकट काट दिये गये। परिणाम स्वरूप भाजपा में पद व दल से नेताओं के इस्तीफे की झड़ी लग गयी। इस भगदड़ में कोई भाजपाई किसी दूसरे दल में टिकट के लिये ताकझांक कर रहा है

बलात्कार के दोषी को फांसी की सजा

आजकल एक हवा चली है कि कोई भी आपराधिक घटना हो जाए और मामला किसी पार्टी या संगठन से जुड़े व्यक्ति का हो तो तुरंत ही चक्काजाम या थाने का घेराव होना लाजमी है ! और मामला बलात्कार का हो या लड़की को अगवा करने का हो तब तो फौरी इंसाफ की बात होती है। मामला यह हो जाता है कि आरोपी को भीड़ अपराधी घोषित कर देती है। भले ही कोई सबूत हो या ना हो !इसमें राजनेताओं और राजनीतिक पार्टियों की भी भूमिका कम नहीं, वे भी आग में घी डालने का काम करते हैं, बशर्ते सरकार उनके विरोधी की हो। जैसा कि बंगाल के कलकत्ता में हुआ। हालत इतने उलझ गए कि बंगाल की विधानसभा में ममता सरकार ने एक कानून ही पारित कर दिया कि बलात्कार के दोषी को फांसी की सजा दी जाए। अब सरकार में विधि सचिव की बुद्धि और ज्ञान सब कुछ मंत्री के आदेश के सामने लाचार हो गए। दिल्ली में हुए निर्भया कांड में भी जनता ने (राजनीतिक दलों नहीं लेने दिया गया था) ऐसी ही मांग रखी थी। केंद्र ने भी जनता की मांग पर सुप्रीम कोर्ट के सेवा निव्रत प्रधान न्यायाधीश वर्मा की अध्यक्षता मे एकल सदस्यीय जांच आयोग का गठन किया था। उन्होंने अपनी सम्मति में लिखा था कि आरोपी के लिए निर्धारित प्रक्रिया से ही अपराधी घोषित किया जा सकता है, तब ही उसे सजा दी जा सकती है। निर्भय कांड मे दोषियों को सजा ह्यफांसीह्ण सालों बाद दी जा सकी। लिखने का तात्पर्य यह है कि दोषियों की गिरफ्तारी और जल्दी सुनवाई की मांग तो की जा सकती है और उसे सरकार पूरा भी कर सकती है, पर सरकार किसी भी कानून द्वारा आरोपी को सजा नहीं दे सकती। अब यह स्थिति सभी राजनीतिक दलों और उनके नेताओं को मालूम भी होती है, परंतु राजनीतिक रोटी सेंकने के लिए वे अपने भाषणों में आरोपियों को तुरंत लटकाये जाने की मांग करते रहते हैं। अब ऐसे नेताओं से कौन पूछे कि किस विधि से आंदोलनकारियों की मांग को तुरंत पूरा किया जा सकता है? वे कभी भी इस सवाल का जवाब नहीं दे पाएंगे। क्यूंकि भारत में न्याय की एक प्रक्रिया है जो सभी देश के नागरिकों पर लागू होती है। अदालत के 4 चरण होते है, पहला मजिस्टरेयत फिर सेशन कोर्ट तब हाई कोर्ट और अंत में सुप्रीम कोर्ट। सेशन कोर्ट दोषों को फांसी की सजा सुना तो सकता है परंतु उस पर मुहर हाई कोर्ट को लगाना जरूरी है। अर्थात हाई कोर्ट तक मामले की सुनवाई तो होगी ही। अब आंदोलनकारियों की मांग को पूरा करने के लिए इन अदालतों को सभी काम छोड़कर उस एक मामले की सुनवाई के लिए तैयार बैठे ! ऐसा हो नहीं सकता क्यूंकि यह संभव ही नहीं असंभव ही है। तब बार क्यू दोषी को तुरंत फांसी देने का आश्वासन और कानून? सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस ओक ने अभी अपने एक भाषण में कहा भी है कि भीड को तुरंत न्याय देने के बयञ्चान बिल्कुल गलत है। यह न्याय प्रक्रिया को चोट पँहुचाते हैं। तो यह है सुप्रीम कोर्ट की रॉय। हाँ हरियाणा में पाँच युवकों ने जिन्हे गौ रक्षक बताया जा रहा है उन्होंने एक कार में सवार परिवार पर इसलिए गोलियां बरसा कर एक युवक की हत्या कर दी, क्यूंकि उनके अनुसार उन्हें सूचना मिली थी कि कर में गौ तस्कर घूम रहे हैं। इसलिए उन्होंने कार का पीछा कर के चलती कार पर गोली वर्षा कर दी ! अब दो सवाल है कि यह गौ तस्कर क्या होते हैं? दूसरे गए की तस्करी किस प्रकार की जा सकती है? हरियाणा की हिंदुवादी सरकार का रिकार्ड काफी खराब रहा है, गाय के परिवहन को गाय की तस्करी बता कर मुस्लिम लोगों को मारने -पीटने और यंहां तक कि उनकी हत्या करने का भी मामला चल चुका है। जब राजस्थान के चार मुस्लिम ग्वालों को पीट -पीट कर मारने का। अदालत में इस मुकदमे में हरियाणा सरकार की काफी किरकिरी हुई थी। यंहा सवाल यह है कि पुलिस को तो पूछने का जांच करने का अधिकार है पर इन गौ भक्तों को किसी की तलाशी लेने या पूछने का अधिकार कहां से मिल गया। जरूर ही सरकार की शह पर पुलिस को पंगु बना कर विधि के राज को असफल करने का मामला हैं।

मुफ्त की संस्कृति से पंजाब-हिमाचल की बढ़ी आर्थिक मुश्किलें

मुफ्त उपहार के मामले में कोई भी देश पीछे नहीं है। ब्रिटेन, इटली, जर्मनी, फ्रांस, डेनमार्क, स्वीडन, संयुक्त अरब अमीरात, बांग्लादेश, मलेशिया, कनाडा, अंगोला, कीनिया, कांगो, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया सहित अनेक देश इस दौड़ में शामिल हैं। विकसित देश जहां अपनी जीडीपी का 0.5 प्रतिशत से 1 प्रतिशत तक लोककल्याण योजनाओं में खर्च करते हैं, तो विकासशील देश जीडीपी का 3 प्रतिशत से 4 प्रतिशत तक फ्रीबीज के नाम पर खर्च कर देते हैं। भारत में अब जब न्यायालय की चौखट पर यह मुद्दा विचाराधीन है, तो संभावना है कि सरकार पर अनावश्यक आर्थिक भार डालने वाली घोषणाओं पर नियंत्रण को लेकर कोई राह भारत ही दुनिया को दिखाए।

ललित गर्ग
लेखक

दिल्ली, पंजाब व हिमाचल सरकारों के सम्मुख वित्तीय संकट के धुंधलके छाने लगे हैं। सत्ता पर बैठी आम आदमी पार्टी एवं कांग्रेस की सरकारों के सामने चुनाव के दौरान वोटरों को लुभाने के लिए की गयी फ्रीबीज या रेवड़ी कल्चर की घोषणा आर्थिक संकट का बड़ा कारण बन रही है। मुफ्त की रेवड़ियां बांटने एवं लोक-लुभावन घोषणाओं के कितने भारी नुकसान होते हैं, इस बात को दिल्ली, पंजाब व हिमाचल सरकारों के सामने खड़ी हुई वित्तीय परेशानियों से समझा जा सकता है। इन सरकारों के लगातार बढ़ते राजस्व घाटा व बड़ी होती देनदारियां राज्य की अर्थव्यवस्था पर भारी पड़ रही हैं। विकास योजनाओं को तो छोड़े, इन राज्यों में कर्मचारियों को वेतन व सेवानिवृत्त कर्मियों को समय पर पेंशन देने में मुश्किलें आ रही हैं। इन जटिल होती स्थितियों को लेकर ह्यरेवड़ी कल्चरह्ण पर न्यायालय से लेकर बुद्धिजीवियों एवं राजनीति क्षेत्रों में व्यापक चर्चा है। पंजाब के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक यानी कैग की हालिया रिपोर्ट में राज्य की वित्तीय प्राप्तियों और खर्चे के बीच बढ़ते राजकोषीय अंतर को उजागर किया गया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी मुक्त की संस्कृति पर तीखे प्रहार करते हुए इसे देश के लिए नुकसानदायक परंपरा बता चुके हैं। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने भी मुफ्त रेवड़ियां बांटने के चलन पर गंभीर चिंता जता चुके हैं। नीति आयोग के साथ रिजर्व बैंक भी मुफ्त की रेवड़ियों पर आपत्ति जता चुका है, लेकिन राजनीतिक दलों पर कोई असर नहीं है।

कैग की रिपोर्ट बताती है कि कैसे पंजाब राज्य का राजस्व घाटा, सकल राज्य घरेलू उत्पाद के 1.99 फीसदी लक्ष्य के मुकाबले 3.87 फीसदी तक जा पहुंचा है। यह बेहद चिंताजनक स्थिति है कि राज्य का सार्वजनिक ऋण जीएसडीपी का 44.12 फीसदी हो गया है। यदि अब भी सत्ताधीश वित्तीय अनुशासन का पालन नहीं करते एवं मुक्त की सुविधाएं देने से बाज नहीं आते तो निश्चित ही राज्य को बड़ी मुश्किल की ओर धकेलने जैसी बात होगी। जिसका उदाहरण सामने है कि बीते माह का वेतन निर्धारित समय पर नहीं दिया जा सका है। इसके बावजूद सत्ता पर काबिज नेता मुफ्त की रेवड़ियों को बांटने का क्रम जारी रखे हुए हैं तो उसकी कीमत न केवल टैक्स देने वालों को चुकानी पड़ रही है बल्कि आम लोगों के जीवन पर भी इसका प्रतिकूल असर पड़ रहा है। वहीं दूसरी ओर राज्य का खर्चा जहां 13 प्रतिशत की गति से बढ़ रहा है, वहीं राजस्व प्राप्तियां 10.76 फीसदी की दर से बढ़ रही हैं। जाहिर है, ये अंतर राज्य की आर्थिक बदहाली, आर्थिक असंतुलन एवं आर्थिक अनुशासनहीनता की तस्वीर ही उकेरता है। दिल्ली से लेकर पंजाब में आम आदमी पार्टी की सरकारें हों या हिमाचल प्रदेश से लेकर अन्य राज्यों में कांग्रेस की सरकारें तमाम तरह की मुफ्त की रेवड़ियां बांट कर भले ही वोट बैंक को अपने पक्ष में करने का स्वार्थी खेल खेला जा रहा हो, लेकिन इससे वित्तीय बजट लडखड़ाने ने इन राज्यों के लिये गंभीर चुनौती बन रहा हैं।

दरअसल, जिस भी नागरिक सुविधा को मुफ्त किया जाता है, उस विभाग का तो भट्टा बैठ जाता है। फिर उसका आर्थिक संतुलन कभी नहीं संभल पाता। कैग की हालिया रिपोर्ट बताती है कि पंजाब में एक निर्धारित यूनिट तक मुफ्त बिजली बांटे जाने से राज्य के अस्सी फीसदी घरेलू उपभोक्ता मुफ्त की बिजली इस्तेमाल कर रहे हैं। ये और ऐसी ही अन्य मुफ्त सुविधाओं की भरमार के कारण सरकारों के सामने अपने कर्मियों को समय पर वेतन देने के लिये वित्तीय संकट है, जबकि वेतन पर आश्रित कर्मियों को राशन-पानी, बच्चों की स्कूल की फीस व लोन की ईएमआई आदि समय पर चुकाने में दिक्कत हो रही है। इन जटिल होते हालातों को देखते हुए अपेक्षा है कि राजनेता सस्ती लोकप्रियता पाने के लिये सब्सिडी की राजनीति एवं मुफ्त की संस्कृति से परहेज करें और वित्तीय अनुशासन से राज्य की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने का प्रयास करें। जब भी ऐसी लोक-लुभावन घोषणाएं की जाती हैं तो उन दलों को अपने घोषणापत्र में यह बात स्पष्ट करनी चाहिए कि वे जो लोकलुभावनी योजना लाने जा रहे हैं, उसके वित्तीय स्रोत क्या होंगे? कैसे व कहां से यह धन जुटाया जाएगा? साथ ही जनता को भी सोचना चाहिए कि मुफ्त के लालच में दिया गया वोट कालांतर उनके हितों पर भारी पड़ेगा। जनता को गुमराह करते हुए, उन्हें ठगते हुए देश में रेवड़ियां बांटने का वादा और फिर उन पर जैसे-तैसे और अक्सर आधे-अधूरे ढंग से अमल का दौर चलता ही रहता है। लोकलुभावन वादों को पूरा करने की लागत अंततः मतदाताओं को खासकर करदाताओं को ही वहन करनी पड़ती है-अक्सर करों अथवा उपकरों के रूप में। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने तेलंगाना विधानसभा चुनाव के समय मुफ्त रेवड़ियां देने के मुद्दे को उठाते हुए कहा था कि कई राज्यों ने अपनी वित्तीय स्थिति की अनदेखी करते हुए मुफ्त की सुविधाएं देने का वादा कर दिया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी कुछ समय पहले उन दलों को आड़े हाथों लिया था, जो वोट लेने के लिए मुफ्त की रेवड़ियां देने के वादे करते हैं। उनका कहना था कि रेवड़ी बांटने वाले कभी विकास के कार्यों जैसे रोड, रेल नेटवर्क आदि का निर्माण नहीं करा सकते। वे अस्पताल, स्कूल और गरीबों के घर भी नहीं बनवा सकते। रेवड़ी संस्कृति अर्थव्यवस्था को कमजोर करने के साथ ही आने वाली पीढ़ियों के लिए घातक भी साबित होती है। इससे मुफ्तखोरी की संस्कृति जन्म लेती है। मुफ्त की सुविधाएं पाने वाले तमाम लोग अपनी आय बढ़ाने के जतन करना छोड़ देते हैं। पंजाब में महिलाओं को नगद राशि देने की घोषणा हुई, जबकि वहां की महिलाएं समृद्ध है। दिल्ली में उन महिलाओं को भी डीटीसी बसों में मुफ्त यात्रा की सुविधा दी गई है, जिन्हें इस तरह की सुविधा की जरूरत नहीं। आधी आबादी को मुफ्त यात्रा की सुविधा देने से दिल्ली में डीटीसी को हर साल 15 करोड़ रुपये तक का नुकसान होगा। इस राशि का उपयोग दिल्ली के इन्फ्रास्ट्रक्चर पर किया जा सकता है। मुफ्तखोरी की राजनीति से देश का आर्थिक बजट लडखड़ाने का खतरा है। और इसके साथ निष्क्रियता एवं अकर्मण्यता को बल मिलेगा। हिंदुस्तान में लोगों को बहुत कम में जीवन निर्वहन करने की आदत है ऐसे में जब मुफ्त राशन, बिजली, पानी, शिक्षा, चिकित्सा मिलेगा तो काम क्यों करेंगे।

ह्यगरीब की थाली में पुलाव आ गया है, लगता है शहर में चुनाव आ गया हैह्ण भारत की राजनीति से जुड़ी विसंगतियों एवं विडम्बनाओं पर ये दो पंक्तियां सटीक टिप्पणी हैं। चुनाव आते ही वोटरों को लुभाने के लिए जिस तरह राजनीतिक दल और उनके नेता वायदों की बरसात करते हैं, यह शासन-व्यवस्थाओं को गहन अंधेरों में धकेल देता है। मुफ्त की संस्कृति को कल्याणकारी योजना का नाम देकर राजनीतिक लाभ की रोटियां सेंकी जाती रही है। भारत जैसे विकासशील देश के लिये यह मुक्त संस्कृति एक अभिशाप बनती जा रही है। सच भी है कि मतदाताओं का एक बड़ा वर्ग आज भी इस स्थिति में है कि कथित तौर पर मुफ्त या सस्ती चीजें उसके वोट के फैसले को प्रभावित करती हैं।

कब पीछा छोड़ेगा ये 370 का आंकड़ा?

देश--काल परिस्थितियों में भी तेजी से तब्दीली आ रही है। सबसे बड़ी बात ये कि भाजपा अपने आपको समय के हिसाब से ढाल नहीं पा रही। भाजपा आज भी हिन्दू-मुसलमान पर अड़ी है। भाजपा के संल्प पत्र में भी यही हुआ। घाटी के लिए भाजपा ने ऐसी एक भी योजना नहीं बनाई जो वहां के किसी मुस्लिम नेता के नाम पर हो। हम तो रामसेवक लोग है। मानते हैं कि- -हुईए वही जो राम रची रखा। को कहि तक बढ़ावहि साखा। ।

राकेश अचल
लेखक

कुछ चीजें जाने-अनजाने गले पड़ जातीं हैं तो पीछा नहीं छोड़तीं, ठीक उसी तरह जिस तरह की कुछ भूत मरने-मारने के बावजूद सर से नहीं उतरते। उन्हें उतरने के लिए लम्बी प्रतीक्षा करना पड़ती है। अनचाही चीजों से पिंड छुड़ाने के लिए भी लम्बी मशक्कत करना पड़ती है। इस समय भाजपा के सिर पर दस साल से कांग्रेस का भूत और गले में धारा 370 हड्डी की तरह फंसी हुई है।

तीसरी बार देश की सत्ता में आई भाजपा के साथ पहली बार मेरी सहानुभूति उमड़ रही है। आखिर भाजपा ने सत्ता में आने के लिए, एक नया युग (मोदी युग) शुरू करने के लिए बहुत पापड बेले तब कहीं जाकर 34 साल बाद सत्ता में आयी थी। दुर्भाग्य ये है कि भाजपा लगातार पापड़ बेल रही है, लेकिन खुद खा नहीं पा रही। जिस धारा 370 को हटाने में भाजपा को एक लम्बी यात्रा करना पड़ी। वो ही धारा 370 अब फिर से जम्मू-कश्मीर विधानसभा के चुनावों के आते ही एक बार फिर गले पड़ गयी है। कांग्रेस समेत समूचा विपक्ष कह रहा है कि यदि राज्य मुं भाजपा सत्ता में न आयी तो जम्मू-कश्मीर को धारा 370 फिर से लौटा दी जाएगी।

आपको याद होगा कि चार महीने पहले ही सम्पन्न आम चुनावों में भाजपा ने अपने लिए 370 और अपने गठबंधन के लिए 400 पार का लक्ष्य रखा था, किन्तु देश की जनता ने भाजपा को दोनों ही लक्ष्य पूरे नहीं करने दिए। भाजपा 240 पर ही अटक गयी। भाजपा ने जैसे-तैसे इस दर्द को, इस आंकड़े को भुलाने की कोशिश की थी किन्तु जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव घोषित होते ही समूचे विपक्ष ने एक बार फिर धारा 370 की वापसी का राग अलापकर भाजपा की मुश्किलें बढ़ा दीं है। मुश्किलें कम करने और मुश्किलें बढ़ाने में बड़ा अंतर है। भाजपा को लगा कि धारा 370 हटाने के बाद सीमा पर कर किसी खाई में गिरकर मर गयी होगी, लेकिन ऐसानहीं हुआ। वो तो जहाँ थी, वहीं आज भी है, केवल उसे जम्मू-कश्मीर से हटा दिया गया था।

गृह मंत्री अमित शाह ने राहुल गांधी से सवाल करते हुए पूछा कि यह दर्जा कौन वापस दे सकता है? यह दर्जा तो सिर्फ भारत सरकार दे सकती है, प्रधानमंत्री दे सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैं बाबा मन्हास के मंदिर की कसम खाकर कहता हूं कि हम आपको 370 वापस नहीं लाने देंगे। आपको दलित और गुज्जर बकरवाल भाइयों के रिजर्वेशन को समाप्त नहीं करने देंगे। अपने पुराने सियासी कश्मीरी दोस्तों को इंगित कर अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस, अब्दुल्ला और मुफ्ती परिवार ने जम्मू कश्मीर को लूटा है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस और फारूक अब्दुल्ला को मत जिताना नहीं तो जम्मू कश्मीर का विकास रुक जाएगा। जम्मू कश्मीर के लिए यह चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह एक ध्वज, एक संविधान के तहत पहला चुनाव हो रहा है।

कांग्रेस तो छोड़िये अब जम्मू-कश्मीर के पूर्व सीएम रहे उमर अब्दुल्ला ने गृह मंत्री अमित शाह को सीधा चैलेंज देते हुए आर्टिकल 370 को वापस लाने की वकालत की है। उन्होंने कहा कि हम चुनाव जीते तो अनुच्छेद 370 को दोबारा लागू करेंगे। इसके लिए वक्त लगेगा, लेकिन यह होकर रहेगा। 370 हटने के बाद जब जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव पहली बार होने जा रहे हैं तब इसकी गूंज और जोर से सुनाई पड़ रही है।

हमें पता हैं कि धारा 370 को हटाना न आसान था और अब तो दोबारा लागू करना और भी मुश्किल है। इसीलिए मई मुश्किल शब्द का इस्तेमाल कर रहा हूँ, असम्भव का नहीं। आपको याद होगा कि तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने 5 अगस्त 2019 को सीओ 272 जारी किया था। राष्ट्रपति का यह वह आदेश था जिसके जरिए संविधान के अनुच्छेद 367 को संशोधित किया गया। इसमें कहा गया कि अनुच्छेद 370 (3) में उल्लेखित संविधान सभा की जगह इसे विधानसभा कहा जाएगा। इससे ही 370 हटाने का रास्ता साफ हुआ। लेकिन भाजपा ने धारा 370 को संविधान से विलोपित शायद नहीं किया है, और अब शायद ऐसा करने का समय भी नहीं है और कूबत भी नहीं है। इसलिए इस धारा को लेकर जम्मू -कश्मीर का अवाम देश की मुख्यधारा में वापस आएगा या नहीं, इसमें संदेह है।

हम धाराओं के साथ बहने वाले लोग नहीं है। हमें धारा के विपरीत अपना रास्ता तय करने की आदत है, लेकिन हमें फिक्र भाजपा की है, उसके तनाव की है और उसकी चुनौतियों की है, क्योंकि पार्टी का नेतृत्व बूढ़ा हो चुका है। नेतृत्व को लेकर असंख्य विवाद भी हैं।

विस्फोटक के ऊपर बैठी दुनिया के चारों ओर आंतकी जमातें

डा. रवीन्द्र अरजरिया

देश-दुनिया में कट्टरपंथियों की जमातें ईश निंदा के आरोप लगाकर निरंतर हमलों को अंजाम दे रही है। शरिया कानून मानने वाले राष्ट्रों के अलावा अन्य गणतंत्र देशों में भी भीड की शक्ल में जमा होकर असामाजिक तत्वों के समूह न केवल मनमाने आरोपों का हल्ला मचाकर लोगों की जान ले रहा है बल्कि खास सम्प्रदाय में उन्माद फैलाकर काफिरों को नस्तनाबूत करने के लिए उकसाता भी है। साइबर युग में संचार साधनों का उपयोग करके आतंक को पनाह देने वाले देश फर्जी पोस्ट डालकर मजहब की दुहाई दे रहे हैं ताकि अमन, चैन और खुशहाली को दफन किया जा सके। राजस्थान के उदयपुर का मामला हो या फिर बंगलादेश के उत्सव मण्डल की जिन्दगी का सवाल। अमेरिका में कट्टरपंथियों की भीड का हिंसक होना हो या फिर ब्रिटेन में कानून तोडने की घटनायें। लाल सागर में समुद्री लुटेरों का लहू डूबा करतब हो या फिर इजराइल में इस्लामी हमला। समूची दुनिया में आतंक की इबारत तले जबरन गुलाम बनाने की सियासत चल रही है। असामाजिक तत्वों की जमातों व्दारा मजहब के नाम पर दुनिया भर में नफरत की आंधियां चलाई जा रहीं हैं। फिलिस्तीन में वहां के लोग मासूम जान की कीमत पर भी हमास को सुरक्षित कर रहे हैं। इजराइल से अपहरित करके लाये गये वहां के नागरिकों में से अधिकांश के शव बरामद हो चुके हैं। बाकी के जिन्दा होने के कोई भी सबूत न मिलने के बाद भी उम्मीद की रोशनी में ब्लैकमेलिंग चल रही है। ऐसा ही हाल बंगलादेश में हिन्दू आबादी के साथ हो रहा है। समूची दुनिया में सिरफिरे अपराधियों ने भीड की शक्ल अख्तियार कर ली है जो लोगों पर अपने पैगम्बर साहब पर टिप्पणी करने, ईश निन्दा करने, कुरान का अपमान करने, इस्लाम की खिलाफियत करने जैसे मनगढन्त आरोप लगाकर सरेआम कत्लेआम मचा रही है। बंगलादेश की सरकार के नुमाइन्दे तो ऐसे लोगों की खुलकर तरफदारी करने, उन्हें पूरे जोरशोर से बचाने तथा जुल्म की घटनाओं को बढावा देने का काम कर रहे हैं। दूसरी ओर पडोसी की तर्ज पर ही देश के अन्दर मनमानी करने वाले वक्फ बोर्ड ने देश की राजधानी में ही 246 सरकारी सम्पत्तियों पर दावा ठोक दिया है। इस पर तीन मंत्रालयों के अधिकारियों व्दारा संयुक्त समिति के समक्ष वस्तुस्थिति स्पष्ट की तो विपक्षी सदस्यों ने स्पष्टीकरण देने वालों पर ही मनमाने प्रश्नों की बौछार कर दी। इतिहास गवाह है कि ब्रिटिश शासनकाल के दौरान 1911-12 में दिल्ली की नई राजधानी बनाने हेतु भूमि अधिग्रहीत की गई थी जिसे स्वाधीनता के बाद दिल्ली वक्फ बोर्ड ने अधिग्रहीत सम्पत्तियों में से कई को वक्फ सम्पत्ति घोषित कर दी थी। वर्तमान में 108 सम्पत्तियां भूमि एवं विकास कार्यालय तथा 138 सम्पत्तियां दिल्ली विकास प्राधिकरण के पास होने के बाद भी उन पर वक्फ बोर्ड अपना स्वामित्व निरूपित किये है। मालूम हो कि राष्ट्रीय राजधानी के निर्माण हेतु कुल 341 वर्ग किलोमीटर भूमि का अधिग्रहण किया गया था। उससे प्रभावित लोगों को उचित मुआवजे का भुगतान भी किया जा चुका था परन्तु वक्फ बोर्ड अपने असीमित अधिकारों का उपयोग करके निरंतर मनमानियां कर रहा है। कट्टरपंथियों व्दारा फैलाये जाने वाला आतंक जहां देश में अराजकता का वातावरण निर्मित कर रहा है वहीं दुनिया भर में हिजबुल्लाह, हूती, हमास, अलकायदा, आईएसआईएस जैसे संगठन तो निरंतर खूनी होली खेल रहे हैं। तिस पर हथियारों के सौदागरों ने पत्ते पर कुलाट खाने की अपनी आदत में इजाफा करके अब हवा में ही कुलाट खाना शुरू कर दिया है। दो देशों को आपस में लडाना, असुरक्षा का वातावरण निर्मित करना, वैमनुष्यता फैलाना तथा पर्दे के पीछे से विष पौध रोपित जैसे कृत्यों में लिप्त स्वार्थी देशों को केवल और केवल चिन्ता है तो अपने हथियारों की बिक्री, उनकी मरम्मत और रखरखाव के नाम पर धन बटोरने की। ऐसे में जेहाद का नाम लेकर पवित्र ग्रन्थ की मनमानी व्याख्यायें करने वाले कथित जानकार वास्तव में हथियार सप्लाई करने वालों के खास सिपाहसालार बनकर क्रास एजेन्ट का बखूबी काम कर रहे हैं। कहा तो यहां तक जा रहा है कि बंगलादेश के कथित आंदोलनकारियों ने विदेश में जाकर अमेरिकन एजेन्ट्स तथा पाकिस्तान के खुफिया तंत्र मुलाकातें की थी।

संक्षिप्त खबरें

विश्व साक्षरता दिवस पर छात्र-छात्राओं ने निकाली जागरूकता रैली

बेतिया।नगर निगम की महापौर गरिमा देवी सिकारिया ने कहा कि मानव समाज का वांछित विकास काफी हद तक अज्ञानता रूपी अंधकार से बाधित है। वे रविवार को विश्व साक्षरता दिवस एवं कंप्टेटीव जोन के स्थापना दिवस पर संस्था के सैकड़ों छात्र-छात्राओं के द्वारा पवन सर के नेतृत्व में जागरूकता रैली निकालने की शुरूआत हरी झंडी दिखा कर करने से पहले संस्थान के सैकड़ों छात्र छात्राओं को संबोधित कर रहीं थीं। आयोजन की मुख्य अतिथि रहीं नगर निगम महापौर श्रीमती सिकारिया ने समाज के शैक्षिक विकास में ब्लकम्टेटिव जोनह्न के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि प्रतिवर्ष सैकड़ों विद्यार्थियों के जीवन को सफल बनाना सामाजिक उत्थान में एक बड़ा योगदान है। इसके साथ ही विश्व साक्षरता दिवस महत्व पर भी विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन ब्लकम्टेटिव जोनह्न के संचालक पवन सर ने किया।

फरार चल रहा व्यक्ती हुआ गिरफ्तार

एकमा। स्थानीय थाना पुलिस ने थाना क्षेत्र के एकडीपुर गांव निवासी रामअवतार चौधरी के पुत्र अमर चौधरी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। गिरफ्तार व्यक्ती पर सिवान न्यायालय के द्वारा पुर्व का कुर्की वारंट जारी था । जहां विगत दिनों से फरार चल रहा था। जहां पुलिस ने गुप्त सुचना के आधार पर घर से गिरफ्तार कर लिया गया।

पुलिस ने छः शराबियों सहित एक कारोबारी को किया गिरफ्तार

माँझी। माँझी थाना पुलिस ने अभियान चलाकर शनिवार की रात थाना क्षेत्र के विभिन्न जगहों से छह शराबियों सहित एक कारोबारी को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार किये गए कारोबारी के पास से पुलिस ने 60 लीटर देसी शराब बरामद किया है । वहीं उपयोग में लाये गए स्कूटी को भी जब्त कर लिया गया है। गिरफ्तार कारोबारी दाउदपुर थाना क्षेत्र के अरियांव गाँव निवासी स्वर्गीय बूटी चौधरी का 20 वर्षीय पुत्र रंजीत कुमार चौधरी बताया जाता है। थानाध्यक्ष अमित कुमार ने बताया कि गुप्त सूचना मिली कि एक सफेद रंग की स्कूटी से शराब लाया जा रहा है। थानाध्यक्ष ने तुरंत गश्ती गाड़ी को सूचित कर चेकिंग लगा दिया। झखड़ा मोड़ के समीप चेकिंग चल रहा था तभी एक सफेद रंग की स्कूटी आते दिखाई दी। पुलिस ने उसे रोकने का इशारा किया तो वह कारोबारी स्कूटी घुमा कर भागने का प्रयास किया।लेकिन पहले से सतर्क पुलिस बल ने उसे दबोच लिया। तलाशी लिए जाने पर स्कूटी से बीस 20 लीटर के तीन पैकेट कुल 60 लीटर देसी शराब बरामद किया गया जो सीट के नीचे पॉलिथीन में छुपा कर रखा गया था। वहीं कारोबारी को गिरफ्तार कर स्कूटी को जब्त कर लिया गया। जबकि अलग-अलग जगह से छह शराबियों को भी गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने गिरफ्तार सातों को जेल भेज दिया है।

बाइक और टैम्पू के टक्कर में तीन लोग जख्मी

कोपा । राष्ट्रीय राज्य मार्ग एन एच 531 छपरा सिवान मेन रोड कोपा थाना क्षेत्र के बसडीला मोड़ पर बाइक एव टैम्पू टक्कर में तीन लोग गम्भीर रूप से जख्मी हो गया।दोनों बाइक सवार युवक सिवान का बताया गया।टैम्पू चालक दाउदपुर थाना क्षेत्र के जैतपुर का बताया गया। दोनों बाइक सवार एव टैम्पू चालक बुरी तरह जख्मी हो गया।कोपा थाना एसआई जितेंद्र कुमार ने आनन फानन में तीनों को छपरा सदर अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराई।

नगरा पुलिस ने युवक को लिया हिरासत में

नगरा।थाना क्षेत्र के रसूलपुर गांव में 6 सितंबर की शाम एक युवक को पुलिस ने संदेहास्पद स्थिति में खेल मैदान से गिरफ्तार किया. पुलिस की गाड़ी देखते ही उसका दोस्त फरार हो गया,जबकि दूसरे युवक को पुलिस ने हिरासत में ले लिया.जांच के दौरान उसके मोबाइल में तीन साल पुरानी कुछ तस्वीरें मिलीं, जिनमें वह कट्टा और कुछ लड़कियों के साथ नजर आ रहा है.हालांकि युवक का दावा है कि कट्टा प्लास्टिक का था.गांव वालों के अनुसार वह हाल ही में दिल्ली से लौटा है,जहां वह मजदूरी करता था.नगरा थानाध्यक्षा प्रभारी रुचि कुमारी ने बताया कि युवक को संदेह के आधार पर हिरासत में लिया गया है और मामले की जांच जारी है. स्थिति स्पष्ट होने के बाद करवाई की जाएगी.

पैक्सों, मिलरों के विरूद्ध की जायेगी कठोर कार्रवाई : जिलाधिकारी

15 तक लंबित सीएमआर की करें आपूर्ति, अन्यथा होगी एफआईआर

प्रात :किरण संवाददाता

बेतिया(घनश्याम)। जिला पदाधिकारी दिनेश कुमार राय ने कहा कि सीएमआर लंबित रखने वाले पैक्सों, मिलरों के विरूद्ध कठोर कार्रवाई की जायेगी। 15 सितंबर तक लंबित सीएमआर की आपूर्ति करें, अन्यथा ऋणक दर्ज करते हुए सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने कहा कि उच्चस्तर पर लगातार सीएमआर आपूर्ति की समीक्षा की जा रही है। सीएमआर आपूर्ति कार्य में किसी भी स्तर पर लापरवाही, कोताही एवं शिथिलता बरतने वालों को कतई बख्शा नहीं जायेगा।जिलाधिकारी कार्यालय प्रकोष्ठ में आयोजित बैठक में अधिकारियों को निर्देशित कर रहे थे। बैठक में जिला सहकारिता पदाधिकारी द्वारा बीसीओ वाइस सीएमआर आपूर्ति से जिलाधिकारी को अवगत कराया गया। जिलाधिकारी ने बैठक में उपस्थित सभी प्रखंडों के सहकारिता प्रसार पदाधिकारी को निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप सीएमआर आपूर्ति सुनिश्चित कराने हेतु निर्देशित किया। साथ ही सख्त हिदायत दी कि लक्ष्य के अनुरूप 15 सितंबर तक सीएमआर आपूर्ति नहीं कराये जाने की स्थिति में उनके विरूद्ध भी कठोर विभागीय कार्रवाई की जायेगी। ऐसे प्रखंड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी के विरुद्ध प्रपत्र-क गठित करते हुये अग्रतर कार्रवाई की जाएगी। बैठक से अनुपस्थित एवं कार्य में लापरवाही को लेकर कई प्रखंड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी को शोकॉज करने तथा वेतन निकासी पर रोक लगाने का निर्देश जिलाधिकारी द्वारा दिया गया। इस अवसर पर जिला सहकारिता पदाधिकारी अंशु कुमारी, जिला प्रबंधक, राज्य खाद्य निगम संजय सिन्हा, विशेष कार्य पदाधिकारी, जिला गोपनीय शाखा सहित जिले के सभी प्रखंड सहकारिता प्रसार पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।

लायंस क्लब ने मनाया अपना 26 वां पदस्थापना समारोह

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। विश्व की सबसे बड़ी स्वयं सेवी संस्था लायंस इंटरनेशनल की स्थानीय इकाई लायंस क्लब छपरा सारण, रघुशांति एवं लियो क्लब का पदस्थापना समारोह स्थानीय पार्टी क्लब में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि क्लब के जिलापाल गणवंत मालिक, उपजिलापाल लायन संगीता नंदा, पास्ट डिस्ट्रिक्ट गवर्नर प्रकाश नंदा एवं डा एस के पांडे ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर लायंस क्लब के जिलापाल के द्वारा गुदरी स्थित पंचमंदिर में पौधारोपण, राजेंद्र कॉलेज चबूतरा, वरिष्ठ नागरिक केंद्र में दो चबूतरा का उद्घाटन किया गया। मौके पर जिलापाल ने कहा कि छपरा की धरती हमेशा से ऐतिहासिक रही है और आज मुजफ्फरपुर से चलकर यहां आ कर और छपरा क्लब का समाज सेवा के प्रति उत्साह देखकर मैं अभिभूत हूं। उन्होंने बताया कि लायंस क्लब छपरा सारण हमेशा से डा एस के पांडे जी के नेतृत्व में छपरा में एक से बढ़कर एक सेवा कार्य करते रहा है। उपजिलापाल संगीता नंदा ने नए सदस्यों को शपथ दिलाई वहीं पास्ट डिस्ट्रिक्ट गवर्नर प्रकाश नंदा जी ने नई टीम को पदस्थापित किया ।

श्रीमद् भागवत कथा कलश यात्रा से कार्यक्रम का हुआ शुभारंभ

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। स्थानीय काठिया बाबा का मंदिर साहेबगंज सोनार पट्टी से कलश यात्रा का शुभारंभ हुआ जो शिव मंदिर साहिबगंज चौक भारत मिलाप चौक सरकारी बाजार मौना चौक मौना नीम हनुमान मंदिर,मेवालाल चौक कटहरी बाग हनुमान मंदिर होकर नारायण पैलेस में पहुंची । आगे आगे घोड़ा बैंड बाजा डंका ढोल ताशा चल रहे थे वही काशी से आए हुए कलाकार झांकियां प्रस्तुत कर रहे थे हजारों की संख्या में महिलाएं पुरुष बच्चे ने भाग लिया पूरा शहर राधे राधे श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारी से भक्ति में हो गया में । मुख्य जजमान बने वीरेंद्र ब्याहूत शंकर टी छपरा। शोभा यात्रा के संचालन में मुख्य रूप से वैश्य महासभा अध्यक्ष सुपन बिहारी, महापौर लक्ष्मी नारायण गुप्ता, अरुण पुरोहित धर्म प्रचारक , समाजसेवी धर्मेंद्र शाह, पूर्व मेयर राखी गुप्ता,उपमेयर रागिनी गुप्ता धर्मनाथ पिंटू , जया गुप्ता ,वीरेंद्र प्रसाद ब्याहुत, राजेंद्र प्रसाद ब्याहुत गंगोत्री प्रसाद अधिवक्ता राजेश डाबर,सुधाकर प्रसाद विक्की ,संजय जी, रमाशंकर जी ,केदार जी चिछ्श्वेर जी ,सीताराम पांडे ,महेश जी वार्ड पार्षद पप्पू चौहान हजारों हजार की संख्या में महिलाएं पुरुष बच्चों ने भाग लिया अरुण पुरोहित धर्म प्रचारक ने बताया कि सोमवार को संध्या 3:00 बजे से श्रीमद् भागवत कथा का शुभारंभ होगा जो 15 सितंबर तक प्रतिदिन चलेगा 16 सितंबर को हवन एवं भंडारे के संपन्न होगा सभी सनातन धर्मावलंबियों से आग्रह है कि वह समय पर आकर श्रीमद् भागवत कथा का आनंद उठावे

जेपी सेनानियों की बैठक का हुआ आयोजन

प्रात :किरण संवाददाता

दरियापुर।स्थानीय प्रखण्ड मुख्यालय स्थित यमुनाचारी उच्च विद्यालय में जेपी सेनानीयो की एक जिला स्तरीय बैठक का आयोजन किया गया।जिसे संबोधित करते हुए अमनौर विधायक कृष्ण कुमार सिंह उर्फ मंटू सिंह ने कहा की जेपी सेनानी हमारे समाज के महत्वपूर्ण अविभावक हैं।मैं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मिल कर आपकी मांगो को मजबूती के साथ रखने के साथ आपका हक व सम्मान दिलाने की पूरी कोशिश करूंगा।उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री देश, राज्य व समाज की भलाई के लिए लड़ने वालों का सम्मान करते हैं।वही जेपी सेनानियों ने विधायक को अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया।साथ ही अपनी मांगों से संबंधित मुख्यमंत्री के नाम एक ज्ञापन सौंपा।जेपी सेनानियों ने विधायक की प्रशंसा करते हुए कहा कि मुझे आप बहुत भरोसा है। आप साथ हैं तो हमारी समस्या का निदान जरूर होगा।अध्यक्षता संघ के प्रखंड अध्यक्ष गौतम ठाकुर ने की व संचालन प्रदेश अध्यक्ष डॉ अर्जुन प्रसाद सिंह यादव ने किया।गोरखनाथ ओझा,सियाराम सिंह, हाई कोर्ट की अधिवक्ता नीलिमा सिंह,पिंटू मंडल,धनराज राय,तेजनारायण सिंह,रामजी महतो आदि ने संबोधित किया।

नक्सल प्रभावित इलाका बना मेडिकल हब

प्रात :किरण संवाददाता

बगहा। पश्चिमी चंपारण जिला का आदिवासी बहुल क्षेत्र हरनाटांड़ जो कभी नक्सली गतिविधियों के लिए प्रसिद्ध था,आज अस्पतालों के गांव के नाम से मशहूर हो गया है।एक आदिवासी चिकित्सक कृष्णमोहन रॉय से प्रेरणा लेकर दर्जनों युवक-युवतियों ने मेडिकल के क्षेत्र में अपना कैरियर बनाया और आज महज 100 मीटर के दायरे में तकरीबन 20 से 25 निजी क्लीनिक आदिवासियों द्वारा संचालित किया जा रहा है।दरअसल वर्ष 1984 में दरभंगा मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढ़ाई करने वाले कृष्णमोहन रॉय आदिवासी बहुल क्षेत्र के पहले डॉक्टर बने। जिसके बाद उप स्वास्थ्य केंद्र लौकरिया में उनका पदस्थापन हुआ लेकिन साल 1992 में जब उनका स्थानांतरण सीतामढ़ी हुआ तो पारिवारिक मजबूरियों की वजह से उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी छोड़ने का फैसला किया। उन्होंने हरनाटांड़ में अपना निजी क्लीनिक स्थाई तौर पर खोल लिया।काफी संघर्ष के बाद डॉक्टर कृष्ण मोहन रॉय की ऐसी पहचान बनी की बिहार,उत्तर प्रदेश और नेपाल के तराई क्षेत्रों से भारी संख्या में लोग इलाज के लिए पहुंचने लगे। लिहाजा आदिवासी युवक-युवतियों के लिए डॉक्टर के एम रॉय आइकन बन गए।नतीजा यह हुआ की आज आदिवासी समुदाय में 40 से 50 डॉक्टर हैं,जिसमें से हरनाटांड़ में 20 से 25 ने अपना निजी क्लीनिक खोल लिया है। यही वजह है कि यह इलाका अब मेडिकल हब के रूप में मशहूर हो गया है।बतातें चलें कि डॉ कृष्णमोहन रॉय के राजनीति में आने की घोषणा से राजनीतिक हलकों में हलचल मच गई है। डॉ कृष्णमोहन रॉय ने बताया कि जनसेवा की भावना से मौका मिला तो धर्म जाती से ऊपर उठकर देश सेवा करूँगा।मेरी शुरूआती पढ़ाई क्रिश्चन स्कूल में हुई है। जात धर्म नहीं सेवा भाव मायने रखता है। देश सेवा से जुड़कर जनसेवा की मुहिम को बड़े स्तर पर ले जाने की हमारी कोशिश रहेगी।

आधे से अधिक है बंद शहर में लगा रंगीन लाईट

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा । नगर निगम प्रशासन द्वारा शहर में पोल पर लगाया गया रंगीन लाईटिंग आधे से अधिक कई महीनो से नहीं जल रहा है । नगर निगम प्रशासन बेखबर है, इसका पता रात होने पर ही चल पाता है कि कितना लाईट जल रहा है,और कितना नहीं जल रहा है । बता दें पूर्व महापौर राखी गुप्ता द्वारा शहर को जगमग करने के उद्देश्य से शहर के महत्वपूर्ण मुख्य पथ एवं साढ़ा ढाला ओवर ब्रिज के सभी पोल पर रंगीन लाईट लगाया गया था । वायर टाईप का लगा रंगीन लाईट पोल पर इस तरह लगा है,कि नीचे से लेकर ऊपर तक पूरा पोल कभर है । रात्रि में रंगीन लाईट जलने पर एक अलग ही लुक दिखता है । जानकारों का मानना है कि सरकार द्वारा राशि तो खर्च कर दी जाती है, लेकिन उसकी देखभाल नहीं होने से धीरे-धीरे कम समय में ही अपनी अस्तित्व खो देता है ' ठीक यही हाल है नगर निगम प्रशासन द्वारा शहर में लगाया गया रंगीन लाईट व्यवस्था की ' कई महीनो से नगर निगम प्रशासन द्वारा पोल पर लगाया गया रंगीन लाईट नहीं जल रहा है ' आश्चर्य की बात तो यह है कि कोई भी जनप्रतिनिधि इस दिशा में आवाज तक नहीं उठाया । हालांकि जिला प्रशासन के अधिकारीगण की गाड़ियां डाक बंगला रोड, थाना चौक एवं साढ़ा ढाला रोड होकर अक्सर गुजरती रहती है, लेकिन उनका भी ध्यान इस और नहीं जा पाता है । फलस्वरूप शहर को जगमग करने का निगम का प्रयास असफल होते दिख रहा है । इस संबंध में बुद्धिजीवियों का मानना है कि निगम प्रशासन द्वारा शहर में लाईटिंग व्यवस्था पर खर्च करने के बाद भी कम अवधि में लाईट खराब होना दुर्भाग्यपूर्ण है । निगम प्रशासन सहित खास कर जिलाधिकारी को इस दिशा में ठोस पहल करने की आवश्यकता है । ताकि शहर में बंद पड़े लाईटिंग व्यवस्था चालू हो सके ।

सारण का बेटा बना लेफ्टिनेंट

प्रात :किरण संवाददाता

माँझी। माँझी प्रखंड क्षेत्र के चेंफुल गाँव निवासी अरुण प्रकाश एवम प्रतिभा सिंह के पुत्र आकाश कुमार ने भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट बनकर सारण का नाम रौशन किया है। आकाश के पिता अरूण प्रकाश उर्फ दीपक कुमार सिंह भारतीय वायुसेना में वारंट अफसर हैं। आकाश की इस उपलब्धि पर क्षेत्र के लोगों में खुशी की लहर है। आकाश की पढाई लिखाई वायुसेना के स्कूल से हुई है। तत्पश्चात उन्होंने इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय दिल्ली से ग्रेजुएशन तथा एलएलबी की डीग्री हासिल की है। सेना में उनका चयन सीडीएस के माध्यम से हुआ।

अफसर प्रशिक्षण अकादमी चेन्नई में एक साल की कठिन ट्रेनिंग के बाद लेफ्टिनेंट बन कर उन्होंने माता-पिता के साथ साथ जिले को गौरवान्वित किया है। शनिवार को चेन्नई में आयोजित पासिंग आउट परेड के मौके पर उनके पिता अरूण प्रकाश,माता प्रतिभा सिंह, भाई आदर्श सिंह तथा बुआ अरूणा सिंह उपस्थित थे।

यात्रियों की सेवा के प्रति समर्पित है रेल कर्मी व पदाधिकारी

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। यात्रियों की संतुष्टि को लक्ष्य कर वाराणसी मंडल भरतीय रेल के साथ साथ अपने सम्मानित उपभोक्ताओं को बेहतर यात्रा सुविधा उपलब्ध करा रहा है। स्टेशनों अथवा ट्रेनों में यात्रियों को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसका पूरा ध्यान रखा जाता है। स्टेशन अथवा यात्रा के दौरान रेल उपभोक्ताओं को किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े, इसके लिये रेल प्रशासन 24 घंटे सहायता के लिये मुस्तैद रहती है। ह्वारेल मददह्य ऐप, हेल्प लाइन नम्बर-139, एस.एम. एस एवं वेब के माध्यम से प्राप्त परिवादों का समय से गुणवत्तापूर्ण निस्तारण किया जा रहा है। इसी क्रम में आज 8 सितम्बर को प्रातः 06:30 बजे गाड़ी सं-02569 दरभंगा-नई दिल्ली क्लोन स्पेशल गाड़ी के वातानुकूलित इकोनॉमी

तृतीय श्रेणी के कोच में बर्थ सं 72 पर यात्रा कर रही एक महिला द्वारा रेल मदद के माध्यम से अपने छोटे बच्चे को फिड कराने के लिए दूध उपलब्ध कराने की मांग की। यह सूचना उक्त गाड़ी में कोई पैंट्री कार नहीं होने के करण गाड़ी के छपरा पहुंचने के पूर्व रेल मदद के माध्यम से वाराणसी मंडल के कमर्शियल कंट्रोल ओम कुमार को बताया गया। श्री कुमार ने छपरा स्टेशन पर तैनात टिकट कलेक्टर राहुल कुमार को इस बाबत सूचित किया जिसके उपरांत राहुल ने समय से पहले एक बोतल गर्म दूध की व्यवस्था की और गाड़ी के छपरा पहुंचते ही महिला यात्री को दूध पहुंचाया।

महिला यात्री ने रेलवे द्वारा मदद की गुहार पर त्वरित कार्यवाही के लिए आभार प्रकट किया और रेल कर्मचारियों को धन्यवाद किया।

पूर्वोत्तर रेलवे के वाराणसी मंडल द्वारा वर्तमान वित्तीय वर्ष में अब तक 7851 यात्रियों की ह्वारेल मददह्य के माध्यम से प्राप्त माँग पर मदद कर उन्हें बेहतर यात्रा सुविधा उपलब्ध कराई गई। इसी प्रकार अन्य प्रकार की भी मदद पहुँचाई गई। इस आशय की जानकारी जनसंपर्क पदाधिकारी अशोक कुमार ने दी।

25 दिन के दुधमुही बच्ची के हत्या कांड में मां गिरफ्तार

प्रात :किरण संवाददाता

तरैया । थाना क्षेत्र के माधोपुर पंचायत के बड़ा माधोपुर गांव में सोनू कुमार राय के 25 दिन के दुधमुही बच्ची सिमरन कुमारी 04 सितंबर को घर के आंगन से गायब होने के एक दिन बाद उसी घर से चावल के ड्रम से बच्ची का शव बरामद हुआ था।इस संबंध में पुलिस ने घर के सात लोगो को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही थी।तरैया थाना कांड सं0-360/24 दिनांक- 05.09.24, धारा-137 (2)/140 (3) बी0एन0एस० दर्ज कर गुमशुदा की तलाश हेतु तरैया पुलिस टीम द्वारा अग्रतर कार्रवाई की जा रही थी। कांड के अनुसंधान एवं जाँच के क्रम में यह बात प्रकाश में आई कि गुमशुदा बच्ची की हत्या उसकी माँ के द्वारा ही किया गया तथा उसके शव को चावल के ड्रम में रख दिया गया।पूछताछ के क्रम में बच्ची के मां नीरू देवी ने बताया कि बच्ची का जन्म सात माह में ही हो गया था।जिससे बच्ची हमेशा बीमार व अस्वस्थ रहती थी।जिससे वह काफी परेशान हो कर उसने अपनी ही बच्ची की हत्या कर दी।इस संबंध में पुलिस ने अपने ही बच्ची के हत्या के आरोप में नीरू कुमारी को जेल भेज दिया

ट्रैक्टर ने दुकान में मारी टक्कर, दुकानदार की मौत

प्रात :किरण संवाददाता

रिविलगंज। नगर पंचायत क्षेत्र के गोदना मोड़ पर रविवार की सुबह अनियंत्रित ट्रैक्टर ने दुकान में टक्कर मारी, दुकान की सफाई कर रहे दुकानदार ट्रैक्टर की चपेट में आने से मौत हो गई। टक्कर मारकर अनियंत्रित ट्रैक्टर मुख्य सड़क पर पलट गई। जिसके कारण छः घंटे तक छपरा -मांझी मुख्य सड़क पर आवागमन बाधित रहा। मृत दुकानदार नगर पंचायत क्षेत्र के वार्ड संख्या 15 निवासी जगन्नाथ साह का 30 वर्षीय पुत्र अंगद कुमार साह बताया जाता है।घटना के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार सुबह छः बजे गोदना मोड़ स्थित अपने मिठाई और चाट समोसे की दुकान खोलकर दुकानदार अंगद कुमार साह सफाई कर रहे थे कि तेज गति से आ रही ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर दुकान में टक्कर मारी और ट्रैक्टर के चपेट में दुकानदार आकर गम्भीर रूप से घायल हो गए। अनियंत्रित ट्रैक्टर दुकान के पास ही पलट गई लेकिन नाबालिग चालक बाल बाल बच गया। स्थानीय लोगों ने नाबालिग ट्रैक्टर चालक को पकड़ लिया और गम्भीर रूप से घायल दुकानदार को आनन-फानन में परिजन छपरा सदर अस्पताल ले कर गए।सदर अस्पताल में घायल दुकानदार को चिकित्सक ने मृत घोषित कर दिया। दुकानदार की मौत की खबर मिलते ही घर में कोहराम मच गया वहीं आक्रोशित लोगों ने छपरा - मांझी मुख्य सड़क पर गोदना मोड़ पर जाम कर दिया। वैसे भी ट्रैक्टर पलटने से पूरी सड़क पर आवागमन बाधित हो गया था। घटना की सूचना मिलने पर थानाध्यक्ष सुभाष कुमार पासवान पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और लोगों को समझाने का प्रयास किया लेकिन आक्रोशित लोगों ने नाबालिग ट्रैक्टर चालक के मालिक से मृतक के परिवार को मुवाजमा देने की मांग कर रहे थे। मृत दुकानदार की शव पोस्टमार्टम के बाद आने पर शव को मुख्य सड़क पर रखकर विरोध प्रदर्शन किया गया। छः घंटे तक सड़क जाम के बाद मुख्यालय से एसडीपीओ राज किशोर सिंह एवं सदर एसडीओ संजय कुमार राय जिला पुलिस बल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और परिजनों को समझा बुझाकर सड़क जाम हटवाया। नाबालिग ट्रैक्टर चालक एवं अन्य नाबालिग चालकों पर प्रशासन द्वारा रोक लगाने की मांग। नाबालिग ट्रैक्टर चालक द्वारा गोदना मोड़ निवासी दुकानदार की अनियंत्रित ट्रैक्टर के चपेट में आने से अंगद कुमार साह की मौत के बाद सड़क जाम कर रहे आक्रोशित लोगों ने प्रशासन से नाबालिग चालकों पर रोक लगाने की मांग किया। लोगों ने बताया कि नाबालिग ट्रैक्टर चालक तेज आवाज में अश्लील लाउडस्पीकर बजाते गाड़ी चलाया जाता है और प्रशासन मुक दर्शक बनी हुई है। नाबालिग चालकों द्वारा ही आएं दिनों सड़क दुघर्टना हो रही है और लोगों की जान जा रही है, इस पर प्रशासन द्वारा रोक लगाई जाए। कुछ आक्रोशित लोगों ने प्रशासन पर ही आरोप लगाया कि ट्रैक्टर द्वारा बालू ढुलाई पर स्थानीय पुलिस द्वारा उगाही किया जाता है और नाबालिग चालकों पर रोक नहीं लगाई गई है। वहीं कुछ लोगों ने दलालों के माध्यम से स्थानीय पुलिस की मिली भगत से ट्रैक्टर मालिक अवैध ढुलाई कर रहे हैं और नाबालिग चालकों से बेरोकटोक ट्रैक्टर चलवा रहे हैं। गोदना मोड़ पर घरों की पानी मुख्य सड़क पर गिरने से रोज दर्जन भर मोटरसाइकिल सवार एवं टोटों पलटने से लोग घायल हो रहें हैं। गोदना मोड़ पर वार्ड संख्या 12-15 के दर्जनों घरों की पानी सड़क पर गिरता है। घरों की पानी सड़क पर गिरने से जहां सड़क जड़जड़ हो गया है वहीं प्रति दिन मोटरसाइकिल सवार एवं टेम्पो और टोटों पलटने से दर्जनों लोग घायल होते हैं लेकिन नगर पंचायत प्रशासन कान में तेल डालकर गहरी नींद सो रहा है।आज गोदना मोड़ पर अनियंत्रित ट्रैक्टर द्वारा दुकान में धक्का और उसकी चपेट में आने से दुकानदार की मौत की जिम्मेदारी लोगों ने नगर पंचायत प्रशासन पर लगाया। जहां ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर पलट गई है वहां प्रतिदिन लोग गिरकर घायल होते हैं लेकिन नगर पंचायत प्रशासन टैक्स लेती है लेकिन लोगों को सुविधा उपलब्ध कराने में नाकाबिल है ऐसा लोगों ने आरोप लगाया। कई समाचार पत्रों में गोदना मोड़ पर घरों की पानी मुख्य सड़क पर गिरने से लोगों की घायल होने की आवाज प्रमुखता से कई बार प्रकाशित किया लेकिन उसके बाद भी नगर पंचायत प्रशासन कुंभ करणी निंद से नहीं जागी।आज के नौजवान दुकानदार की मौत के कारण भी लोग नगर पंचायत प्रशासन पर ही लगा रहे हैं।

सारण जिला एथलेटिक संघ का हुआ पुनर्गठन

प्रात :किरण संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण जिला एथलेटिक्स के सदस्य पूर्व खिलाड़ी एवं खेल प्रेमियों की बैठक राजेंद्र स्टेडियम छपरा में आहूत की गई ।एथलेटिक संघ के इस आम सभा में 300 से अधिक लोगों ने भाग लिया। बैठक की अध्यक्षता संघ के आजीवन सदस्य डॉ सुरेश प्रसाद सिंह ने किया। बैठक में उपस्थित दर्जनों पूर्व संघीय पदाधिकारी एवं सैकड़ो राष्ट्रीय खिलाड़ी तथा बड़े संख्या में उन खिलाड़ियों ने जिला में एथलेटिक्स के विकास के लिए सारण जिला एथलेटिक संघ के पुनर्गठन का प्रस्ताव रखा ।सभा की सहमति के बाद सर्वसम्मति से संघ का पुनर्गठन किया गया । संरक्षक डॉ. एच के वर्मा डॉ. सुरेश प्रसाद सिंह डॉ. हरेंद्र सिंह रितेश सिंह मुखिया ,संघ के अध्यक्ष पद पर संजय कुमार सिंह सचिव मुकेश कुमार यादव राष्ट्रीय खिलाड़ी कोषाध्यक्ष मेराज खान उपाध्यक्ष कृष्ण मोहन सिंह बनियापुर निर्मला ठाकुर छपरा सच्चिदानंद ओझा मढ़ौरा सभापति बैठा छपरा अशोक कुमार सिंह दिघवारा संयुक्त सचिव हरेंद्र दास छपरा राष्ट्रीय एथलीट संजय कुमार सिंह एनआईएस कोच शक्ति सिंह राष्ट्रीय एथलीट अभय प्रकाश राष्ट्रीय एथलीट सुजीत कुमार कार्यकारिणी सदस्य तरुण कुमार सिंह ,,जाकिर अली ,धनंजय कुमार गोलू ,राजन राय, अवधेश प्रसाद ,किशोर कुणाल, सौरभ कुमार ,अशोक कुमार राय, किशोर कुमार ,राजेश कुमार, शुभम रामबाबू राय विकी आनंद रितेश कुमार सिंह अमित कुमार सिंह पैरा एथलीट का चुनाव किया गया। बैठक की समाप्ति सारण ओलंपिक संघ के सचिव सभापति बैठा के धन्यवाद ज्ञापन के बाद संपन्न हुआ।

अज्ञात बदमाशों ने घर में चोरी कर समान ले गए

मकेर (सारण) थाना के फुलवरिया गांव से अबसादल हक के घर से रात्रि में अज्ञात चोरों ने चोरी कर घर के सभी बेसकीमती समान चोरी कर भाग गए ।

मकेर थाना में इस घटना की जानकारी से अवगत करवाया रॉबया बेगम ने उन्होंने बताया कि रोज की तरह खाना खाने के बाद सो गए ततपश्चात चोरो ने घर से सामान चोरी कर फरार हो गये, सुबह आँख खुली तो देखा सभी सामान बेतरतीब थे बेसकीमती समान नही है ,पुलिस आवेदन पर प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कवायद शुरू कर दिया है एवम भरोशा जताया है कि खोए हुए समानो की बरामदगी शीघ्र ही कर दी जाएगी।

नवविवाहिता की फंदे लगाकर हत्या,पति सास ससुर ,अन्य नामजद

प्रात :किरण संवाददाता

बनियापुर। स्थानीय थाना क्षेत्र के करही गाव मे एक नव विवाहिता की हत्या शाजिश कर पखे मे फंदा लगा कर कर दी गयी है, जिस घटना मे मृतिका के पिता ने पति सास ससुर व सभी परिजनों को नामजद किया , जिस घटना मे मृतिका के पिता सिवान जिले दरौदा थना के बगौरा निवासी शंभू लाल प्रसाद ने प्राथमिकी मे बताया है कि पुत्री 25 वर्षीय सरोज देवी ग्की शादी हिन्दु रीति रिवाज के साथ वर्ष 2023 मे करही के विकास प्रसाद के साथ की थी,तब से कुछ दिनों बाद दहेज के लिए प्रताड़ित कर रहे थे। जिसके बाद सभी ने मिलाकर तथा साजिश कर उसकी हत्या फासी लगा कर कर दिया,घटना पति सास ससुर सहित अन्य को सभी परिजनों को नामजद किया है। घटना के संबंध मे थानाध्यक्ष ने बताया कि करही मे विकास प्रसाद की पत्नी को घर के ऊपरी मंजिल मे उसकी पत्नी का शव पंखे मे दुप्पटे से लटका हुआ पाया गया था,जिसे पुलिस ने कब्जे मे लेकर उसे पोस्टमाटम के लिए छपरा भेजा गया ।वही मृतिका के सास ससुर का कहना है कि घर मे सोए हुए थे,मध्य रात्रि मे बच्चा के रोने की आवाज पर नींद खुली तो देखा गया की कमरे ने नही है ऊपरी मंजिल पर पंखे से लटकी हुई है,पति अहमदाबाद मे प्राइवेट नौकरी करता है।

बिजली तार टूटने से परेशान उपभोक्ताओं ने किया विरोध प्रदर्शन

प्रात :किरण संवाददाता

मढ़ौरा। ग्रामीण मढ़ौरा नगर पंचायत के वार्ड नंबर 14 और 15 के मोहन बागान के पास बार बार बिजली का तार गलकर गिरने से परेशान शहरी बिजली उपभोक्ताओं ने रविवार को मढ़ौरा खुर्द मोहन बगान के पास बिजली विभाग के खिलाफ अपना विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि पिछले करीब 6 महीने से इन वार्डो के उपभोक्ताओं बिजली को लेकर काफी परेशान है। इस विरोध प्रदर्शन में मुख्य रूप से मिंटू जायसवाल, मनोज साह, पप्पू साह, राजेश राय, प्रणव राय, रामजी राय, कैलाश प्रसाद, मदन प्रसाद, अमन कुमार,राजद नेता विष्णु गुप्ता सहित अन्य दर्जनो लोग शामिल थे।

संक्षिप्त खबरें

दो पक्षों के बीच मारपीट में आधा दर्जन लोग जख्मी

काराकाट (रोहतास) काराकाट थाना क्षेत्र के चौगाई कला गांव में पूर्व के विवाद को लेकर दो पक्षों के बीच हुई मारपीट में आधा दर्जन लोग जख्मी हो गए हैं। इस संबंध में दोनों पक्षों ने काराकाट थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। जिसमें दोनों पक्षों द्वारा कुल नौ लोगों को आरोपी बनाया गया है। चौगाई कला निवासी विद्या सिंह द्वारा दर्ज कराई गई प्राथमिकी में कहा गया है कि सुबह में जैसे ही वह घर से निकला पूर्व से घात लगाकर बैठे उसके पड़ोसी स्वर्गीय जगा सिंह के पुत्र ददन सिंह, ददन सिंह के पुत्र राजू सिंह तथा सत्रू सिंह ने मुझ पर हमला कर दिया। हो हल्ला सुनकर मेरी पुत्री पूजा कुमारी और भाभी कमला देवी आई तो उसे भी मारपीट कर पूरी तरह जख्मी कर दिया। इस दौरान मेरे पॉकेट से पचास हजार रुपया निकाल लिए। फिर अपने छत पर से मेरे आंगन में फायरिंग करते हुए धमकी दिया कि यदि केश करोगे तो जान से मार देंगे। वहीं दूसरी ओर ददन सिंह द्वारा दर्ज कि सुबह नित्य क्रिया के लिए जा रहा था। जैसे ही विद्या सिंह के घर के पास पहुंचा तो विद्या सिंह गाली गलौज करते हुए मारपीट करने लगा। फिर उसके परिवार के सदस्य आये और सभी लाठी डंडे आदि से मुझे मारने लगे। जिसमें मैं जख्मी हो गया। इस संबंध में थानाध्यक्ष फूलदेव चौधरी ने बताया कि दोनों पक्षों के शिकायत पर अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज कर आगे की कार्रवाई की जा रही है।

गंगा समग्र, किया गया भोजपुर इकाई की बैठक

बहरहा :घांघर मठिया में मठ के मठाधीश्वर आदरणीय स्वामी बैकुंठनाथ के साक्षात्कार एवं मार्गदर्शन में गंगा समग्र, भोजपुर इकाई की बैठक हुई जिसकी, अध्यक्षता गंगा समग्र, भोजपुर के जिला संयोजक देवानंद उपाध्याय, संचालन जिला सह संयोजक शैलेंद्र कुंवर एवं धन्यवाद ज्ञापन मंडल संयोजक आनंद शर्मा ने किया। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण बिहार प्रांत के संयोजक सर्वश्री शंभूनाथ पांडे, विशिष्ट अतिथि जिला सह सर्वश्री संयोजक रामजी तिवारी, शिवरात्रि राम उपस्थित हुए जिनका स्वामी बैकुंठनाथ ने चुनरी से अभिवादन एवं अभिनंदन किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने गंगा मईया की स्वच्छता, निर्मलता एवं अविरलता हेतु जिला इकाई को बहुत से दिशा निर्देश प्रदान किए। कार्यक्रम में पप्पू सिंह, बिरेंद्र सिंह, रामसुरेश सिंह, विश्वनाथ पांडे, सच्चिदानंद तिवारी , भुटेली तिवारी, अमन पांडे एवं महिला गंगाभक्त भी उपस्थित थीं।

अनियंत्रित वाहन पोखर में गिरी, सवार बाल बाल बचे

मशरक। मशरक के लखनपुर में अनियंत्रित चार चक्का कार शनिवार की रात पानी से लबालब पोखर में गिर गई। पोखर में गहरा था और पानी भरा हुआ था। जिसमे कार गहरे पानी में डूब गई। आसपास के ग्रामीणों ने कार को डूबते देख शोर मचाना शुरू किया। जिसपर हल्ला मचाते सभी लोग पानी में घुस कार में सवार सभी को बाहर निकाला। जिससे कार सवार लोगो की जान बची। ग्रामीणों ने बताया कि कार तेजी से जा रही थी अचानक अनियंत्रित होकर पोखर में गिर पड़ी। ग्रामीणों ने बताया कि सवार सभी युवा थें जिन्हें सुरक्षित बाहर निकाला गया यदि थोड़ा सा भी लेट किया जाता तो बड़ी दुर्घटना हो जाती। ग्रामीणों ने ट्रैक्टर की मदद से पोखरें में डूबी कार को भी बाहर निकाला गया।

मशरक में जुटे जिला जनसुराजी, प्रखंड इकाई का हुआ गठन

मशरक। मशरक प्रखण्ड के गोपालबाड़ी गांव में पूर्व जिला परिषद सदस्या पुष्पा सिंह के आवास पर जुटे सारण जिला जनसुराज के नेता। सर्वसम्मति से मशरक प्रखण्ड संगठन इकाई की हुई घोषणा । कार्यक्रम कि अध्यक्षता पुष्पा सिंह और संचालन मुखिया संघ अध्यक्ष अजित सिंह के द्वारा किया गया। जिला कार्यवाहक समिति के सदस्य सह प्रखण्ड मुखिया संघ के अध्यक्ष अजित कुमार सिंह ने अपने संबोधन में बताया कि जन सुराज एक आंदोलन है, सिस्टम परिवर्तन का जिसके संयोजक प्रशांत किशोर जी है। जनसूराज महात्मा गांधी, भीमराव अंबेडकर जैसे महान व्यक्तियों के विचार धारा को लेकर चलने वाली है। प्रखंड अध्यक्ष पद पर संतोष परमार को सर्व सम्मति से चुना गया। निर्णय लिया गया। जदयू छोड़कर आए भोला प्रसाद साह को महासचिव , महिला प्रकोष्ठ अध्यक्ष मालती देवी , किसान मोर्चा अध्यक्ष विजेंद्र तिवारी को, युवा अध्यक्ष रविशंकर सिंह, सोशल मीडिया प्रभारी प्रिंस बाबा, कार्यालय पदाधिकारी जगतानारायण सिंह, उपाध्यक्ष के पद पर बीडीसी दिलीप प्रसाद महतो, दुरगौली पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि सतेंद्र सिंह, किरण सिंह, हरे कृष्णा ठाकुर, मुख्य प्रवक्ता के पद पर अंबेडकर लोक सेवा संघ के सदस्य रामनरेश राम को, प्रवक्ता के पद पर असलम आलम, राजद से त्याग पत्र देकर जनसूराज में सम्मिलित हुए अनुपम यादव को प्रखंड संयोजक के पद पर मनोनीत किया गया।

शिवसैनिकों ने धूमधाम से किया गणपति बप्पा का आगमन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शिवसेना यूबीटी भोजपुर द्वारा हर वर्ष के भाँति इस वर्ष भी गणेश चतुर्थी महोत्सव का आयोजन रमना मैदान मानस मन्दिर के समीप किया जा रहा है, ज्ञात हो भोजपुर में गणेश पूजा आयोजन का शुरुवात शिवसेना यूबीटी द्वारा ही किया गया था। इस वर्ष गणेश चतुर्थी महोत्सव में 8 सितंबर को सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया है जिसमे मुख्य रूप से भोजपुरी के प्रसिद्ध गायक गोलू राजा का आगमन होने जा रहा है।

करीब 15 फिट के गणपति बप्पा की प्रतिमा आकर्षण का मुख्य केंद्र बन रही है जिसके दर्शन के लिए दूर दूर से भक्त आ रहे है। बप्पा की पूजा अर्चना आरा के रमना मैदान में चलेगी इसके बाद 9 सितंबर को गणपति बप्पा का विसर्जन कार्यक्रम रखा गया है ।। इस पूजा आयोजन के मुख्य संचालक एवं शिवसेना प्रदेश संगठक विक्रमादित्य सिंह ने बताया कि - " गणेश चतुर्थी का यह पूजा समस्त बिहार का सबसे बड़े स्तर पर पूजा है इसमें शहर एवं आसपास के लोग बड़े पैमाने पर दर्शन करने आते है साथ ही साथ संगठन के बड़े पदाधिकारी भी अतिथि के तौर पर बप्पा के दर्शन करने हेतु आते है हिन्दू हित के लिए शिवसेना शहर में विगत 20 वर्षो से कार्यरत है एवं आगे भी रहेगी " ।। इसके अलावा शिवसेना के जिला प्रमुख शंभु सिंह ने कहा - " हर वर्ष शिवसेना आरा की तरफ से गणेश पूजा का आयोजन किया जाता है इस पूजा में बहुत सारे सनातनी लोग शामिल होते है शिवसेना द्वारा आयोजित की जाने वाली यह पूजा काफी प्रसिद्ध मानी जाती है इस बार के पूजा के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया जायेगा जिसको लेकर सभी भोजपुर जिलेवासियों में काफी उत्साह है " । इसके आलवा इस गणेश पूजा के मुख्य संचालक में गोविंदा ,सच्चितानंद पाठक ,संजय सिंह , सत्यवीर ,वोल्टेज ,बिंदास बाबा ,सिद्धार्थ ,अभिजीत दत्ता ,कुंदन ,धर्मेन्द्र आदि शामिल थे ।

बजबजाती नालियों व जल-जमाव के खिलाफ नगर निगम के समक्ष प्रदर्शन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भाकपा माले राज्य कमिटी सदस्य व आरा विधानसभा के पूर्व प्रत्याशी क्यामुद्दीन अंसारी ने अपने एक प्रेस ब्यान में बतलाए कि अनाईठ में एक आम नारिकों की बैठक सम्पन्न हुई. यह बैठक अनाईठ मिल्की वार्ड 42 मे कयी वर्षों से गंदी बजबजाते जल-जमाव और टूटी-फूटी उखड़ी सड़कों के सवाल पर आयोजित हुआ. इस बैठक मे निर्णय लिया गया कि 12 सितंबर 2024 को इन्हीं सवालों पर नगर आयुक्त आरा के समक्ष धरना दिया जाएगा. यह धरना नागरिक संघर्ष मोर्चा के बैनर तले दिया जाएगा.

बैठक को संबोधित करते हुए भाकपा माले राज्य कमिटी सदस्य व इंसाफ मंच के राज्य सचिव क्यामुद्दीन अंसारी ने कहा कि लगातार मुहल्ला वासियों के साथ लेकर हमने नगर आयुक्त और जिला पदाधिकारी से बात करने के बाद भी तीन वर्षों से मुख्य सड़क पर लगा जल-जमाव की समस्या दूर नहीं हो सकी इसलिए इस मुहल्ले की जनता आक्रोशित है. हमे आंदोलन का रास्ता अखतियार करना पड़ रहा है आइए हम सभी मुहल्ला वासियों को नगर आयुक्त के समक्ष होने वाले 12 सितंबर के धरना मे पूरी ताकत लगा देना है.

भाकपा माले नेता क्यामुद्दीन अंसारी ने कहा कि पिछले साल छठ पूजा के समय ही आर.सी.डी.को टेन्डर दिया गया था, आर.सी.डी.ने काम भी शुरू कर एक वर्ष गुजर जाने के बाद भी जल-जमाव की समस्या ब दस्तूर बनी हुई है अब हमारे सामने आंदोलन ही एक रास्ता है.माले नेता ने भाजपा विधायक अमरेन्द्र प्रताप सिंह और भाजपाई मेयर इन्दु देवी पर आरोप लगाया की जानबूझकर जल निकासी मे विलम्ब किया गया है.क्यामुद्दीन अंसारी ने आह्वान किया की इस वार्ड के सभी नागरिक बेहतर जिन्दगी तथा जल-जमाव, टुटी-फुटी उखड़ी सड़कों व बजबजाती नालियों के सवाल पर होने वाले धरना मे भारी तादाद मे भाग लें. बैठक मे शामिल प्रमुख लोगों मे क्यामुद्दीन अंसारी, मो.मस्कुर उर्फ झलासी जी,हाजी जलालुद्दीन अंसारी, वार्ड पार्षद प्रतिनिधि भीम साह,प्रोफेसर मंजूर अली,मंसुर आलम,शहाबुद्दीन, तनवीर आलम,,मुन्ना अंसारी,अहमद साहब थे।

पंचतत्व में विलीन हुए पत्रकार रजनीश

आरा। रंगकर्म से पत्रकारिता की दुनिया में कदम रख ख्याति प्राप्त करने वाले जिले के वरिष्ठ पत्रकार रामाकांत त्रिपाठी उर्फ रजनीश त्रिपाठी आज पंचतत्व में विलीन हो गए। समकालीन तापमान से पत्रकारिता की शुरूआत करने वाले दैनिक अखबार आज के प्रभारी रजनीश त्रिपाठी को आज जिले के पत्रकारों ,रंगकर्मियों एवं राजनेताओं द्वारा अश्रुपूर्ण नेत्रों से अंतिम बिदाई दी गई।

कुछ दिनो से अस्वस्थ चल रहे पत्रकार रजनीश का पटना के पीएमसीएच में इलाज के दौरान निधन हो गया था। भोजपुर प्रेस क्लब के संस्थापक अध्यक्ष पत्रकार रजनीश का शव उनके पैतृक निवास स्थानीय जेल रोड के चारखंबा गली में आते ही जिले भर के सभी पत्रकार ,रंगकर्मी एवं राजनेताओं ने उनके निवास पहुंच भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके शव यात्रा में शामिल हो गंगी मुक्ति धाम पहुंचे जहां दिवंगत आत्मा की चीर शांति हेतु 2 मिनट का मौन रख श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। जिसमे स्थानीय सांसद सुदामा प्रसाद भी शामिल हुए। इस दौरान सांसद ने भावपूर्ण शब्दो में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पत्रकार रजनीश के रंगकर्म एवं पत्रकारिता जगत में उनकी उपलब्धियों पर विस्तृत चर्चा करते हुए उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला।

पत्रकार रजनीश को उनके इकलौते पुत्र ने नम आंखों से मुखाग्नि दी। अंत्येष्टि के दौरान मुक्ति धाम पर उनके परिजनों के अलावा जिले के तमाम पत्रकारों में मुख्य रूप से बिहार श्रमजीवी पत्रकार यूनियन के जिला अध्यक्ष सह भिखारी ठाकुर सामाजिक शोध संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष नरेंद्र सिंह,वरिष्ठ पत्रकार सुधीर मिश्रा,दैनिक भास्कर के ब्यूरो चीफ राकेश कुमार सिंह, आज तक के सोनू कुमार, हिंदुस्तान के पंकज सुधांशु,प्रभात खबर के छायाकार दीना मिश्रा,राष्ट्रीय सहारा के कृष्ण कुमार,दैनिक जागरण से रंगकर्मी व पत्रकार शमशाद प्रेम, फोटोग्राफर समीर अख्तर,निक्की, डीएनटीवी के हेड गौतम कुमार,मुकेश सिंह, संजय श्रीवास्तव,नेहा गुप्ता,पत्रकार व रंगकर्मी डब्लू कुमार,अजय सिन्हा,विजय शंकर ओझा, रंगकर्मियों में अंबुज आकाश,सोनू कुमार,अनिल सिंह, गायक कमलेश व्यास राजनेता में स्थानीय सांसद सुदामा प्रसाद,माले जिला कार्यालय सचिव दिलराज प्रीतम,महापौर प्रतिनिधि आलोक रंजन,जदयू नेता विश्वनाथ प्रताप सिंह,जदयू अति पिछड़ा प्रकोष्ठ के राजेंद्र सिंह चंद्रवंशी आदि नेताओं सहित,अधिवक्ता नित्या नंद राय,ओमप्रकाश सिंह , डॉ एस के विष्णु के अलावा सैकड़ों की संख्या में उनके करीबी शामिल थे।

चाचा ने भतीजे का किया अपहरण पुलिस ने आरोपी को दबोचा

मोहनियां (कैमूर) बच्चा अपहरण कांड का पुलिस ने सफल उदभेदन कर लिया हैं जिसकी जानकारी मोहनियां अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी ने प्रेस वार्ता कर दिया। शुक्रवार 6 सितंबर को नुआंव थाना में अंकिता कुमारी, पति रविशंकर रजक, गांव उसरा थाना-नावानगर, जिला-बक्सर के द्वारा अपने बच्चे के अपहरण की प्राथमिकी दर्ज करायी गयी थी। जिसमें उनके द्वारा बताया गया कि वह कुछ दिन पहले अपने माता-पिता के घर नुआंव थाना अंतर्गत बढढा.गांव आई हुई थी। 06 सितंबर 2024 को करीब सवा दो बजे मेरा पुत्र शिवांश कुमार, उम्र-करीब डेढ़ वर्ष को राधेश्याम नाम का व्यक्ति चॉकलेट देने के बहाने से लेकर भाग गया। इस घटना के संबंध में रामगढ़ थाना मे प्राथमिकी दर्ज की गयी। कांड की गंभीरता को देखते हुए पुलिस द्वारा त्वरित कार्रवाई करते हुए लगातार छापामारी एवं तकनीकी अनुसंधान करते हुए टावर लोकेशन के आधार पर चार घण्टे के अंदर अपहृत ,शिवांश कुमार, उम्र करीब डेढ़ वर्ष को सकुशल बरामद किया गया एवं अभियुक्त बक्सर जिला के नवानगर थाना अंतर्गत उसरा गांव निवासी भोला रजक के पुत्र राधेश्याम राम को बक्सर से गिरफ्तार किया गया। पुलिस मामले की जांच कर आगे की कार्रवाई कर रही है।

तेज रफ्तार बाइक डिवाइडर से टकराई, जख्मी युवकों से देसी कट्टा बरामद

प्रात : किरण संवाददाता

दुर्गावती (कैमूर) राष्ट्रीय राजमार्ग पर कर्मनाशा बाजार से पूर्व चिपली गांव के समीप तेज रफ्तार से आ रही एक बाइक पर सवार दो युवक डिवाइडर से टकरा घायल हो गए। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने इसकी सूचना दुर्गावती पुलिस को दी। जिसकी सूचना मिलते ही गस्ती में पेट्रोलिंग कर रही पुलिस ने तत्काल घटनास्थल पर पहुंच दोनों घायलों को इलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र दुर्गावती भेज दिया। वही पुलिस ने पता ढूंढने के लिए बाइक को सर्च किया तो बाइक से पुलिस ने एक देसी कट्टा को बरामद किया। जहां से तत्काल बाइक और कट्टा के साथ बाइक दोनों जख्मी युवकों को पुलिस ने स्थानीय थाना लाकर पूछताछ कर रही है। जो गंभीर रूप से घायल रणधीर कुमार सिंह,पिता रमाकांत सिंह को सिंह बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया है। वही साधारण रूप से घायल सोनू कुमार सिंह उर्फ पप्पू सिंह दोनों थाना क्षेत्र के खमीदौरा गांव निवासी को गिरफ्तार कर पुलिस अभिरक्षा में रखा गया है। इस संबंध में थाना प्रभारी संजीव मुर्मू ने बताया दोनों का अपराधिक इतिहास है। जिसकी कुंडली खंगाली जा रही है। इन दोनों को चंदौली जिला के लूट कांड में तथा मोहनिया के शराब मामले में शामिल होने की जानकारी मिली है जो उस मामले में दोनो जेल जा चुके हैं। इनका दोनो का इतिहास खंधाला जा रहा है। बाकी जांच के बाद ही पता चलेगा किन-किन कांडों में यह दोनो अभियुक्त रहे है और कितनी घटनाओं को लोगों ने अंजाम दिया है।

कांग्रेस बिहार प्रदेश अध्यक्ष बनने पर आशुतोष को लोगों ने दी बधाई

सासाराम (रोहतास) स्थानीय शहर के एक सभागार में कांग्रेस महिला नेत्री संगीता देवी के नेतृत्व में स्वागत अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। उक्त अवसर पर आशुतोष सिंह को किसान राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी बिहार के अध्यक्ष बनने लोगों ने उनका फूल माला पहना गर्मजोशी से स्वागत किया। मौके पर समारोह को संबोधित करते हुए एनसीपी किसान प्रदेश अध्यक्ष आशुतोष सिंह ने कहा कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार के निर्देश पर राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रफुल्ल पटेल के आदेशा अनुसार राष्ट्रीय सचिन सह बिहार पर्यवेक्षक सच्चिदानंद सिंह व राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के मुख्य प्रवक्ता सह प्रदेश उपाध्यक्ष बिहार द्वारा मुझे किसान प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष बनाया जाना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। जिसको लेकर पार्टी के सभी पदाधिकारियों का उन्होंने आभार व्यक्त किया। साथ ही बताया कि सासाराम के कार्यकताओं के बल पर ही मैं आज बिहार प्रदेश का प्रदेश अध्यक्ष बना पाया हूं। जो पार्टी मजबूती के लिए पूरे बिहार में पार्टी संगठन को मजबूत करने में कोई कसर नही छोड़ेंगे। साथ ही किसानों का हक दिलाने के लिए आंदोलन में पीछे नहीं हटेंगे।

सैकड़ो की संख्या में मरीजों को दिया गया निःशुल्क परामर्श

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। शहर के विष्णु नगर जेड चौक के समीप रविवार को एडवांस फिजियोथेरेपी एंड रिहैबिलिटेशन सेंटर में विश्व फिजियोथेरेपी दिवस के अवसर मररीजो को निःशुल्क परामर्श दिया गया। सैकड़ो की संख्या में मरीजों ने निःशुल्क के परामर्श लेने के बाद अपना-अपना इलाज करवाया। फिजियोथेरेपिस्ट डॉ. दिव्य प्रकाश ने बताया कि विश्व फिजियोथेरेपी दिवस के अवसर पर आज मरीजों को निःशुल्क चिकित्सीय परामर्श देकर इलाज किया गया। निःशुल्क परामर्श एवं ईलाज का कार्यक्रम सुबह 7 से 11 बजे तक चला। इस दौरान कमर दर्द, कूल्हे में दर्द, गर्दन दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी में सूजन व दर्द, शरीर में लकवा, घुटने का दर्द, खेल संबंधित मांसपेशियों में चोट, फ्रैक्चर व सर्जरी के बाद अकड़न का इलाज, हाथ व पैरों में झनझनाहट एवं सुन्नपन वाले मरीजो ने निःशुल्क परामर्श लिया। डॉ. दिव्य प्रकाश ने बताया कि यह दवा रहित इलाज है। यहां दर्द से जुड़े एवं लकवा के मरीजों का इलाज हुआ। निःशुल्क परामर्श लेने के बाद मरीजों में काफी खुशी देखने को मिली उन्होंने बताया कि आगे भी मरीज के हितार्थ इस तरह के निःशुल्क परामर्श शिविर लगाए जाएंगे। शिविर को सफल बनाने में विनय कुमार सिंह, कांति सिंह, सत्य प्रकाश, खुशबू, पूजा कुमारी, दक्ष और क्लिनिक स्टाफ आभा, सूरज, रेशमा, आनंद, सांगीता आदि का सराहनीय योग रहा।

चेनारी प्रखंड के आपूर्ति पदाधिकारी पर लगाया भ्रष्टाचार का आरोप

चेनारी (रोहतास) चेनारी प्रखंड अंतर्गत लोधी ग्राम निवासी शिवपूजन तिवारी के पुत्र बिष्णुनन्द तिवारी ने मुख्यमंत्रि, मुख्य सचिव, खाद्यय आपूर्ति मंत्री, प्रधान सचिव खाद्यय आपूर्ति विभाग पटना, राज्य मानवाधिकार आयोग पटना, आयुक्त पटना प्रमंडल पटना, जिला पदाधिकारी रोहतास,अनुमंडलीय लोक शिकायत पादाधिकारी सासाराम को लिखित आवेदन देकर चेनारी प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी शशिकला कुमारी के विरुद्ध जांच उपरांत जनहित व न्याय हित में कार्रवाई किए जाने की मांग की हैं। उन्होंने ने अपने दिए आवेदन में आरोप लगया है कि प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी सुश्री शशिकला कुमारी भ्रष्टाचार में लिप्त रहती है एवं काली कमाई की उगाही में संलिप्त रहती है। आपूर्ति निरीक्षक माह अक्टूबर 2021 में योगदान के उपरांत से ही अनुदानित खाद्यान्न का कालाबाजारी

कुछ जन वितरण प्रणाली विक्रेताओं से मिलकर बड़े पैमाने पर करवा रही हैं कार्डधारियों की शिकायत जैसे नियमित रूप से प्रत्येक माह खाद्यान्न के आपूर्ति नहीं करने, निर्धारित मूल्य एवं मात्रा से खाद्यान्न की आपूर्ति नहीं करने के शिकायत के बावजूद विक्रेताओं के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की जाती है। जन वितरण प्रणाली के विक्रेताओं से प्रधानमंत्री कल्याण योजना तथा मासिक खाद्यान्न आवंटन के केवल में प्रत्येक माह प्रति क्विंटल 30रु की दर से अवैध तरीके से नजराना वसूली किया जाता है। इनके द्वारा जांच के नाम पर प्रति दुकानदार बीस हजार रूपए वसूल किया जाता है। दुकानदारों द्वारा पैसे नहीं दिए जाने पर छापामारी एवं दुकान रद्द करवाने और एफआईआर दर्ज करने की धमकी दी जाती है। इस कारण प्रखंड के सारे विक्रेता क्षुब्ध है। तथा अनुज्ञप्ति रद्द कराए जाने एवं एफआईआर के डर से कोई भी विक्रेता किसी भी वरीय पदाधिकारी से शिकायत नहीं कर पा रहे हैं. जिला पदाधिकारी रोहतास के पत्रांक-10 व 3/1/2022 के माध्यम से सभी जन वितरण प्रणाली के विक्रेताओं का स्टॉक का भौतिक सत्यापन करने हेतु पत्र निर्गत है के आलोक में प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी द्वारा प्रत्येक दुकान से भौतिक सत्यापन के नाम पर प्रति दुकानदार से पांच हजार रुपए वसूल किया जाता है । साथ ही सभी विक्रेताओं को कॉपी खोलने के नाम पर एक हजार लिया जाता है । उक्त शिकायत के बारे में सुश्री शशिकला कुमारी से पूछताछ करने पर उनके द्वारा यह कहा जाता है कि मेरा कोई भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता क्योंकि मेरी पहुंचे मंत्री से लेकर संसद तक है आपूर्ति निरीक्षक के कार्य कलाप के बारे में किसी तरह का शिकायत पत्र वरीय पदाधिकारी को देने के बाद भी कोई जांच नहीं होता है तथा आपूर्ति निरीक्षक के कार्य कलाप में कोई सुधार नहीं है इनके द्वारा प्रखंड के जन वितरण प्रणाली नगर पंचायत के विक्रेता जमुना प्रसाद के पुत्र अजय शाह के द्वारा आपूर्ति निरीक्षक के संरक्षण में काली कमाई अवैध राशि विक्रेताओं से वसूल की जाती है। उपभोक्ताओं के शिकायत के बारे में संपर्क करने पर उनके द्वारा यह कहा जाता है कि मैं अनुसूचित जाति की महिला पदाधिकारी हूं तथा मुझसे जो बहस करेगा तो उसे महिला शारीरिक उत्पीड़न के आरोप तथा हरिजन एक्ट में फंसा दूंगी ।

पत्नी के हत्यारे पति को पुलिस ने भेजा जेल

प्रात : किरण संवाददाता

काराकाट (रोहतास) काराकाट थाना क्षेत्र के हटिया गांव में बीती रात एक विवाहिता की गला दबाकर हत्या कर देने का मामला प्रकाश में आया है। जिसमे पुलिस ने हत्यारोपी पति को हिरासत में लेकर पूछ-ताछ कर जेल भेज दिया। बताया गया की हटिया गांव निवासी वीरेंद्र सिंह उर्फ साधु सिंह के पुत्र अविनाश कुमार सिंह से भोजपुर जिला के पिरो थाना क्षेत्र के ओझवलियां गांव निवासी अशोक कुमार सिंह के 24 वर्षीय पुत्री आरती कुमारी ने पांच वर्ष पहले कोर्ट में शादी कर ली थी । और अपने ससुराल ओझवलिया में अपने पति के साथ रहती थी। जिसके बाद से कुछ दिनों तक उसके माता पिता शादी से नाराज थे । लड़की के पिता ने बताया की उनके मर्जी के बिना उनकी पुत्री ने पांच वर्ष पहले कोर्ट में हटिया गांव निवासी वीरेंद्र सिंह उर्फ साधु सिंह के पुत्र अविनाश कुमार सिंह से शादी कर उनके साथ हटिया गांव में रह रही थी। जिसकी बीते रात ससुराल वालों द्वारा गला दबाकर हत्या कर दिया गया। जिसके बाद ससुराल वालों के विरुद्ध काराकाट थाने में हत्या की प्राथमिकी दर्ज कराई गई हैं। पिता के बयान पर दर्ज प्रथनिकी में कहा गया है की उनके दामाद,ससुर,सास और दामाद के चचेरा भाई द्वारा उनके पुत्री की गला दबा कर हत्या कर दिया गया है। बताया गया की लड़की की शादी पांच वर्ष पहले हुई थी। शादी के एक वर्ष बाद उससे एक लड़की हुई जिसके बाद से ही लड़की के ससुराल वालों द्वारा प्रताड़ित किया जाने लाग ।पिता ने बताया की उनकी लड़की और नतनी की पालन पोषण करने के लिए ससुराल वालों द्वारा पैसा की मांग किया जा रहा था नही देने पर ससुराल वालों ने मिलकर लड़की की गला दबाकर हत्या कर दिया । मृतिका के पिता ने कहा की उनके दामाद दो शादी किया था मेरी बेटी आरती कुमारी उसका दूसरी पत्नी थी । मेरी बेटी की हत्या में उसकी सौतन यानी पहली पत्नी का भी हाथ हैं। थानाध्यक्ष फूलदेव चौधरी ने बताया की हत्या की सूचना मिलते ही पुलिस बल के साथ घटना स्थल पर पहुंच मामले की जांच कर शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सासाराम के सदर अस्पताल भेज दिया गाय । और मृतिका के पिता के बयान के आधार पर प्राथमिकी दर्ज करते हुए हटिया गांव निवासी वीरेंद्र सिंह उर्फ साधु सिंह के पुत्र अविनाश कुमार सिंह को हिरासत में लेकर पूछ-ताछ कर जेल भेज दिया गया।

भोजपुरिया जन मोर्चा, दलित प्रकोष्ठ की ओर से किया गया सेमिनार का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भोजपुरिया जन मोर्चा, दलित प्रकोष्ठ की ओर से शाहपुर पोखरा के पास सेमिनार का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता जिला अध्यक्ष सकील अहमद ने किया एवं संचालन प्रदेश अध्यक्ष दलित प्रकोष्ठ ललन प्रसाद नट ने किया जहाँ मुख्य अतिथि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष भरत सिंह सहयोगी थे एवं धन्यवाद ज्ञापन राष्ट्रीय प्रवक्ता गोरखनाथ अकेला ने किया।

सेमिनार को सम्बोधित करते हुवे प्रवक्ता गोरखनाथ अकेला ने कहा कि = आजादी के 78 वा वर्षगाठ पूरा देश मना चूका है इतने लम्बे समय के बाद आज करोड़ो गरीब दलित पीछड़े ऐसे है जिनको रहने के लिए जमीन नहीं है जिस जमीन पर सैकड़ो वर्ष से मकान है उस जमीन को भी सरकार मालिकाना हक नहीं दे रही है यह बिलकुल ना इनसफी है, सरकार को उस जमीन का मालिकाना हक जल्द देना चाहिए, एवं जितने गरीब भूमिहीन रोड के किनारे बसे है एवं जो लोग भूमिहिन है उसको सरकार के घोसणानुसार तीन डिसमिल जमीन जल्द दिया जाय,एवं दीपक गोयल कमिटी के रिपोर्ट के आधर पर देश के सभी वोटरों को 10000 दस हजार रुपया हर माह दिया जाय,साथ ही 24,12,2024 को पटना गाँधी मैदान मे वोटर अधिकार रैली मे सामिल होने का आह्वान किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष भरत सिंह सहयोगी ने कहा कि बिना बैकल्पिक बेवस्था किये किसी गरीब का मकान न तोड़ी जाय, साथ ही कहा कि बिहार मे अपराध अपहरण बलात्कार बढ़ती जा रही है इस पर सख्ती से रोक लगाई जय,आगे बताया कि 24,दिसंबर 2024 को पटना गाँधी मैदान मे वोटर अधिकार रैली होंगी।

प्रदेश अध्यक्ष ललन प्रसाद नट ने कहा कि = दलितों पर अत्याचार मे बृद्धि हो रही है दबँग लोग कमजोर गरीब एवं खास कर नट समुदाय के लोगो को सताया जा रहा है कही से मार कर भगाया जा रहा है हत्याये हो रही है इस पर रोक लगाई जाय, एवं स्थाई निवास हेतु जमीन जल्द दिया जाय, जिला अध्यक्ष दलित विस्वामित्र ने कहा कि = भोजपुरी भाषा को संबिधान के आठवीं अनुसूची मे सामिल किया जाय, जिससे उक्त भाषा को सम्मान मिल सके, साथ ही सेमिनार मे 11सदस्यों का एक कमिटी बनाई गई, जिसमे मुनि देवी, पनपतिया देवी, सुनील कुमार साह, शम्भु राम, रामनाथ भगत, अशोक कुमार, हसीना खातून, धना कुँअर, चानमुनी देवी, मुनि खातून, को सामिल किया गया, जिसमे मुनि देवी को अध्यक्ष एवं छठ्ठू नट को उपजिलाध्यक्ष बनाया गया, सम्बोधित करने वालों मे कन्हैया प्रसाद, भी मुख्य रूप से सामिल थे।

स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाने लिए बिजली विभाग अधिकारी ने मांगी प्रशासनिक सहयोग

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल बिक्रमगंज के सहायक विद्युत अभियंता राज कुमार के निदेशानुसार कनीय विद्युत अभियंता दावथ,सूर्यपुरा एवं संझौली ने प्रखंड विकास पदाधिकारी को पत्र लिखकर स्मार्ट प्रीपेड मीटर के कार्यों में प्रशासनिक सहयोग की मांग की गयी है। बताते चलें की उपभोक्ताओं के परिसर में डिजिटल अथवा अन्य पूर्व से लगे मीटर को बदलकर स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाने का कार्य प्रक्रिया में है, जिसकी प्रगति काफी धीमी है।

स्मार्ट प्रीपेड मीटर के संदर्भ में केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (मीटर की स्थापना एवं संचालन) अधिनियम 2019 के क्रम में ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार के गजट अधिसूचना दिनांक-17. 08.2021 द्वारा एक समयावधि में सभी केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (मीटर की स्थापना एवं संचालन) के तहत पुराने मीटर को प्रीपेमेंट सुविधा के साथ स्मार्ट मीटर से बदलने के लिए अधिसूचित किया है। आगे बताते चलें की सचिव ऊर्जा विभाग बिहार सरकार का पत्रांक-14 तिथि 14/07/2021 द्वारा स्मार्ट प्री-पेमेंट मीटर को मेसर्स ईडीएफ इंटरनेशनल प्रा. लिमिटेड के माध्यम से शहरी क्षेत्र तथा मेसर्स इंटेलीस्मार्ट इंफ्रास्ट्रक्चर प्रा. लिमिटेड के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के सभी उपभोक्ताओं के यहा लगाने परिवर्तित करने का कार्य किया जा रहा है। जिसका अनुश्रवण राज्य सरकार के शीर्ष स्तर से किया जा रहा है। इसी क्रम में कुछ उपभोक्ताओं द्वारा स्मार्ट मीटर अधिष्ठापन के दौरान अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए मारपीट करने की धमकी दी जाती है, साथ हीं उनलोगों के द्वारा उक्त क्षेत्र के स्थानीय उपभोक्ताओं को भी मारपीट के लिए भड़काते हुए मीटर लगाने का कार्य बन्द करवा दिया जाता है। इससे कार्यरत एजेंसी के कर्मियों में भय व्यापत रहता है।

जिसके कारण स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाने का कार्य की प्रगति लक्ष्य के अनुरूप नहीं है। उपरोक्त के मद्देनजर स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाने एवं परिवर्तित करने के क्रम में कार्य में अवरोध पैदा करने वाले क्षेत्रों में प्रशासनिक सहयोग हेतु पत्राचार किया गया है ताकि भयमुक्त माहौल में केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा निर्धारित समयसीमा तक स्मार्ट प्रीपेड मीटर लगाने एवं परिवर्तित करने के लक्ष्य को पूर्ण किया जा सके।

ज्वलंत समस्याओं को लेकर एडवा कार्यकर्ताओं की बैठक आयोजित

परसा:अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) परसा प्रखण्ड की ओर से प्रखंड के माररं पंचायत सरकार भवन परिसर में जागमणि देवी की अध्यक्षता में ग्रामीणों की एक बैठक आयोजित की गई ।महिलाओं को रोजगार के लिए सरकारी बैंक से ब्याज रहित लोन देने 200 युनिट बिजली बिल फ्री करने, प्रीपेड स्मार्ट मीटर बंद करने, वृद्ध, विधवा, विकलांग को 3000र महिना समाजिक सुरक्षा पेंशन देने, सभी भूमिहीनों को बास के लिए 10 डिसमिल जमीन, महिला हिंसा के विरुद्ध समेत कई मुद्दे पर प्रखण्ड स्तरीय कार्यकर्ता कन्वेंशन आयोजित किया गया। जिसको एडवा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामपरी, जिला की अध्यक्ष गीता सागर, सचिव गायत्री देवी, सज़ू यादव ने संम्बोधित किया ।इस अवसर पर एडवा की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रामपरी ने कहा कि केन्द्र और राज्य सरकार की गलत नितियों के वजह से महिलाओं, किसान मजदूर की हालत खराब हो रहा है। मोदी सरकार महिलाओं को आत्म निर्भर बनाने की बात करते है लेकिन माईक्रोफाईनास कम्पनी से लोन का किस्त चुकाने से परेशान है। इसलिए एडवा मांग करती है कि सरकारी बैंक से महिलाओं को समूह लोन ब्याज रहित दिया जाऐ। हिंसा की घटना पर रोक लगे, 200 युनिट बिजली बिल फ्री करे, भूमिहीनों को बसने के लिए 10 डिसमिल जमीन मिले कार्यक्रम में 100 से अधिक महिलाओं ने भाग ली।

कार्यक्रम में किसान नेता बटेश्वर प्रसाद, शिव शंकर यादव, मजदूर नेता सुभाष मांझी, गौतम प्रदीप, मुखिया प्रतिनिधि आशिफ असलम, प्रो विमल प्रसाद, पैक्स अध्यक्ष लाल बहादुर प्रसाद, पुष्पा, रंजीता,सहित दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद थे।

भूमि सर्वे कागजात को लेकर अंचल कार्यालय में लोगों की बढ़ी हलचल

करगहर (रोहतास)। भूमि सर्वे के पूर्व कागजात तैयार करने में प्रखंड क्षेत्र के किसानों और जमीन मालिकों की भागदौड़ बढ़ गयी है। सरकार की ओर से जमीन मालिकों को निर्धारित प्रपत्र में कागजात जमा करने की ताकीद की गई है। कोई जमीन की रसीट कटवाने को बेताब है तो किसी के दाखिल खारिज का मामला अटका है। बंटवारे की जमीन को लेकर वंशावली भी जरूरतमंदों के लिए टेढ़ी खीर बन गयी है। सरकार स्वघोषित वंशावली मांग रही है. वहीं कर्मी शपथपत्र के साथ वंशावली बनाने को कह रहे हैं। पूर्वज की दस-बीस साल पहले हुई मृत्यु के लिए प्रमाण पत्र हासिल करने को भी स्टाम्प खरीद कर शपथ पत्र बनवाने तक के लिए कतार लगी है। फिलहाल ग्राम सभा के माध्यम से लोगों को इस दिशा में जागरूक किया गया है.ऑनलाइन प्रपत्र भरने की जानकारी दी जा रही है। सर्वे का अहम मकसद सरकारी जमीन को कब्जे से मुक्त कराना और लैंड रिकॉर्ड को पारदर्शी बनाना बताया जा रहा है। आम सभा में लोगों से कहा जा रहा है कि अगर सरकारी जमीन आपके नाम हो गयी या निजी जमीन सरकारी हो गयी हो तो अपने पक्ष में कागजात जमा करें।

आईसी 814- द कंधार हाईजैक सीरीज के लिए कपिल शर्मा ने यूएस टूर किया स्थगित

कपिल शर्मा के कॉमेडी शो में नजर आने वाले राजीव ठाकुर ने हाल ही में आईसी 814– द कंधार हाईजैक सीरीज में अपनी नेगेटिव भूमिका से सभी को प्रभावित किया। हालांकि, जब राजीव ठाकुर ने अनुभव सिन्हा के शो के लिए शूटिंग करने का फैसला किया तो उन्हें शेड्यूलिंग संघर्षों का सामना करना पड़ा, लेकिन कपिल शर्मा ही थे, जो उनकी मदद के लिए आगे आए। अब हाल ही में, अभिनेता ने कॉमेडियन की तारीफों के पुल बांधे हैं। हाल ही में, एक इंटरव्यू में राजीव ठाकुर ने खुलासा किया कि कपिल शर्मा ने वेब सीरीज की शूटिंग के लिए अपना यूएस टूर स्थगित कर दिया है। राजीव ठाकुर ने कपिल का शुक्रिया अदा किया और बताया कि कैसे कॉमेडियन ने उन्हें नेटफ्लिक्स शो करने के लिए प्रेरित किया।

राजीव ने बताया, यह सब कपिल की बदौलत है कि मैं यह शो करने में कामयाब रहा। पिछले साल जून में सीरीज की टीम ने मुझसे तारीखें मांगी थीं, जो हमारे अमेरिका दौरे के लिए पहले से ही उनके पास थीं। यही वजह है कि मैंने मना कर दिया, लेकिन जब कपिल को इस बारे में पता चला, तो उन्होंने मुझे आईसी 814 करने के लिए काफी प्रोत्साहित किया। अभिनेता ने कपिल शर्मा की तारीफ करते हुए आगे कहा, उन्होंने मुझसे कहा, तू सीरीज कर, हम शो को आगे बढ़ाएंगे। इस तरह हमारा शो जुलाई तक के लिए टाल दिया गया। मैंने पहले ही उनसे वादा कर लिया था, इसलिए मैं शो को रिजेक्ट कर देता, लेकिन उन्होंने मुझे आगे बढ़ाया और मैं इसके लिए उनका आभारी हूं। सच्चे दोस्त यही करते हैं, है न? बता दें कि राजीव ठाकुर ने 1999 के अपहरण के सूत्रधार चीफ की भूमिका निभाई और तब से उन्हें अपने दोस्तों और प्रशंसकों से सराहनीय प्रतिक्रिया मिली है। उन्होंने देखा कि बेहतरीन अभिनय को अक्सर पहचाना जाता है और उन्होंने बताया कि उन्हें अपने किरदार की तारीफ करते हुए दोस्तों और इंस्टाग्राम फॉलोअर्स से ढेर सारे संदेश मिले हैं।

करीना कपूर ने द बकिंघम मर्डर्स की शूटिंग के अनुभव किए साझा

बॉलीवुड अभिनेत्री करीना कपूर खान फिल्म द बकिंघम मर्डर्स की शूटिंग कर रही हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर इस बात का खुलासा किया है और कई तस्वीरें शेयर की हैं। तस्वीरों को शेयर करते हुए उन्होंने कैप्शन में लिखा, हॉट बैग (एक तरह की जैकेट) ने मुझे हर मौसम में शूटिंग से बचाया है। पहली तस्वीर में करीना ने एक मोटी बॉम्बर जैकेट पहनी हुई है। दूसरी तस्वीर मोनोक्रोम है, जिसमें वह स्वेटर और पैंट पहने हुए मुस्कुराती हुई दिखाई दे रही हैं। आखिरी तस्वीर में अभिनेत्री ने एक हॉट बैग पकड़ा हुआ है। फिल्म द बकिंघम मर्डर्स का निर्देशन हंसल मेहता ने किया है। मेहता 'अलीगढ़', 'शाहिद' और 'स्कैम 1992- द हर्षद मेहता स्टोरी' जैसी फिल्मों का निर्देशन करने के लिए जाने जाते हैं। फिल्म में रणवीर बरार, ऐश टंडन, रणवीर बरार और कीथ एलन भी हैं। यह फिल्म जसमीत भामरा नामक ब्रिटिश-भारतीय जासूस की कहानी है, जिसने हाल ही में अपने बच्चे को खो दिया है। उसे बकिंघमशायर में मारे गए 10 वर्षीय बच्चे का मामला सौंपा गया है। बालाजी टेलीफिल्म्स द्वारा प्रस्तुत, शोभा कपूर, एकता कपूर, करीना कपूर खान, महाना फिल्म और टीबीएम फिल्म्स द्वारा निर्मित यह फिल्म 13 सितंबर, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। द बकिंघम मर्डर्स के साथ करीना फिल्म सिंघम अगेन में भी काम कर रही हैं। रोहित शेट्टी द्वारा निर्देशित यह फिल्म 1 नवंबर को रिलीज होगी। यह करीना की एकता कपूर के साथ 'वीरे दी वेडिंग', 'क्रू' और 'उड़ता पंजाब' के बाद चौथी फिल्म है। फिल्म को बीएफआई लंदन फिल्म फेस्टिवल 2023 और 2023 मुंबई फिल्म फेस्टिवल में भी खूब सराहा गया, और लोगों ने फिल्म की खूब तारीफ की। फिल्म द बकिंघम मर्डर्स की कहानी असीम अरोड़ा, कश्यप कपूर और राघव राज कक्कड़ द्वारा लिखी गई है।

नयनतारा ने खास अंदाज में मनाया जवान की रिलीज का एक साल पूरा होने का जश्न

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म जवान ने साल 2023 में आज ही के दिन सिनेमाघरों में दस्तक दी थी। फिल्म ने अपनी रिलीज के एक साल पूरे कर लिए। फिल्म की अभिनेत्री नयनतारा ने जवान की पहली सालगिरह का जश्न खास अंदाज में मनाया है। उन्होंने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर फिल्म के चलेया गाने की एक तस्वीर साझा की है। इस फोटो में नयनतारा रोमांटिक पोज में किंग खान के साथ नजर आ रही हैं। इसके साथ ही उन्होंने कैप्शन में लिखा, जवान के एक साल पूरे। फिल्म चलेया गाना दर्शकों को खूब पसंद आया था। इसे अनिरुद्ध रविचंदर ने कंपोज किया था। इन सितारों ने निभाई थी खास भूमिकाएं फिल्म जवान की बात करें तो इसका निर्देशक एटली ने किया था। यह पहला मौका था जब उन्होंने किसी बॉलीवुड फिल्म का निर्देशन किया था। इस फिल्म में किंग खान और नयनतारा के अलावा दीपिका पादुकोण , विजय सेतुपति, प्रियामणि, सान्या मल्होत्रा, रिधि डोगरा और सुनील ग्रोवर नजर आए थे। इन फिल्मों में नजर आएंगी नयनतारा वर्क फ्रंट की बात करें तो नयनतारा जल्द ही आर माधवन और सिद्धार्थ के साथ टेस्ट में स्क्रीन साझा करते हुए नजर आने वाली हैं। एस शशिकांत ने इस फिल्म को लिखा और निर्देशित किया है। इसके अलावा वह मलयालम फिल्म डियर स्टूडेंट्स में दिखाई देंगी, जिसमें उनके साथ निविन पॉली भी होंगे। साल 2019 के बाद यह दोनों की एक साथ दूसरी फिल्म होगी।

अक्षय कुमार ने साझा किया रहस्यमयी मोशन पोस्टर, अभिनेता के जन्मदिन पर मिल सकता है बड़ा तोहफा

अक्षय कुमार ने अपने प्रशंसकों की उत्सुकता को एक बार फिर बढ़ा दिया है। अभिनेता ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर एक दिलचस्प मोशन पोस्टर साझा किया है। इस पोस्टर ने प्रशंसकों और इंडस्ट्री के लोगों के बीच अटकलों को तेज कर दिया है। बिना नाम वाले इस मोशन पोस्टर में शाही लाल पर्दों के साथ धातु का बना हुआ भयावह चेहरा नजर आ रहा है। यह मोशन पोस्टर अक्षय कुमार के जन्मदिन पर होने वाली एक बड़ी घोषणा की ओर इशारा करता है। पोस्टर में बताया गया है कि जल्द ही एक बड़ी घोषणा होने वाली है। इसके बाद से अभिनेता की आगामी परियोजना को लेकर कई तरह की अटकलें और सवाल सामने आ रहे हैं। मोशन पोस्टर के सामने आने के बाद अनुमान लगाया जा रहा है कि क्या यह अक्षय कुमार-प्रियदर्शन के बीच बहुप्रतीक्षित सहयोग हो सकता है?

मुंबई में रियल एस्टेट की बढ़ती कीमतों से निराश हैं श्रेया

मुंबई में घर खरीदना हर किसी का सपना होता है। फिल्मी सितारे भी मायानगरी में अपना आशियाना बनाने लिए आतुर रहते हैं। हालांकि, मुंबई में अपना खुद का घर खरीद पाना काफी मुश्किल होता है। मुंबई में रियल एस्टेट की बढ़ती कीमतों की वजह से अभिनेत्री श्रेया धनवंतरी भी काफी परेशान हैं। इसे लेकर उन्होंने अपनी निराशा भी जाहिर की है। स्कैम 1992 में पत्रकार सुचेता दलाल की भूमिका में नजर आई अभिनेत्री ने मुंबई में घर खरीदने को एक बेवकूफी भरा मंहगा सपना बताया है। उन्होंने कहा कि इसमें कई घोटाले भी होते हैं।

मुंबई में घर खरीदने को बताया घोटाला

अभिनेत्री ने शुक्रवार को अपने एक्स अकाउंट पर एक नोट साझा कर अपनी निराशा जाहिर की है। उन्होंने लिखा, मुझे ये लगता है कि मुंबई में घर खरीदना भी एक घोटाला है और मुझे इस बात से नफरत है कि मैं अभी भी इस बेवकूफाना और महंगे सपने को पूरा करना चाहती हूं। उनके इस पोस्ट पर कई और एक्स यूजर्स ने भी प्रतिक्रिया दी है। उनमें से एक यूजर ने उन्हें सलाह देते हुए लिखा, इस जाल में मत उलझो, सिर्फ किराए पर रहो। एक और यूजर ने कमेंट किया, इस घोटाले का कई लोग शिकार होते हैं, इस समूह में आपका भी स्वागत है।

पहली फिल्म से पहले झेली थी गंभीर वित्तीय समस्या

कुछ समय पहले अपने एक पुराने इंटरव्यू में श्रेया ने अपनी हालात का जिक्र किया था, जब उन्हें अपनी पहली फिल्म साइन करने से पहले गंभीर वित्तीय संकट से जूझना पड़ा था। उन्होंने उस दौरान फिल्म मिलने से पहले अपने वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के दौरान होने वाले संघर्षों का जिक्र किया था। उन्होंने कहा था, मुझसे मत पूछो कि मैंने यह कैसे किया। मुझे नहीं पता कि मैंने यह कैसे किया। मुझे सच में नहीं पता कि मैं यहां कैसे रही, कैसे मैं यहां टिकी रही। पैसे की कमी से लेकर एक वक्त, तो बेघर होने के करीब थी. लंबे समय तक भूखी रही। मुझे नहीं पता यह मैंने कैसे किया।

अद्भुत और नौसिखिए में आएंगी नजर

श्रेया ने अपने करियर की शुरुआत साल 2009 की तेलुगु फिल्म जोश से अपनी शुरुआत की थी। इसके 10 साल बाद उन्होंने साल 2019 में व्हाई चीट इंडिया से बॉलीवुड में अपने करियर की शुरुआत की। हालांकि, उन्हें सफलता और पहचान हंसल मेहता की साल 2020 में रिलीज हुई स्कैम 1992 से मिली। इसके बाद भी वह जल्द ही दो आगामी प्रोजेक्ट्स में नजर आने वाली हैं। वह आगामी फिल्में अद्भुत और नौसिखिए में अपनी अदाकारी का जलवा बिखेरती नजर आएंगी।

नो एंट्री 2 का हिस्सा नहीं बनने पर फरदीन खान ने तोड़ी चुप्पी

अनीस बज्मी ने साल 2005 में सलमान खान, अनिल कपूर और फरदीन खान को बोनी कपूर प्रोडक्शन की फिल्म नो एंट्री में निर्देशित किया, जो कॉमेडी शैली में एक कल्ट क्लासिक और साल की सबसे ज्यादा कमाई करने वाली फिल्म बन गई। दो दशकों के बाद नो एंट्री का बहुप्रतीक्षित सीक्वल बनाने की योजना बनाई गई। अब इस सीक्वल को लेकर चर्चा जोरों पर है, जिसका नाम कथित तौर पर नो एंट्री में एंट्री रखा गया है। अब हाल ही में फरदीन ने 2005 की हिट कॉमेडी में काम करने के अपने अनुभव को याद किया और फिल्म के सीक्वल के बारे में भी बात की। इससे पहले खबर आई थी कि सीक्वल की शूटिंग अगले साल जून तक पूरी होने की उम्मीद है। निर्देशक अनीस बज्मी दिसंबर 2024 से दिलजीत दोसांझ, वरुण धवन और अर्जुन कपूर के साथ डबल रोल और 10 प्रमुख महिलाओं के साथ नो एंट्री 2 की शूटिंग शुरू करेंगे। उनकी जून 2024 तक शूटिंग पूरी करने की योजना है। सीक्वल जी स्टूडियो बेव्यू प्रोडक्शन होगा। वहीं अब फरदीन खान ने पुष्टि की कि फिल्म वास्तव में बन रही है, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि यह एक नई स्टार कास्ट है। सीक्वल के बारे में बात करते हुए फरदीन ने कहा कि मुझे लगता है कि इसकी घोषणा हो चुकी है, लेकिन हम इसमें शामिल नहीं हैं। इसमें बिलकुल नई स्टार कास्ट है। उन्होंने मजाक में कहा कि इसमें हम नहीं हैं तो लानत है। उन्होंने आगे कहा कि इस बारे में बोनी कपूर से बात करनी चाहिए। इस दौरान फरदीन ने फरदीन ने नो एंट्री की शूटिंग के अपने अनुभव को भी याद किया। नो एंट्री ने हाल ही में रिलीज के 19 साल पूरे किए हैं। फरदीन ने कहा कि एक अभिनेता के तौर पर यह उनका पहला कॉमेडी प्रयास था, जिसमें उन्हें थोड़ा मूर्खतापूर्ण, मजेदार, नासमझ किस्म का किरदार निभाना था, जो बहुत स्मार्ट नहीं था, जो बहुत कमजोर और भोला था। यह उनके खुद को देखने के तरीके से बहुत अलग था। फरदीन ने आगे कहा कि इससे उन्हें वास्तव में आजादी मिली। उन्होंने कहा कि मैं ऐसा करने में थोड़ा झिझक रहा था, लेकिन यह बोनी कपूर के मुझ पर विश्वास के कारण था। उन्होंने मुझे खुशी में कुछ ऐसे दृश्य करते हुए देखा था। उन्होंने कहा कि फरदीन तुम इस भूमिका के लिए सही हो और मैंने कहा कि सच में? क्योंकि यह 2002 में आई चार्ली चैपलिन की रीमेक थी और मेरा किरदार प्रभु देवा ने निभाया था। बेशक, मैंने इसे काफी अलग तरीके से समझा, लेकिन सब अच्छे से हुआ।

'लाहौर 1947' के साथ इन तीन फिल्मों का निर्माण कर रहे आमिर खान

आमिर खान एक बेहतरीन अभिनेता होने के साथ-साथ एक शानदार फिल्म निर्माता भी हैं। आमिर फिल्म की कहानी से जुड़ी हर एक बारीकी पर बखूबी गौर फरमाते हैं। साथ ही एक शूट को स्क्रिप्ट की डिमांड के अनुसार, परफेक्ट बनाने की सभी कोशिशें करते नजर आते हैं। इसीलिए उन्हें बॉलीवुड का मिस्टर परफेक्शनिस्ट भी कहा जाता है। 'लाल सिंह चड्ढा' के बाद से आमिर खान ब्रेक पर हैं। हालांकि, जल्द ही वह फिल्म 'लाहौर 1947' में स्पेशल कैमियो में नजर आएंगे। इस फिल्म का निर्माण अभिनेता के प्रोडक्शन हाउस (आमिर खान प्रोडक्शन) के बैनर तले किया जा रहा है। फिल्म को लेकर प्रशंसक काफी उत्साहित हैं। इसकी अलावा आमिर तीन अन्य फिल्मों का भी निर्माण कर रहे हैं। राजकुमार संतोषी द्वारा निर्देशित फिल्म लाहौर 1947 में सनी देओल के साथ प्रीति जिंटा मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, इस फिल्म में आमिर खान भी कैमियो रोल करते दिखाई दे सकते हैं। फिल्म लाहौर 1947 अगले साल यानी 2025 के गणतंत्र दिवस यानी 26 जनवरी 2025 पर रिलीज की जा सकती है। इस फिल्म में दर्शकों को भरपूर एक्शन देखने को मिलने वाला है। फिल्म का निर्माण आमिर खान के प्रोडक्शन हाउस (आमिर खान प्रोडक्शन) के बैनर तले किया जा रहा है। सितारे जमीन पर, खान के बैनर तले बनने वाली फिल्मों में से एक है, जो वर्तमान में पोस्ट-प्रोडक्शन चरण में है। यह फिल्म क्रिसमस 2024 के मौके पर सिनेमाघरों में दस्तक दे सकती है। फिल्म की कहानी पैरालंपिक खेलों पर केंद्रित है, जो एक अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतियोगिता है जो विशेष रूप से विकलांग एथलीटों पर केंद्रित है। फिल्म में जेनेलिया देशमुख मुख्य अभिनेत्री हैं। फिल्म प्रीतम प्यारे का निर्माण भी आमिर खान के प्रोडक्शन हाउस (आमिर खान प्रोडक्शन) के बैनर तले किया जा रहा है। इस बात की पुष्टि खुद आमिर खान ने पिछले साल की थी। साथ ही बताया था कि वह इस मूवी में पांच मिनट के कैमियो में नजर आएंगे। आमिर खान प्रोडक्शंस द्वारा निर्मित फिल्म हैप्पी पटेल में वीर दास मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म पहले से ही पूरे जोरों पर है और गोवा के सुरम्य स्थानों में इसकी शूटिंग चल रही है। इस विचित्र कॉमेडी फिल्म को लेकर अटकलें थीं कि इसमें इमरान खान मुख्य भूमिका निभाएंगे लेकिन आमिर ने साफ कर दिया था कि फिल्म में वीर दास लीड कलाकार हैं।

निजी बिल्डिंग के अंदर पीछा करने पर पैप्स पर भड़कीं आलिया भट्ट

आलिया भट्ट को आखिरी बार रणवीर सिंह के साथ रोमांटिक कॉमेडी रॉकी और रानी की प्रेम कहानी में देखा गया था। अभिनेत्री इन दिनों अपनी आगामी फिल्म जिगरा की रिलीज के लिए तैयार हैं, जिसका निर्देशन वासन बाला ने किया है। इस फिल्म में द आर्चीज के अभिनेता वेदांग रैना ने भी अभिनय किया है। अब हाल ही में, आलिया का एक वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है, जिसमें वह पैप्स पर भड़कती नजर आ रही हैं। हाल ही में, आलिया को एक बिल्डिंग के पास स्पॉट किया गया। अभिनेत्री अपनी कार से उतरीं और सीधे बिल्डिंग की तरफ जाने लगीं। पैपराजी ने भी आलिया का पीछा किया और बिल्डिंग के अंदर पहुंच गए। अभिनेत्री की वीडियो और तस्वीरें लेने के चक्कर में पैप्स बिल्डिंग की लिफ्ट तक पहुंच गए। यह देख आलिया गुस्से में तमतमा गईं। हालांकि, उनकी टीम ने पैपराजी के दखल देने वाले व्यवहार को रोकने की कोशिश की, लेकिन वे फोटो लेने के लिए बिल्डिंग और यहां तक कि लिफ्ट में भी उनका पीछा करते रहे। तभी आलिया ने पैपराजी को डांटा और उन्हें यह कहते हुए सुना जा सकता है, क्या कर रहे हो, ये प्राइवेट स्पेस है?

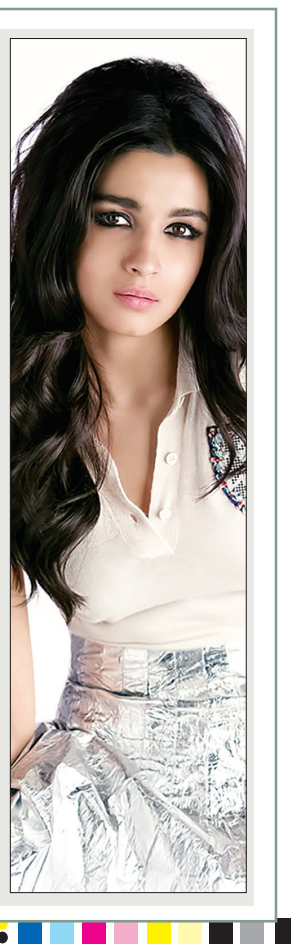

2 के शेयर को सालभर से कोई नहीं बेच रहा

नईदिल्ली, एजेंसी। इंडस्ट्रियल प्रोडक्ट हर्षिल एग्रोटेक बीएसई लिस्टेड एक पेनी स्टॉक है। हैरानी की बात यह है कि इस स्टॉक में 2023 के बाद से एक भी विक्रेता नहीं देखा गया है और 12 महीनों में यह लगभग 2,133 प्रतिशत बढ़ गया है। अकेले 2024 में अब तक स्टॉक 1,228 प्रतिशत बढ़ गया है। प्रोडक्ट हर्षिल एग्रोटेक के शेयर का वर्तमान प्राइस 56.72 रुपये है।

7 के शेयर में तूफानी तेजी

नईदिल्ली। डीप डायमंड के शेयर में पिछले सप्ताह लगातार तेजी देखी गई थी। कंपनी के शेयर बीते शुक्रवार को 10.24 रुपये पर बंद हुए थे। इसमें 5 प्रतिशत तक की तेजी थी। कंपनी के पिछले पांच कारोबारी दिन में 45 प्रतिशत से अधिक चढ़ गए। इस दौरान इसकी कीमत 7 रुपये से बढ़कर वर्तमान प्राइस तक पहुंच गई।

अनिल अंबानी के इस शेयर ने 1 लाख रुपये के बनाए 23 लाख रुपये

नईदिल्ली, एजेंसी। अनिल अंबानी की कंपनी रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयरों में अपने लो लेवल से 2200 पर्सेंट से ज्यादा की तूफानी तेजी आई है। रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयर पिछले साढ़े 4 साल में 9 रुपये से बढ़कर 200 रुपये के पार पहुंच गए हैं। कंपनी के शेयरों ने इस अवधि में 1 लाख रुपये के निवेश को बढ़ाकर 23 लाख रुपये कर दिया है। रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर अब इलेक्ट्रिक कार और बैटरी बनाने की योजना पर विचार कर रही है।

रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयर 27 मार्च 2020 को 9.20 रुपये पर थे। कंपनी के शेयर 6 सितंबर 2024 को 213.10 रुपये पर बंद हुए हैं। अनिल अंबानी की कंपनी के शेयरों में इस अवधि में 2217 पर्सेंट का उछाल आया है। अगर किसी व्यक्ति ने 27 मार्च 2020 को रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयरों में 1 लाख रुपये लगाए होते और अपने निवेश को बनाए रखा होता तो मौजूदा समय में 1 लाख रुपये से खरीदे गए शेयरों की वैल्यू 23.15 लाख रुपये होती। रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयरों का 52 हफ्ते का हाई लेवल 308 रुपये है। वहीं, कंपनी के शेयरों का 52 हफ्ते का लो लेवल 143.70 रुपये है। अनिल अंबानी के मालिकाना हक वाली कंपनी रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर इलेक्ट्रिक कार और बैटरीज बनाने के प्लान पर विचार कर रही है। कंपनी ने अपने प्लान्स पर सलाह देने के लिए चीन की कंपनी बीवायडी के पूर्व इंडिया एग्जिक्यूटिव संजय गोपालकृष्णन को नियुक्त किया है। इस मामले की जानकारी रखने वाले दो लोगों ने यह बताया है। रॉयटर्स की एक रिपोर्ट में यह बात कही गई है। एक सूत्र ने बताया है कि अनिल अंबानी की कंपनी ने इलेक्ट्रिक व्हीकल प्लांट की कॉस्ट फिजिबिलिटी स्टडी के लिए एक्सटर्नल कंसल्टेंट्स को हायर किया है। इस प्लांट की सालाना कैपेसिटी शुरुआत में करीब 250000 व्हीकल्स की हो सकती है, जिसे कुछ सालों में 750000 व्हीकल्स तक किया जा सकता है।

भारत का पावर सेक्टर 2030 तक दोगुना बढ़कर 280 अरब डॉलर का होगा;रक्षा क्षेत्र में भी होगा जबरदस्त विकास

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के ऊर्जा उत्पादन और ट्रांसमिशन सेक्टर में आने वाले दिनों में जबरदस्त विकास देखने को मिलेगा और यह साल 2030 तक बढ़कर 280 अरब डॉलर का हो सकता है। अमेरिकी फर्म जेफ्रीज ने अपनी ताजा रिपोर्ट में ये दावा किया है। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में जैसे-जैसे विकास दर बढ़ रही है, वैसे ही ऊर्जा की खपत भी बढ़ेगी। रिपोर्ट के अनुसार, भारत का ऊर्जा उत्पादन और ट्रांसमिशन सेक्टर वित्तीय वर्ष 2017-23 की तुलना में वित्तीय वर्ष 2024 से 2030 तक बढ़कर दोगुना यानी कि करीब 280 अरब डॉलर का हो सकता है। रिपोर्ट के अनुसार, अर्थव्यवस्था के सतत विकास के लिए ऊर्जा की जरूरत होगी, ऐसे में ऊर्जा खपत भी 7 प्रतिशत सालाना की दर से बढ़ेगी। भारत का कुल ऊर्जा उत्पादन 2024 के 442 गीगावाट से बढ़कर 2030 तक 673 गीगावाट तक पहुंच सकता है। भारत के थर्मल पावर प्लांट्स में भी निवेश बढ़ेगा और ग्रिड की स्थिरता को बनाए रखने में इन थर्मल पावर प्लांट्स की अहम भूमिका होगी। जेफ्रीज की रिपोर्ट में भारत के रक्षा क्षेत्र में भी जबरदस्त विकास होने की उम्मीद जताई गई है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत की रक्षा कंपनियां 14 प्रतिशत की वार्षिक दर से तरक्की कर सकती हैं।

26 लाख करोड़ करोड़ रुपये की संपत्ति...यह है दुनिया का सबसे अमीर परिवार, 8 प्राइवेट प्लेन, अंबानी-अडानी भी पीछे

नई दिल्ली, एजेंसी। अबू धाबी के क्राउन प्रिंस शेख खालिद बिन मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान कल से भारत की दो दिन की यात्रा पर आ रहे हैं। अबू धाबी के क्राउन प्रिंस के रूप में यह उनका पहला भारत दौरा होगा। वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करेंगे। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच द्विपक्षीय सहयोग के कई मुद्दों पर चर्चा होगी। क्राउन प्रिंस जिस परिवार से आते हैं, वह दुनिया का सबसे अमीर परिवार है। इनके परिवार के पास 8 प्राइवेट जेट हैं। अंबानी-अडानी के परिवार की कुल संपत्ति भी इसके परिवार के मुकाबले काफी कम है।

शेख खालिद यूएई के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के बड़े बेटे हैं। साथ ही यह अबू धाबी की रूलिंग एआई नाहयान परिवार के सदस्य हैं। फरवरी 2016 को इन्हें नेशनल सिक्योरिटी का हेड नियुक्त किया गया था। मार्च 2023 में इन्हें अबू धाबी का क्राउन प्रिंस और अबू धाबी एग्जिक्यूटिव काउंसिल का चेयरमैन

नियुक्त किया गया।

दुनिया का सबसे अमीर परिवार

अल नाहयान परिवार को दुनिया का सबसे अमीर परिवार माना जाता है। इसमें 50 से ज्यादा लोग हैं। ब्लूमबर्ग की एक रिपोर्ट के मुताबिक साल 2023 में इस परिवार की कुल संपत्ति 305 अरब डॉलर (करीब 26 लाख करोड़ रुपये) थी। यह संपत्ति मुकेश अंबानी और गौतम अडानी की कुल संपत्ति से भी ज्यादा है। मुकेश अंबानी के पास 111 अरब डॉलर और गौतम अडानी के पास 99.6 अरब डॉलर की संपत्ति है। यही नहीं, दुनिया के सबसे अमीर शख्स की भी संपत्ति भी अल नाहयान परिवार के बराबर नहीं है। एलन मस्क दुनिया के सबसे अमीर शख्स हैं। इनके पास 237 अरब डॉलर की संपत्ति है।

इतना फैला है परिवार का बिजनेस

एक रिपोर्ट के मुताबिक यूएई के राष्ट्रपति शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के नेतृत्व में यह परिवार दुनिया के तेल भंडार का लगभग छह फीसदी रखता है।

4 हजार करोड़ के महल में रहता है परिवार

अल नाहयान की संपत्तियों में राष्ट्रपति महल भी शामिल है। अबू धाबी में 3.80 लाख वर्ग मीटर में फैले इस महल की कीमत 475 मिलियन डॉलर (करीब 4 हजार करोड़ रुपये) है। इसके अलावा भी अल नाहयान परिवार के पास दुनियाभर में कई महल हैं। इनमें पेरिस में शैटॉ डे बैलन भी शामिल है। इसके अलावा इनकी यूके में भी काफी संपत्तियां हैं। इस कारण शेख खलीफा बिन जायद अल नाहयान को लंदन का जमींदार भी कहा जाता है।

5 हजार करोड़ रुपये के यॉट

इस परिवार के पास अज्जम और ब्लू सुपरयॉट जैसे बड़े यॉट भी हैं। इनकी कीमत 600 मिलियन डॉलर (करीब 5 हजार करोड़ रुपये) है। अज्जम की लंबाई 591 फुट है। इसे दुनिया का सबसे लंबा यॉट माना जाता है। यह जेफ बेजोस के सुपरयॉट कोरू से भी बड़ा है।

विमानों का बड़ा बेड़ा

क्राउन प्रिंस के अल नाहयान परिवार के पास विमानों का एक बड़ा बेड़ा भी है। इसमें 8 निजी जेट विमान, एयरबस-320-200 और तीन बोइंग 787-9 शामिल हैं। शेख मोहम्मद बिन जायद अल नाहयान के पास 478 मिलियन डॉलर (करीब 4 हजार करोड़ रुपये) का बोइंग 747 और 176 मिलियन डॉलर (करीब 1500 करोड़ रुपये) का बोइंग 787 विमान है।

700 से ज्यादा कारें

इस परिवार के पास 700 से ज्यादा कारें हैं। इसमें दुनिया की सबसे बड़ी एसयूवी और जीप शामिल हैं। राष्ट्रपति के भाई शेख मंसूर बिन जायद बिन सुल्तान अल नाहयान के पास पांच बुगाटी वेरॉन, एक फेरारी एक्सएक्स, एक मैकलारेन एमसी12, एक मर्सिडीज-बेंज सीएलकेजीटीआर और एक लेम्बोर्गिनी रेवेन्टन जैसी लग्जरी कार हैं।

कार से पेमेंट करने वाले सावधान! 2000 रुपये तक के पेमेंट पर लग सकता है जीएसटी

मुंबई, एजेंसी। डेबिट या क्रेडिट कार्ड से पेमेंट करना महंगा पड़ सकता है। सरकार 2000 रुपये तक के पेमेंट पर 18 फीसदी जीएसटी लगा सकती है। दरअसल, सोमवार यानी 9 सितंबर को जीएसटी काउंसिल की बैठक होने जा रही है। इसमें जीएसटी से जुड़े कई फैसले लिए जाएंगे। माना जा रहा है कि सरकार इस बैठक में बिलडेस्क और सीसीएवेन्यू जैसी पेमेंट एग्रीगेटर कंपनियों पर 18 फीसदी जीएसटी लगाने के प्रस्ताव पर चर्चा कर सकती है। अगर ऐसा होता है तो डेबिट और क्रेडिट कार्ड से 2000 रुपये से कम के पेमेंट पर भी जीएसटी भरना पड़ सकता है।

बिलडेस्क और सीसीएवेन्यू जैसे बड़े पेमेंट एग्रीगेटर्स को जीएसटी अधिकारियों की ओर से नोटिस मिला है। हमारे सहयोगी इकॉनमिक टाइम्स के मुताबिक इसमें 2000 रुपये से कम के डिजिटल ट्रांजेक्शन को प्रोसेस करने के लिए व्यापारियों से लिए गए शुल्क पर जीएसटी की मांग की गई है। बता दें कि भारत में कुल डिजिटल पेमेंट में से 80 फीसदी से ज्यादा पेमेंट 2000 रुपये से कम के होते हैं। साल 2016 में नोटबंदी के दौरान एक सरकारी नोटिफिकेशन के जरिए पेमेंट एग्रीगेटर्स को छोटे ट्रांजेक्शन पर व्यापारियों को दी जाने वाली सेवाओं पर टैक्स लगाने से रोक दिया गया था।

ग्राहकों की कटेगी जेब: अगर जीएसटी काउंसिल में 2000 रुपये तक के पेमेंट पर जीएसटी लगाने पर सहमति बनती है तो इसका असर पेमेंट करने वाले ग्राहकों पर पड़ेगा। पेमेंट एग्रीगेटर्स फिलहाल व्यापारियों से हर ट्रांजेक्शन पर 0.5 फीसदी से 2 फीसदी तक चार्ज करते हैं। ऐसे में जीएसटी लागू होने पर वह अतिरिक्त चार्ज व्यापारियों यानी ग्राहकों पर डाल सकते हैं।

यूपीआई पेमेंट पर नहीं पड़ेगा असर: छोटे ट्रांजेक्शन के मामले में यूपीआई के जरिए पेमेंट करने वालों पर इसका कोई असर नहीं पड़ेगा। अगर सरकार जीएसटी लगाती है तो इसका बोझ एग्रीगेटर्स ग्राहकों पर ही डाल सकते हैं। ऐसे में ग्राहकों को ज्यादा रकम का पेमेंट करना होगा। हालांकि यह रकम सिर्फ कार्ड (डेबिट और क्रेडिट) और नेट बैंकिंग द्वारा किए गए पेमेंट पर ही देनी होगी। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस से पेमेंट करने पर कोई शुल्क नहीं लगेगा। बता दें कि यूपीआई के तहत कोई चार्ज नहीं लिया जाता है।

वरिष्ठ नौकरशाह तुहिन कांत पांडे अगले वित्त सचिव होंगे, सरकार ने नियुक्ति आदेश जारी किया

नई दिल्ली, एजेंसी। वरिष्ठ नौकरशाह तुहिन कांत पांडे को नया वित्त सचिव नियुक्त किया गया है। शनिवार को सरकार की तरफ से जारी बयान में यह जानकारी दी गई। देश के बेहतरीन अधिकारियों में से एक पांडे 1987 बैच के ओडिशा कैडर के आईएएस अधिकारी हैं। वह वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की टीम का अहम हिस्सा हैं। वह निवेश एवं सार्वजनिक परिसंपत्ति प्रबंधन विभाग (दीपम) के सचिव रह चुके हैं। उन्हें एअर इंडिया के निजीकरण और एलआईसी के देश के सबसे बड़े आईपीओ में निभाई गई भूमिका के लिए पहचाना जाता है। वित्त मंत्रालय में आने से पहले उन्होंने अपने गृह कैडर ओडिशा में प्रमुख सचिव के रूप में काम किया।

हेल्दी फूड बनाती है इनकी कंपनी, एक लाख रुपये से हुई थी शुरुआत, आज कमाई 50 लाख रुपये पहुंची

नई दिल्ली, एजेंसी। खाने-पीने से जुड़ी चीजों का बिजनेस करना आसान नहीं होता। वह भी तब इस इस मार्केट में पहले से ही प्रतिद्वंदी बैठे हों। लेकिन कुछ अलग से हटकर करने की जिद आपको नए मुकाम पर पहुंचा देती है। कुछ ऐसा ही किया जयश्री कृष्णमूर्ति नाम की इस सीए ने। जयश्री का बिजनेस हेल्दी फूड से जुड़ा है। इन्होंने अपने बिजनेस की शुरुआत एक लाख रुपये से की थी। आज इनके बिजनेस का सालाना टर्नओवर 50 लाख रुपये हो गया है। जयश्री के ब्रांड का नाम रसा वेलनेस है। इनकी कंपनी मिलेट्स और ग्लूटेन फ्री दलिया, स्नैक्स आदि बनाती हैं। 13 साल से अधिक के अनुभव वाली सीए जयश्री अपनी फर्म इनफिनी कंसल्टिंग प्राइवेट लिमिटेड भी चलाती हैं।

रसोई से की शुरुआत: चेन्नई की रहने वाली जयश्री पेशे से चार्टर्ड अकाउंटेंट हैं। उन्होंने अपने बिजनेस की शुरुआत घर की रसोई से की थी। बाद में रसा वेलनेस प्राइवेट लिमिटेड नाम से कंपनी बनाई। जयश्री बताती हैं कि उनके बिजनेस की शुरुआत एक घटना से हुई। दरअसल, उनके 8 साल का बेटे से एक स्टोर से एक पेय पदार्थ खरीदा था। जयश्री ने देखा कि उस पेय पदार्थ में किसी भी तरह की कोई पौष्टिक चीज नहीं थी। इसके बाद उन्होंने सोचा कि बच्चों के लिए ऐसी चीज तैयार की जाए जो उन्हें जरूरी न्यूट्रिएंट्स दे। इसी चीज को ध्यान में रखते हुए उन्होंने अपने बिजनेस की शुरुआत की।

तैयार की खुद की रेसिपी: जयश्री ने बच्चों के लिए रसोई में ही ऐसी रेसिपी तैयार कीं जो प्रोटीन और बच्चों के

लिए जरूरी पोषक तत्वों से भरपूर थीं। इसके लिए उन्होंने कैल्शियम, आयरन और प्रोटीन से भरपूर बाजरा और रागी का इस्तेमाल किया। इसका उन्हें परिवार के दूसरे सदस्यों से अच्छा रिस्पॉन्स मिला। बाद में उन्होंने अपने फ्रेंड्स के बच्चों के इस्तेमाल के लिए उन्हें यह रेसिपी दी।

मांग बढ़ी तो शुरू किया स्टार्टअप: जब जयश्री के बनाए फूड आइटम की मांग बढ़ी तो उन्होंने इसे पूर्ण रूप से बिजनेस में बदलने के बारे में सोचा। फिर उन्होंने जुलाई 2022 में एक लाख रुपये के निवेश से अपना स्टार्टअप शुरू कर दिया। जयश्री बताती हैं कि वह काफी समय से खाने-पीने से जुड़ा कोई बिजनेस शुरू करना चाहती थीं। उनका मानना था कि चीजें ऐसी होनी चाहिए जो हेल्दी हों। वह बताती है कि मैं अपने प्रोडक्ट में अनाज, मेवे और मसालों का इस्तेमाल करती हूं।

30 से ज्यादा प्रोडक्ट: आज जयश्री की कंपनी 30 से ज्यादा प्रोडक्ट बनाती है। इनमें इंस्टेंट हेल्थ ड्रिंक्स, हेल्दी दलिया, आटा और इंस्टेंट मिक्स, लड्डू मिक्स, लड्डू, बाजरा कुकीज और क्रंची आदि शामिल हैं। उन्होंने बताया कि वे अपने प्रोडक्ट में ग्लूटेन-मुक्त आटा, गुड़, मोती बाजरा, फॉक्सटेल बाजरा बहुत शामिल करती हैं। इनमें बाजरा चॉकलेट ड्रिंक्स, हेल्दी दलिया, स्नैक्स और लड्डू शामिल हैं।

पाकिस्तान की बदल जाएगी किस्मत! समुद्री सीमा में मिला तेल-गैस का बड़ा भंडार

नई दिल्ली, एजेंसी। पाकिस्तान की समुद्री सीमा में पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस का एक बड़ा भंडार मिला है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार यह भंडार इतना बड़ा है कि इसके दोहन से पड़ोसी देश की किस्मत बदल सकती है। डॉन न्यूज टीवी ने शुक्रवार को एक वरिष्ठ सुरक्षा अधिकारी के हवाले से बताया कि तेल और गैस भंडार की मौजूदगी की पुष्टि के लिए एक मित्र देश के सहयोग से तीन साल तक सर्वेक्षण किया गया था।

भौगोलिक सर्वेक्षण से पाकिस्तान को भंडार के स्थान की पहचान करने में मदद मिली। संबंधित विभागों ने सरकार को पाकिस्तानी समुद्री सीमा में तेल संसाधनों के बारे में जानकारी दी है। अधिकारी ने कहा कि इन संसाधनों से लाभ उठाने के लिए बोली और अन्वेषण प्रस्तावों का अध्ययन किया जा रहा है, जिसका अर्थ है कि निकट भविष्य में अन्वेषण कार्य शुरू किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि हालांकि कुओं की खुदाई और वास्तव में तेल निकालने के काम में कई साल लग सकते हैं।

अधिकारी ने कहा कि इस संबंध में पहल करने और जल्दी से काम पूरा करने से देश की आर्थिक किस्मत बदलने में मदद मिल सकती है। कुछ अनुमान बताते हैं कि यह खोज दुनिया में चौथा सबसे बड़ा तेल और गैस भंडार है।

आरबीआई ने जुलाई में खरीदा 5 टन सोना

नई दिल्ली, एजेंसी। सोने की कीमतें ऑल-टाइम हाई पर होने के बावजूद, जुलाई 2024 में वैश्विक सेंट्रल बैंकों ने रिकॉर्ड सोने की खरीदारी की। इस दौरान भारतीय रिजर्व बैंक ने अपने गोल्ड रिजर्व में 5 टन की बढ़ोतरी की है। साल 2024 में अब तक आरबीआई हर महीने सोना खरीद रहा है, जिससे उसकी कुल खरीद 43 टन तक पहुंच गई है। अब आरबीआई के पास कुल 846 टन गोल्ड रिजर्व है।

जुलाई 2024 में दुनियाभर के सेंट्रल बैंकों ने कुल 37 टन सोने की खरीद की, जो पिछले महीने के मुकाबले 206त्न अधिक है। यह जनवरी 2024 के बाद सबसे बड़ी मासिक खरीद है। सेंट्रल बैंकों ने 2024 की पहली छमाही में कुल 483 टन सोना खरीदा था। 2023 में सेंट्रल बैंकों ने 1037 टन और 2022 में रिकॉर्ड 1082 टन सोना खरीदा था। सेंट्रल बैंक अपनी रिजर्व्स को डायवर्सिफाइ करने और अमेरिकी डॉलर पर निर्भरता कम करने के लिए सोना जमा कर रहे हैं।

जुलाई 2024 में 7 सेंट्रल बैंकों ने एक टन या उससे ज्यादा सोना खरीदा। पोलैंड का नेशनल बैंक 14 टन सोने की खरीद के साथ सबसे बड़ा खरीदार बना, जबकि उज्बेकिस्तान के सेंट्रल बैंक ने 10 टन सोना खरीदा। आरबीआई 5 टन सोने की खरीद के साथ तीसरे स्थान पर रहा, जबकि जॉर्डन के सेंट्रल बैंक ने 4 टन सोना खरीदा।

10 सितंबर से खुल रहा यह आईपीओ, प्राइस बैंड 70

नईदिल्ली, एजेंसी। अगर आप किसी आईपीओ में दांव लगाने की सोच रहे हैं तो आपके लिए यह काम की खबर हो सकती है। अगले सप्ताह से एक और कंपनी का आईपीओ निवेश के लिए ओपन हो सकता है। यह इश्यू ट्रैफिकसोल आईटीएस टेक्नोलॉजीज का है। कंपनी का आईपीओ निवेश के लिए 10 सितंबर को खुलेगा और 13 सितंबर को बंद होगा। इसका प्राइस बैंड 70 रुपये तय किया गया है। बता दें कि ट्रैफिकसोल आईटीएस एक बुक बिल्ट इश्यू है। कंपनी आईपीओ के जरिए लगभग 44.87 करोड़ जुटाएगी, इसमें 44.87 करोड़ का फ्रेश इश्यू शामिल है।

ग्रे मार्केट में अभी से तेजी: बता दें कि ग्रे मार्केट में इस आईपीओ को तगड़ा रिस्पॉन्स मिल रहा है। कंपनी के शेयर ग्रे मार्केट में अभी से ही 80 रुपये प्रीमियम पर उपलब्ध हैं। यानी कि यह शेयर 150 रुपये पर संभावित लिस्ट हो सकता है। इसका मतलब है कि निवेशकों को पहले ही दिन 115 प्रतिशत तक का मुनाफा हो सकता है। बता दें कि कंपनी के शेयरों की संभावित लिस्टिंग डेट 17 सितंबर है। कंपनी के प्रमोटर जितेंद्र नारायण दास और पूनम दास हैं।

क्या है डिटेल: ट्रैफिकसोल नई टेक्नोलॉजी, सॉल्यूशन और टिकाऊ प्रोडक्ट्स के जरिए से यातायात सुरक्षा पर ध्यान देने के साथ सबसे जटिल यातायात संबंधी चुनौतियों को हल करने वाली प्रमुख कंपनियों में से एक है। गंभीर चोटों और दुर्घटनाओं को रोकने के लिए उपयोगकर्ताओं को समय पर चेतावनी देकर वास्तविक समय के जोखिमों को कम करने के लिए प्रतिबद्ध है और साथ ही बेहतर डिजाइन अनुप्रयोगों, मानकों और दिशानिर्देशों का उपयोग करके दुर्घटना जोखिमों को कम करने के लिए काम कर रहा है। कंपनी ने 2023 में 36.75 करोड़ के मुकाबले 2024 में 66.09 करोड़ का रेवेन्यू दर्ज किया।

एसबीआई की इस स्पेशल स्कीम में निवेश का आखिरी मौका, इसमें 400 दिन की एफडी पर मिलता है 7.60 प्रतिशत तक ब्याज

नईदिल्ली, एजेंसी। फिक्स्ड डिपॉजिड में निवेश करके बेहतर रिटर्न पाने की चाहत रखते हैं तो यह खबर आपके लिए है। दरअसल, देश के सबसे बड़े पब्लिक सेक्टर लैंडर स्टेट बैंक ऑफ इंडिया अपने ग्राहकों के लिए पॉपुलर अमृत कलश एफडी स्कीम ऑफर करती है। बता दें कि अमृत कलश एक 400 दिन की एफडी स्कीम है जिसमें ग्राहकों को अधिकतम 7.60 पर्सेंट तक ब्याज मिलता है। बता दें कि बैंक ने पहली बार 12 अप्रैल, 2023 को इस स्कीम को लॉन्च किया था। लेकिन इसकी पापुलैरिटी को देखते हुए किसकी डेडलाइन को कई बार

बढ़ाया जा चुका है। हालांकि, अंतिम बार बैंक ने इसे बढ़ाकर 30 सितंबर, 2024 कर दिया था। यानी कि अब ग्राहकों के पास इस स्कीम में निवेश करने का अंतिम मौका है। आइए जानते हैं इस स्कीम के बारे में विस्तार से।

कई बार बढ़ चुकी है स्कीम की डेडलाइन: बता दें कि इस स्कीम के लॉन्च होने के बाद एसबीआई ने कई बार इसकी डेडलाइन को बढ़ाया है। पहली बार एसबीआई ने 23 जून, 2023 को इसकी डेडलाइन को बढ़ाकर 31, दिसंबर 2023 कर दिया था। बाद में बैंक में फिर इसे बढ़ाकर 31 मार्च, 2024 कर दिया था। एक बार फिर बैंक ने इस स्पेशल एफडी स्कीम की डेडलाइन को बढ़ाते हुए 30 सितंबर, 2024 तक कर दिया था।

यहां मिलता है 7.60 पर्सेंट तक ब्याज: एसबीआई अमृत कलश 400 दिन की एक एफडी स्कीम है जिसमें निवेश करने पर सामान्य ग्राहकों को अधिकतम 7.10 पर्सेंट जबकि सीनियर सिटीजन ग्राहकों को एडिशनल 50 बेसिस पॉइंट यानी 7.60 पर्सेंट तक ब्याज मिलता है। इस स्कीम के तहत ग्राहक अधिकतम 2 करोड़ रुपये तक की राशि जमा कर सकते हैं।

कुछ इस तरह खुलवा सकते हैं इस स्कीम में खाता: एसबीआई अमृत कलश एफडी स्कीम में इन्वेस्ट करने के लिए ग्राहक अपने नजदीकी किसी भी शाखा में जा सकते हैं। इसके लिए आपके डॉक्यूमेंट के तौर पर आधार कार्ड, पैन कार्ड, पासपोर्ट साइज फोटो, मोबाइल नंबर और ईमेल आईडी की जरूरत पड़ेगी।

संक्षिप्त समाचार

विश्व ब्लिट्ज शतरंज चैंपियनशिप 2024 में फीडे नें की बदलावों की घोषणा

न्यू यॉर्क , यूएसए (एजेंसी)। शतरंज की दुनिया में एक बड़ा बदलाव होने जा रहा है। विश्व शतरंज संघ ने विश्व ब्लिट्ज चैंपियनशिप 2024 के लिए नए फॉर्मेट की घोषणा की है, जिसमें स्विस सिस्टम और नॉकआउट चरण का मिश्रण शामिल होगा। इस नए फॉर्मेट से न केवल चैंपियनशिप का रोमांच बढ़ेगा, बल्कि खिलाड़ियों की गुणवत्ता और और उनकी लय की यह कड़ी परीक्षा होगी ।इस बार, पुरुषों वर्ग में 13 राउंड और महिलाओं के वर्ग में 11 राउंड का स्विस लीग होगा। इसके बाद शीर्ष 8 खिलाड़ी नॉकआउट चरण के लिए क्वालीफाई करेंगे। नॉकआउट चरण में हर मैच चार खेलों का होगा, जिससे खिलाड़ियों को अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का मौका मिलेगा और दर्शकों के लिए भी रोमांचक क्षण बनेंगे ।फीडे के सीईओ एमिल सुतोवस्की ने कहा, इस साल फिडे ने फॉर्मेट में बदलाव किया है, जिससे चैंपियनशिप को और अधिक रोमांचक बनाया जा सके। नॉकआउट फॉर्मेट में शीर्ष खिलाड़ियों के बीच सीधे मुकाबले होंगे, जिससे चैंपियन का फैसला किया जाएगा। यह फॉर्मेट टीवी प्रसारण के लिए भी बहुत उपयुक्त होगा।

मोइन अली ने इंटरनेशनल क्रिकेट से रिटायरमेंट लिया

- 2019 और 2022 की वर्ल्ड चैंपियन टीम का हिस्सा रहे हैं; 2014 में डेब्यू किया था

लंदन (एजेंसी)। इंग्लिश ऑलराउंडर मोइन अली ने इंटरनेशनल क्रिकेट के सभी फॉर्मेट से रिटायरमेंट ले लिया है। 37 साल के ऑलराउंडर ने यह फैसला ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने जा रही वाइट बॉल सीरीज के लिए इंग्लिश टीम में मौका नहीं मिलने के बाद लिया है। 2019 में वनडे और 2022 में टी-20 वर्ल्ड कप जीतने वाले 37 साल के मोईन ने डेली मेल को दिए इंटरव्यू में कहा, मैं 37 साल का हूं और इस महीने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ होने वाली सीरीज के लिए मुझे नहीं चुना गया। मैंने इंग्लैंड के लिए काफी क्रिकेट खेला है। अब अगली पीढ़ी के लिए समय आ गया है, जिसके बारे में मुझे बताया गया। मुझे लगा कि यह सही समय है। मैंने अपना काम कर दिया है। मोइन ने आखिरी इंटरनेशनल मैच टी-20 वर्ल्ड कप-2024 में खेला था। गयाना में भारत के खिलाफ खेले गए इस सेमीफाइनल मुकाबले को इंग्लिश टीम को पराजय झेलनी पड़ी थी।2022 में टी-20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद परिवार के साथ मोइन अली।

एक साल पहले रिटायरमेंट से वापसी की थी, एशेज टीम में शामिल – मोइन अली ने 2021 में भी रिटायरमेंट का ऐलान किया था। उसके 2 साल बाद 2023 में टेस्ट क्रिकेट के रिटायरमेंट से वापसी की थी। तब वे जैक लीच की जगह एशेज सीरीज के लिए चुनी गई इंग्लिश टीम में शामिल किए गए थे। मोइन ने टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स, इंग्लैंड के हेड कोच ब्रैंडन मैकुलम और इंग्लैंड क्रिकेट के मैनेजिंग डायरेक्टर रॉबर्ट कीसे से बातचीत के बाद यह फैसला लिया था। इंग्लिश बोर्ड ने इस पोस्ट के जरिए मोइन के रिटायरमेंस से वापसी के फैसले की जानकारी दी थी।

366 विकेट लिए और 6678 रन भी बनाए – मोइन अली ने 2014 में इंटरनेशनल क्रिकेट में डेब्यू किया था। उन्होंने बतौर ऑलराउंडर 68 टेस्ट, 138 वनडे और 92 टी20 इंटरनेशनल मैच खेले। उन्होंने ऑल फॉर्मेट में इंग्लैंड के लिए 8 शतक और 28 अर्द्धशतक सहित 6678 रन और 366 विकेट लिए हैं।

बेलारूसी स्टार एरिना सबालेंका ने जीता यूएस ओपन

- अमेरिका की जेसिका पेगुला को 7-5, 7-5 से हराया
- सिनर-फिट्ज के बीच मेंस सिंगल्स का फाइनल

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। बेलारूसी स्टार एरिना सबालेंका ने यूएस ओपन टेनिस चैंपियनशिप का खिताब जीत लिया है। दूसरी वरीयता प्राप्त सबालेंका ने अमेरिका की जेसिका पेगुला को 7-5, 7-5 से हराया। यह मुकाबला एक घंटे 53 मिनट तक चला। 26 साल की सबालेंका पहली बार साल के आखिरी ग्रैंड स्लैम की सिंगल्स कैटेगरी में चैंपियन बनी हैं। सबालेंका का यह ओवरऑल 5वां ग्रैंड स्लैम टाइटल है। वे इसी साल ऑस्ट्रेलिया ओपन 2024, 2023 में भी चैंपियन बनी थीं। वहीं, डबल्स कैटेगरी में 2021 में ऑस्ट्रेलियन ओपन और 2019 में यूएस ओपन का खिताब जीता था।

सिमरन ने महिलाओं की 200 मीटर टी12 फाइनल में कांस्य पदक जीता

पेरिस (एजेंसी)। दृढ़ संकल्प के साथ सभी बाधाओं का सामना करते हुए भारत की सिमरन ने शनिवार को यहां पैरालंपिक खेलों में महिलाओं की 200 मीटर टी12 फाइनल में कांस्य पदक जीता। मौजूदा विश्व चैंपियन सिमरन 24.75 सेकंड के व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ समय के साथ पोडियम पर तीसरे स्थान पर रही। पैरालंपिक में टी12 वर्गीकरण दृष्टिबाधित एथलीटों के लिए है। 24 वर्षीय सिमरन का जन्म समय से पहले हुआ था। उसने 10 सप्ताह इनक्यूबेटर में बिताए जहां पता चला कि वह दृष्टिबाधित है। इस साल जापान के कोबे में विश्व चैंपियन बनने वाली भारतीय को अपने पूरे जीवन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसमें उनके पिता की पुरानी बीमारी और अंततः निधन भी शामिल था।

इंडिया बी ने इंडिया ए को 76 रन से हराया

पेसर यश दयाल को 3 विकेट; इंडिया ए की टीम 198 रन पर ऑलआउट

नईदिल्ली (एजेंसी)। दलीप ट्रॉफी के चौथे दिन इंडिया बी ने इंडिया ए को 76 रन से हरा दिया। टीम की तरफ यश दयाल ने सबसे ज्यादा 3 विकेट लिए, जबकि मुकेश कुमार और नवदीप सैनी को 2-2 विकेट मिले। इंडिया ए को जीत के लिए 275 रन का टारगेट मिला था। शुरूआती झटकों के बाद के एल राहुल ने शानदार बल्लेबाजी की और हाफ सेंचुरी लगाई। उनके अलावा आकाशदीप ने 42 बॉल पर 43 रन बनाए। आखिरी सेशन में टीम को मैच जीतने के लिए 143 रन की जरुरत थी, लेकिन टीम 198 रन पर ऑलआउट हो गई। आखिरी दिन रविवार को इंडिया बी की दूसरी पारी 184 रन पर ऑलआउट हो गई। इससे पहले, इंडिया बी ने दिन की शुरुआत 150/6 के स्कोर से की। ऋषभ पंत ने 61 रन की पारी खेली। इंडिया-ए के लिए आकाश दीप ने 5 विकेट झटके, जबकि खलील अहमद को 3 विकेट मिले।

के एल राहुल ने पारी को संभाला

275 रन का पीछा करने उतरी इंडिया ए की शुरुआत खराब रही। टीम ने अपना पहला विकेट 7 रन पर गंवा दिया। इसके बाद कप्तान शुभमन गिल (21) और रियान पराग (31) ने तेजी से खेलते हुए टीम का स्कोर 50 के पार पहुंचाया। शुभमन और रियान के आउट होने के बाद इंडिया ए के पारी लड़खड़ा गई। टीम ने 2 ओवर में 2 विकेट गंवा दिया। मिडिल ऑर्डर बैट्समैन ध्रुव जुरेल और तनुष कोटियां शून्य के स्कोर पर पवेलियन लौट गए, लेकिन के एल राहुल एक छोर से टिके रहे। उन्होंने शानदार बल्लेबाजी करते हुए हाफ सेंचुरी बनाई। राहुल को 57 रन पर मुकेश कुमार ने पंत के हाथों कैच आउट कराया। इसके बाद बल्लेबाजी करने आए आकाशदीप ने शानदार बल्लेबाजी की लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके। उन्होंने 42 बॉल पर 43 रन की पारे खेली। पारी में उन्होंने 3 चौके और 4 छक्के लगाए। उन्हें शॉट लेग पर खड़े मुशीर खान ने रन आउट किया।

इंडिया-सी ने इंडिया-डी को 4 विकेट से हराया

एक अन्य मुकाबले में शनिवार को इंडिया-सी ने इंडिया-डी को 4 विकेट से हराया। 233 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंडिया-सी की टीम ने आर्यन जुयाल के 47 और कप्तान ऋतुराज गायकवाड के 46 रन के चलते जीत दर्ज की। इंडिया-डी की तरफ से सारांश जैन ने 4 विकेट लिए।

ऋषभ पंत ने हाफ सेंचुरी लगाई

पहली पारी में इंडिया-बी ने इंडिया-ए को 231 रन पर ऑलआउट कर दिया था। जिसके आधार पर उन्हें 90 रन की बढ़त मिली। इसके बाद दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी इंडिया-बी की शुरुआत खराब रही।

टीम के दोनों ओपनर्स 14 रन के अंदर पवेलियन लौट गए। जबकि पहली पारी के शतकवीर मुशीर खान बिना खाता खोले आउट हो गए। इसके बाद बल्लेबाजी करने आए सरफराज खान और ऋषभ पंत ने इंडिया-बी की पारी को संभाला। सरफराज ने 46 और ऋषभ ने 61 रन बनाए। पंत ने अपनी पारी में 9 चौके और 2 छक्के लगाए।

सरफराज ने आकाश दीप को एक ओवर में 5 चौके लगाए

इंडिया-बी की दूसरी पारी के 10वें ओवर में सरफराज खान ने तेज गेंदबाज आकाश दीप को 5 गेंद पर 5 चौके लगाए। सरफराज ने पहली गेंद डॉट करने के बाद दूसरी गेंद पर कट शॉट, तीसरी गेंद पर कवर ड्राइव, चौथी गेंद पर फ्लिक, पांचवीं गेंद पर स्ट्रैट ड्राइव और आखिरी गेंद पर कट शॉर्ट के साथ 5 बाउंड्री लगाई।

आर्यन जुयाल और ऋतुराज गायकवाड ने मैच जिताया

इंडिया-सी के कप्तान गायकवाड और साईं सुदर्शन ने शानदार शुरुआत दी। ऋतुराज ने 46 वहीं साईं सुदर्शन ने 22 रन की पारी खेली। इसके बाद बल्लेबाजी करने आए आर्यन जुयाल ने रजत पाटीदार के साथ मिलकर शानदार खेल दिखाया। आर्यन ने टीम की तरफ से सबसे ज्यादा 47 और रजत पाटीदार ने 44 रन की पारी खेली। इन दोनों के आउट होने के बाद विकेटकीपर बल्लेबाज अभिषेक पोरेल (35) ने मानव सुथार (19) के साथ मिलकर इंडिया-सी को मैच जीता दिया। इंडिया-डी की तरफ से स्पिनर सारांश जैन ने 4 विकेट लिए।

एंड्रयू फ्लिंटॉफ का कोचिंग में डैब्यू, इंग्लैंड लायन्स के मुख्य कोच बने

लंदन (एजेंसी)। पूर्व दिग्गज हरफनमौला एंड्रयू 'फ्रेडी' फ्लिंटॉफ को शनिवार को इंग्लैंड लायन्स (इंग्लैंड की ए टीम) का मुख्य कोच नियुक्त किया गया। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान अपने खेल करियर को समाप्त करने के बाद से टेलीविजन चैनलों से जुड़े रहे है, लेकिन अब वह कोचिंग के क्षेत्र में नई शुरुआत करेंगे।

फ्लिंटॉफ ने नई जिम्मेदारी मिलने के बाद कहा कि मैं इंग्लैंड लायन्स के साथ यह भूमिका निभाने के लिए अविश्वसनीय रूप से उत्साहित हूं। यह देश की कुछ बेहतरीन उभरती प्रतिभाओं के साथ काम करने और पुरुषों टीम के भविष्य को आकार देने में मदद करने का एक शानदार अवसर है। फ्लिंटॉफ को दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया के आगामी दौरों के साथ-साथ भारत ए और जिम्बाब्वे के खिलाफ अगले सत्र में होने वाले मुकाबलों की जिम्मेदारी दी गई है।

पिछले साल क्रिकेट में वापसी के बाद से 46 साल के फ्लिंटॉफ टी20 विश्व कप में सहायक कोच रहे हैं। उन्होंने 'द हंड्रेड' में नॉर्दर्न सुपरचार्जर्स का मार्गदर्शन किया। वह श्रीलंका के खिलाफ मौजूदा टेस्ट के लिए इंग्लैंड के बल्लेबाजी कोच मार्कस ट्रेस्कोथिक की जगह ले रहे हैं। इंग्लैंड के सबसे महान हरफनमौला खिलाड़ियों में शामिल फ्लिंटॉफ ने इंग्लैंड के लिए 79 टेस्ट खेले है। वह 2005 में एशेज श्रृंखला के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहे हैं। इंग्लैंड एवं वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने कहा कि फ्लिंटॉफ ''बेहतरीन क्षमता वाले आवेदकों के समूह में से उत्कृष्ट उम्मीदवार थे।

ईसीबी पुरुष प्रदर्शन निदेशक एड बर्नी ने कहा कि एंड्रयू (फ्लिंटॉफ) अपने प्रेरणादायक नेतृत्व, कोचिंग विशेषज्ञता और खेल की गहरी समझ के कारण सभी उम्मीदवारों में सर्वश्रेष्ठ थे। फ्लिंटॉफ अक्टूबर में अपनी इस भूमिका को शुरू करेंगे और आगामी वर्ष तक कार्यभार संभालेंगे। ईसीबी का लायन्स कार्यक्रम युवा क्रिकेट प्रतिभाओं को विकसित करने में मदद करता है।

पेरिस पैराओलंपिक

ईरान का जैवलिन थ्रोअर अयोग्य घोषित, गोल्ड में बदला नवदीप सिंह का सिल्वर मेडल

पेरिस (एजेंसी)। पेरिस पैरालंपिक में शनिवार को पुरुषों की भाला फेंक एफ41 फाइनल में नाटकीय प्रदर्शन के बीच ईरान के बेत सयाह सादेघ को अयोग्य घोषित किए जाने के बाद भारत के नवदीप सिंह के रजत पदक को स्वर्ण में बदल दिया गया। यह पुरुषों की भाला एफ41 श्रेणी में भारत का पहला स्वर्ण पदक है। नवदीप का पहला प्रयास फाउल रहा लेकिन उन्होंने दूसरे प्रयास में 46.39 मीटर के थ्रो के साथ शानदार वापसी की।

तीन साल पहले टोक्यो पैरालंपिक में चौथे स्थान पर रहने वाले नवदीप के तीसरे थ्रो ने स्टेडियम को रोमांचित कर दिया। उन्होंने 47.32 मीटर के विशाल थ्रो के साथ पैरालंपिक रिकॉर्ड को तोड़ दिया और बढ़त बना ली। सादेघ ने हालांकि अपने पांचवें प्रयास में भारतीय खिलाड़ी से बेहतर प्रदर्शन करते हुए 47.64 मीटर का रिकॉर्ड थ्रो किया। फाइनल की समाप्ति के कुछ समय बाद ईरान के खिलाड़ी को अयोग्य घोषित कर दिया गया, जिसके कारण नवदीप ने शीर्ष स्थान हासिल किया। सयाह को बार-बार आपत्तिजनक झंडा प्रदर्शित करने के लिए अयोग्य घोषित किया गया। वह अपनी हरकतों से स्वर्ण पदक गवां बैठे। अंतरराष्ट्रीय पैरालंपिक समिति के नियम एथलीटों को आयोजन में कोई भी राजनीतिक संकेत देने से रोकते हैं और सयाह को गैर-खेल/अनुचित आचरण के लिए अंतिम परिणामों से बाहर कर दिया गया था। इस स्पर्धा का रजत विश्व रिकॉर्ड धारक चीन के सन पेंगजियांग (44.72) के नाम रहा जबकि इराक के नुखाइलावी वाइल्डन (40.46) ने कांस्य पदक जीता। एफ41 श्रेणी छोटे कद के एथलीटों के लिए है।

नवदीप ने इस स्वर्ण पदक के साथ तोक्यो खेलों में चौथे स्थान पर रहने की कसक को दूर की। आयकर विभाग में निरीक्षक के पद पर तैनात नवदीप ने 2017 में खेल में आने के बाद से राष्ट्रीय स्तर पर पांच बार पदक जीते हैं। उन्होंने इस साल की शुरुआत में पैरा-विश्व चैंपियनशिप में कांस्य पदक जीता था।

कौन है नवदीप सिंह – जापान के काबे में 2024 विश्व पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीतकर नवदीप ने पेरिस खेलों के लिए क्वालीफाई किया। नवदीप हरियाणा के बुआना लाखू गांव के रहने वाले हैं। उनके पिता दलबीर सिंह ने राष्ट्रीय स्तर पर कुश्ती में भाग लिया था। युवा नवदीप पहलवान बनने की राह पर था, लेकिन किस्मत को कुछ और ही मंजूर था। 2017 में पैरा-थ्रोअर संदीप चौधरी को देखकर उन्होंने यह गेम अपनाई। 4 फीट 4 इंच लंबे सिह के लिए यह गेम मुश्किल थी क्योंकि भाले का आकार ही 7.21 फीट होता था। चौधरी ने नवदीप को ट्रेन किया। अंततः दुबई में नवदीप ने 2017 एशियाई युवा पैरा खेलों में स्वर्ण पदक जीता। 23 वर्षीय खिलाड़ी ने इसी साल अपने पिता को खो दिया था। लेकिन उन्होंने पर्याप्त मानसिक ताकत दिखाकर पेरिस में मेडल जीत लिया।

भारत की मेडल टेली – भारत ने पेरालिपिंक में अब 6 गोल्ड, 10 सिल्वर और 13 ब्रॉन्ज के साथ कुल 29 मेडल जीत लिए हैं। इसमें सबसे ज्यादा मेडल पेरा एथलेटिक्स में ही आए हैं। इस कैटेगरी में तीन गोल्ड, 7 सिल्वर और 7 ब्रॉन्ज समेत 17 मेडल आए हैं। पैरा आर्चरी में एक गोल्ड समेत 2 मेडल, पैरा बैडमिंटन में 1 गोल्ड, 2 सिल्वर और 2 ब्रॉन्ज समेत 5 मेडल, पैरा जूडो में एक तो शूटिंग पैरा स्पोर्ट्स में 4 मेडल जीते। भारत इसी के साथ मेडल टेली में 18वें स्थान पर आ गया है।

ऑस्ट्रेलिया -स्कॉटलैंड

कैमरून ग्रीन के कहर में दब गई स्कॉटलैंड टीम, सीरीज में हो गए क्लीन स्विप

एडिनबर्ग (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया क्रिकेट टीम ने स्कॉटलैंड को तीन टी20 मैचों की सीरीज में क्लीन स्विप कर दिया है। एडिनबर्ग के मैदान पर खेले गए तीसरे टी20 में भी ऑस्ट्रेलिया ने कैमरून ग्रीन के ताबड़तोड़ अर्धशतक की मदद से 6 विकेट से जीत हासिल की। स्कॉटलैंड ने पहले खेलते हुए मुन्से ने 25 तो ब्रैंडन मैकमुलेन ने 39 गेंदों पर 56 रन बनाए और स्कोर 9 विकेट पर 149 तक पहुंचा। जवाब में खेलने उतरी ऑस्ट्रेलियाई टीम की खराब शुरूआत रही लेकिन मार्श ने 31 और कैमरून ग्रीन ने 62 रन बनाए और 17वें ओवर में टीम को जीत दिला दी। ऑस्ट्रेलिया ने पहला टी20 7 विकेअ तो दूसरा टी20 70 रन से जीता था।

स्कॉटलैंड – 149-9 (20 ओवर) – मुन्से और हैरिस ने ओपनिंग की। हैरिस 12 तो मुन्से 25 रन बनाकर आऊट हो गए। एक बार फिर से ब्रैंडन मैकमुलेन ने एक छोर संभाला और 39 गेंदों पर 3 चौके और 3 छक्कों की मदद से 56 रन बनाए। कप्तान बैरिंगटन 8 तो मैथ्यू क्रॉस 7 ही न बना पाए। मध्यक्रम में माइकल ने 13 और मार्क वॉट ने 12 गेंदों पर 18 रन बनाए और टीम को 149 तक पहुंचा दिया। ऑस्ट्रेलिया के लिए गेंदबाज एरोन हार्डी ने 18 रन देकर 2, एबॉट ने 28 रन देकर 2 तो कैमरून ग्रीन ने 35 रन देकर 3 विकेट लिए।

ऑस्ट्रेलिया – 153-4 (16.1 ओवर)– ऑस्ट्रेलिया के ओपनर जेक फ्रेजर 0 पर आऊट हो गए। ट्रेविस हेड 12 ही रन बना पाए। तभी कप्तान मिशेल मार्श ने 23 गेंदों पर तीन चौके और 2 छक्कों की मदद से 31 रन बनाए। कैमरून ग्रीन ने एक छोर संभाला और तेजतर्रार शॉट लगाए। उन्हें टिम डेविड (14 गेंदों पर 25 रन) का साथ मिला। ग्रीन ने 39 गेंदों पर 2 चौके और 5 छक्कों की मदद से 62 रन बनाए। एरोन हार्डी ने 11 रन बनाकर टीम को जीत दिला दी।

दोनों टीमों की प्लेइंग 11

ऑस्ट्रेलिया –जेक फ्रेजर-मैकगर्क, ट्रैविस हेड, मिशेल मार्श (कप्तान), जोश इंगलिस (विकेटकीपर), कैमरून ग्रीन, टिम डेविड, मार्कस स्टोइनिस, कूपर कोनोली, आरोन हार्डी, सीन एबॉट, एडम ज़म्पा

स्कॉटलैंड – जॉर्ज मुन्से, ओली हेयर्स, ब्रैंडन मैकमुलेन, रिची बेरिंगटन (सी), मैथ्यू क्रॉस (डब्ल्यू), माइकल लीस्क, मार्क वॉट, जैक जार्विस, क्रिस्टोफर सोल, सफयान शरीफ, ब्रैडली करी

जो रूट का प्रदर्शन देख गद्गद हुए केन विलियमसन, बोले- मैं उनका फैन हूं

लंदन (एजेंसी)। न्यूजीलैंड के अनुभवी बल्लेबाज केन विलियमसन ने इंग्लैंड के जो रूट की जमकर तारीफ की है जोकि श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज के दौरान शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं। रूट ने श्रीलंका के खिलाफ पहले 2 मैचों में 3 शतक लगाए हैं। 33 वर्षीय खिलाड़ी ने इंग्लैंड के पूर्व कप्तान एलिस्टर कुक को पछाड़कर श्री लायंस के लिए टेस्ट प्रारूप में सर्वाधिक शतक (34) का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है। रूट अब कुक के टेस्ट रनों का रिकॉर्ड तोड़ने से सिर्फ 82 रन दूर हैं। कीवी स्टार ने क्रीज पर शानदार प्रदर्शन के लिए रूट की प्रशंसा की। उन्होंने स्वीकार किया कि वह अंग्रेज प्रशंसक हैं। विलियमसन ने कहा कि रूट लंबे समय से कुछ और ही रहे हैं। वह कुछ वर्षों में काफी कुछ हासिल कर सकते हैं। यह अविश्वसनीय है। विलियमसन बोले- मैं उनका बहुत बड़ा प्रशंसक रहा हूं। सिर्फ उनका ही नहीं, बल्कि अन्य खिलाड़ी (विराट कोहली और स्टीवन स्मिथ) भी अद्भुत हैं। बता दें कि भारतीय सरजमीं पर न्यूजीलैंड का टेस्ट रिकॉर्ड काफी खराब रहा है। टीम ने यहां 36 मुकाबले खेले हैं जिसमें 2 में ही उन्हें जीत हासिल हो पाई है। इससे कैसे पार पाएंगे, सवाल पर केन विलियमसन ने कहा कि हमें (एशिया में) कई तरह से चुनौती मिलने वाली है।

और 'फैब फोर' के अन्य दो सदस्यों, विराट कोहली और स्टीवन स्मिथ के

संक्षिप्त समाचार

हरियाणा में मंत्रियों के बाद पूर्व विधायक सरदार बल्कोर सिंह ने छोड़ी भाजपा

सिरसा, एजेंसी। जब से विधानसभा चुनाव में भाजपा की ओर से उम्मीदवारों का ऐलान हुआ है तब से लगातार भाजपा में विरोध बढ़ता जा रहा है और कई नेता भाजपा पार्टी से नाराज चल रहे हैं और इस्तीफों का दौर जारी है। इसी कड़ी में आज कालांवाली के पूर्व विधायक व भाजपा के वरिष्ठ नेता बलकौर सिंह ने भी भाजपा को अलविदा कह दिया है। पूर्व विधायक के साथ जिला पार्षद, ब्लॉक समिति के अध्यक्ष ब्लॉक समिति के मेंबर व अनेक सरपंचों पूर्व सरपंचों पंचों व पूर्व नगर परिषद और भाजपा के पदाधिकारी ने एक साथ भाजपा छोड़ कांग्रेस में शामिल होने का मन बना लिया है और इसी को लेकर आज दिल्ली के लिए रवाना हो गए हैं। पूर्व विधायक बलकौर सिंह ने अपना इस्तीफा पार्टी को भेज दिया है। मीडिया से बातचीत करते हुए पूर्व विधायक बलकौर सिंह ने बताया कि 2019 से वो लगातार भाजपा में पूरी निष्ठा के साथ कार्य कर रहे है। उन्होंने बताया कि जिस व्यक्ति को भाजपा ने यहां से टिकट दिया है पहले भाजपा की तरफ से ही उन्हें यह कहकर निकल गया था कि वह नशे का व्यापार करते हैं। लेकिन, अब उसी को दोबारा टिकट दे दी है। उन्होंने कहा कि वह नशा बेचने वालों के खिलाफ हैं। इसी को लेकर उन्होंने अब भाजपा को को छोड़ अपने साथियों सहित कांग्रेस में शामिल हो रहे हैं।

सैकड़ों जिंदगियों का रखवाला बना ट्रैकमैन, 500 मीटर दौड़ लगाकर रुकवाई

कारवार, एजेंसी। बहादुरी और विलक्षण सतर्कता का प्रदर्शन करते हुए ट्रैकमैन महादेव ने कोंकण रेलवे के कुमता और होन्नावर स्टेशन के बीच एक बड़ी ट्रेन दुर्घटना को टाल दिया। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, घटना शुक्रवार सुबह करीब 4.50 बजे हुई जब नियमित ड्यूटी पर तैनात महादेव ने क्षेत्र में पटरी के जोड़ पर अधूरी वेल्डिंग देखी। उस समय तिरुवनंतपुरम-दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस इस मार्ग पर आ रही थी। महादेव ने खतरे को भांपते हुए तुरंत ट्रेन रोकने के लिए कुमटा स्टेशन से संपर्क किया। हालांकि, ट्रेन पहले ही स्टेशन से निकल चुकी थी और खतरनाक खंड की ओर तेजी से बढ़ रही थी। महादेव ने बिना किसी डर के सीधे ट्रेन चालक (लोको पायलट) से संपर्क करने का बहुत प्रयास किया, लेकिन संपर्क स्थापित नहीं हो सका। कुछ करने के लिए अब कुछ मिनट ही बचे थे, ऐसे में उन्होंने तुरंत दूसरा निर्णय लिया। वह पटरियों पर तेजी से दौड़ा और केवल पांच मिनट में आधा किलोमीटर की दूरी तय कर ली। अधिकारियों ने बताया कि ऐन वक्त पर उन्होंने ट्रेन को लाल झंडी दिखाकर रोक दिया और संभावित आपदा को टाल दिया। वेल्डिंग का काम पूरा होने के बाद राजधानी एक्सप्रेस सुरक्षित रूप से कारवार के लिए फिर से रवाना हुई। कोंकण रेलवे जोन के अधिकारियों ने महादेव की सराहना करते हुए उन्हें एक नायक करार दिया। उनकी इस बहादुरी पर कोंकण रेलवे के सीएमडी संतोष कुमार झा ने उन्हें 15,000 रुपये का नकद पुरस्कार दिया।

आरपीएफ महानिदेशक ने हॉट स्प्रिंग्स मेमोरियल में पुलिस शहीदों को श्रद्धांजलि दी

लद्दाख, एजेंसी। लद्दाख (वीएनएस)। रेलवे सुरक्षा बल के महानिदेशक मनोज यादव के नेतृत्व में 3 सितंबर की सुबह विभिन्न राज्य पुलिस और केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों (सीएपीएफ) का प्रतिनिधित्व करने वाले पुलिस अधिकारियों का 28 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल लद्दाख में हॉट स्प्रिंग्स मेमोरियल में एकत्र हुआ। एन. प्रकाश रेड्डी, डीआइजी, तेलंगाना पुलिस समूह के उपनेता थे। दीपक कुमार शर्मा, ऋ ने पुलिस प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में छत्तीसगढ़ पुलिस का प्रतिनिधित्व किया, जिन्होंने स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की। एकजुटता दिखाने के लिए आईटीबीपी, आईटीबीएफ और भारतीय सेना के वीर अधिकारी और जवान जो अत्यधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के बीच ष्ट पर कड़ी निगरानी रख रहे हैं, वे भी शहीदों को सलामी देने के लिए पुलिस दल में शामिल हुए। पुलिस प्रतिनिधिमंडल को 86 वर्षीय वयोवृद्ध और जीवित किंवदंती और गश्ती दल के सदस्य

सोनम दोरजे से मिलने का सम्मान मिला, जो 21 अक्टूबर 1959 के दौरान चीनी सैनिकों के खिलाफ बहादुरी से खड़े थे जहां उन्हें पकड़ लिया गया था। उनका लचीलापन और साहस इतिहास का एक प्रेरक अध्याय बना हुआ है। समुद्र तल से 15,400 फीट की ऊंचाई पर वास्तविक नियंत्रण रेखा (ष्ट) के पास ऊबड़-खाबड़ और दुर्गम इलाके में स्थित, यह स्थल उन दस सीआरपीएफ जवानों के ऐतिहासिक और वीरतापूर्ण बलिदान का प्रमाण है, जिन्होंने रक्षा करते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। 21 अक्टूबर, 1959 को राष्ट्र पूर्वी लद्दाख के बोहड़ और उजाड़ इलाके में स्थित यह स्मारक भारतीय पुलिस बलों के लिए एक पवित्र स्थल रहा है, जहाँ इन बहादुर अधिकारियों की याद में हर साल श्रद्धांजलि दी जाती है। यह समारोह, जो 1960 में स्मरण के संकेत के रूप में शुरू हुआ था। देश भर में सेवारत और सेवानिवृत्त पुलिस अधिकारियों के लिए एक अत्यधिक सम्मानित परंपरा बनी हुई है। इस वर्ष की तीर्थयात्रा एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई है, क्योंकि मनोज यादव प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने वाले रेलवे सुरक्षा बल के पहले महानिदेशक बने। विभिन्न बलों के पुलिस अधिकारियों की एक टीम के साथ उनकी भागीदारी, भारत में विभिन्न पुलिस बलों के बीच साझा की गई एकता, ताकत और सौहार्द को मजबूत करती है। 1958 में बल की स्थापना के बाद से ड्यूटी के दौरान अपने प्राणों की आहुति देने वाले रेलवे सुरक्षा बल के 1011 बहादुर कर्मियों को यह तीर्थयात्रा समर्पित करते हुए, आरपीएफ महानिदेशक ने बहादुरों द्वारा अनुकरणीय कर्तव्य, वीरता और बलिदान की भावना के प्रति आरपीएफ की प्रतिबद्धता दोहराई। 1959 के दिल, जिनकी यादें पुलिस इतिहास के इतिहास में हमेशा के लिए अंकित रहेंगी। महत्वपूर्ण कार्यक्रम में उनकी भागीदारी कानून प्रवर्तन समुदाय के सभी सदस्यों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यह राष्ट्र की सेवा में पुलिस अधिकारियों द्वारा किए गए बलिदानों की एक मार्मिक याद दिलाता है।

असम के कुछ जिलों में आधार कार्ड बनवाने के लिए लोगों को देने होंगे एनआरसी नंबर

दिसपुर, एजेंसी। असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा ने शनिवार को जानकारी दी कि कुछ जिलों में आधार कार्ड बनवाने के लिए लोगों को एनआरसी नंबर देने होंगे। असम में अवैध घुसपैठ का मामला काफी पहले से बना हुआ है। हाल ही में पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश में हुए तख्तापलट के बीच घुसपैठियों की संख्या पहले से और भी ज्यादा हो गई है। इस पर प्रदेश सरकार लगातार नजर बनाए हुए है। असम के कुछ विशेष जिलों में जनसंख्या से अधिक लोगों ने आधार कार्ड का आवेदन किया। इसलिए हम उन्हें आधार कार्ड देंगे, जिसके पास एनआरसी नंबर हो, ताकि घुसपैठियों को नागरिकता ना मिले। बता दें कि हाल की रिपोर्ट से इस बात की जानकारी सामने आई है कि असम में घुसपैठियों की संख्या में वृद्धि हुई है। इसी को देखते हुए सरकार ने अवैध प्रवेश को रोकने के लिए एक्शन तेज कर दिया है। असम सरकार के हवाले से मिली जानकारी के अनुसार, जनवरी 2024 से अब तक 54 घुसपैठिये पकड़े गए हैं। इनमें करीमगंज जिले में 48, बोंगईगांव जिले में 4, और हाफलोंग जीआरपी और धुबरी जिले में एक-एक घुसपैठिए पकड़े गए।

कांग्रेस ने युवाओं को बनाया खिलाड़ी, बीजेपी युवाओं को बना रही है नशेड़ी : भूपेंद्र हुड्डा

चंडीगढ़, एजेंसी। पूर्व मुख्यमंत्री व नेता प्रतिपक्ष भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा है कि भाजपा ने प्रदेश के युवाओं को नशे के दलदल में धकेल दिया है। इसके चलते लाखों परिवार बर्बाद हो चुके हैं और हजारों लोग अपनी जान गंवा चुके हैं। कांग्रेस सरकार ने जिसे हंसता-खेलता व आगे बढ़ता हरियाणा बनाया था, उसे बीजेपी ने नशे में उड़ता हरियाणा बना डाला है। कांग्रेस ने जिन युवाओं को खिलाड़ी बनाने की नीतियां तैयार की थीं, बीजेपी ने उन युवाओं को नशेड़ी बनाने की नीतिया लागू की हैं।

हुड्डा अपने आवास पर सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों से बातचीत कर रहे थे। सामाजिक कार्यकर्ताओं ने हुड्डा से कांग्रेस सरकार बनने पर नशे पर नकेल कसने की मांग की। उनसे बातचीत में पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारे युवा आए दिन नशे के चलते मौत का शिकार हो रहे हैं, लेकिन सरकार ना तो नशे पर रोक लगा रही है और ना ही तस्करों पर कोई कार्रवाई कर रही है।

सरकारी आंकड़े बताते हैं कि प्रदेश में हर वर्ष एक लाख से ज्यादा लोग नशे की वजह से अस्पतालों में पहुंच रहे हैं। अकेले सिरसा में ही दो साल में 65 लोगों की मौत नशे की ओवरडोज से हो चुकी है। बीजेपी राज में 400 से ज्यादा लोग नशे की ओवर डोज से अपनी जान गंवा चुके हैं। दर्जनों लोगों की जहरीली शराब के चलते मौत हो चुकी है।

नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो की रिपोर्ट में सामने आया है प्रदेश के 22 में से 13 जिले तो बुरी तरह नशे की चपेट में हैं। जबकि जमीनी हकीकत तो यह है कि बीजेपी सरकार ने गांव-गांव, गली-गली, हरेक मोहल्ले में नशा पहुंचा दिया है। हर जगह खुलेआम सिंथेटिक नशा बिक रहा है। लेकिन नशा कारोबारियों किसी भी तरह की कोई कार्रवाई नहीं होती। इससे स्पष्ट है कि इस कारोबार को सरकार का संरक्षण प्राप्त है। भूपेंद्रसिंह हुड्डा ने बताया कि 2014 तक प्रदेश में नशे के चलते अस्पताल पहुंचने वालों की संख्या 1400 थी, जो अब बढ़कर अकेले सिरसा में 35 हजार से ज्यादा हो चुकी है। हर साल करीब एक लाख युवा नशे के चलते इलाज के लिए अस्पतालों में पहुंच रहे हैं। कई युवा तो इलाज के लिए आते ही नहीं और अपनी पूरी जिंदगी बर्बाद कर देते हैं। हुड्डा ने कहा ने भरोसा दिलाया कि प्रदेश में कांग्रेस सरकार बनने पर नशा, अपराध और बेरोजगारी तीनों पर नकेल कसी जाएगी। क्योंकि बेरोजगारी ही नशे और अपराध की जननी है। आज हरियाणा बेरोजगारी के मामले में पूरे देश में नंबर वन है। इसीलिए प्रदेश नशे और अपराध के मामले में भी पहले पायदान पर पहुंच गया है। अब हरियाणा को इस बीमारी से निजात दिलाने का समय आ गया है।

एससी/एसटी एक्ट में यौन अपराधों को लेकर हाई कोर्ट का महत्वपूर्ण निर्देश

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली हाईकोर्ट का कहना है कि अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति अधिनियम के तहत दर्ज यौन अपराधों में भी जमानत याचिका पर सुनवाई की वीडियोग्राफी अनिवार्य है। हाईकोर्ट ने यह बात दिल्ली में नाबालिग के बलात्कार और हत्या मामले में आरोपी की जमानत याचिका पर सुनवाई के दौरान कही।

जस्टिस विकास महाजन ने कहा कि अधिनियम की धारा 15ए (10) के प्रावधान अनिवार्य हैं और वर्तमान जमानत कार्यवाही की वीडियो रिकॉर्डिंग करनी होगी। हाईकोर्ट ने कहा, स्पष्ट रूप से एक ओर अधिनियम की धारा 15ए (10) के तहत पीड़ितों के अधिकारों की रक्षा के लिए जमानत कार्यवाही की रिकॉर्डिंग के प्रावधानों और दूसरी ओर आईपीसी की धारा 228ए और पॉक्सो अधिनियम की धारा 23 के बीच कोई असंगति नहीं है।

हाई कोर्ट ने कहा, इस प्रकार यह पूरी तरह से स्पष्ट है कि

विधायिका का इरादा अधिनियम के तहत किए गए यौन अपराधों के संबंध में धारा 15ए(10) के अनुपालन के साथ-साथ आईपीसी के तहत महिला पीड़ितों से संबंधित है, जिनकी पहचान कानून के तहत संरक्षित किए जाने की आवश्यकता है। उच्च न्यायालय ने आरोपी लक्ष्मी नारायण की जमानत याचिका पर सुनवाई करते हुए यह फैसला सुनाया। याचिकाकर्ता ने धारा 302/304/376/342/506/201/34 आईपीसी, पॉक्सो अधिनियम की धारा 6 और एससी/एसटी एक्ट की धारा 3 के तहत पुलिस स्टेशन दिल्ली कैंट, दिल्ली में दर्ज एक मामले में धारा 439 सीआरपीसी के तहत नियमित जमानत की मांग करते हुए वर्तमान याचिका दायर की थी।

सीआरपीसी की धारा 439 के तहत दायर याचिकाकर्ता की इसी तरह की जमानत याचिका को पटियाला हाउस कोर्ट ने 8 जून, 2023 को खारिज कर दिया था। शिकायतकर्ता के वकील महमूद प्राचा ने कहा कि अधिनियम की धारा 15ए की उपधारा (10) के मद्देनजर, अधिनियम के तहत अपराधों से संबंधित सभी कार्यवाही, जिसमें वर्तमान मामला भी शामिल है, की वीडियो रिकॉर्डिंग की जानी है।

उन्होंने आगे कहा कि, जैसा कि वर्तमान मामले में, शिकायतकर्ता की नाबालिग बेटी के साथ आरोपियों ने बलात्कार किया और उसकी हत्या कर दी और चूंकि शिकायतकर्ता अनुसूचित जाति समुदाय से है, इसलिए वह अधिनियम की धारा 2(1)(ईसी) के अर्थ में पीड़ित है। इसके अलावा, चूंकि वर्तमान मामले में लगाए गए कुछ अपराध अधिनियम के तहत भी हैं, इसलिए अधिनियम की धारा 15ए(10) के प्रावधान वर्तमान जमानत कार्यवाही पर लागू होंगे और इसकी वीडियो रिकॉर्डिंग करना अनिवार्य है।

यूक्रेनी संसद भवन के पास मिला रूस के ड्रोन का मलबा, 67 हमले; सबसे सुरक्षित क्षेत्र भी हाई अलर्ट पर

कीव, एजेंसी। रूस ने यूक्रेन पर पिछले 24 घंटों में बड़े पैमाने पर हमले किए। इन हमलों में रात भर में कुल 67 लंबी दूरी के ड्रोन लॉन्च किए गए। इनमें से 58 को यूक्रेन की वायु सेना मार गिराने में सफल रही। यूक्रेनी वायु सेना ने टेलीग्राम मैसेजिंग ऐप पर कहा कि राजधानी कीव में संसद भवन के ठीक बगल में भी ड्रोन का मलबा पाया गया। यूक्रेन के 11 क्षेत्रों को हाई अलर्ट पर रखा गया है।

यूक्रेन ने कहा, किसी रूसी मिसाइल या ड्रोन का मध्य कीव में इतनी दूर तक आना बेहद दुर्लभ है। यह चिंता की बात है क्योंकि यह शहर सोवियत-युग और पश्चिमी-प्रदत्त वायु रक्षा प्रणालियों के नेटवर्क से संरक्षित है। शहर के केंद्र में पहाड़ी पर स्थित सरकारी क्वार्टर शायद यूक्रेन में सबसे अच्छी तरह से सुरक्षित जगह है, क्योंकि इसमें राष्ट्रपति, कैबिनेट

और केंद्रीय बैंक के कार्यालय भी हैं। लेकिन इतने सुरक्षित क्षेत्र में संसद भवन के पास जमीन पर मलबे के कम से कम चार टुकड़े बिखरे हुए दिखाई दिए हैं।

ड्रोनों को ट्रैक करना मुश्किल: फरवरी 2022 में हमले की शुरुआत के बाद से, मॉस्को ने यूक्रेन में हजारों मिसाइलें और ड्रोन लॉन्च किए हैं। ईरान द्वारा डिजाइन किए गए ड्रोन का इस्तेमाल सितंबर 2022 से मिसाइलों के सस्ते और अधिक खर्चीले विकल्प के रूप में किया जा रहा है। प्रोपेलर-संचालित शाहेड ड्रोन 200 किमी प्रति घंटे (125 मील प्रति घंटे) से कम की गति से उड़ान भरता है। लेकिन पारंपरिक वायु रक्षा प्रणालियों से इसे ट्रैक करना मुश्किल पड़ता है।

बच्चों की सर्दी-जुकाम जल्द करें ठीक, दवाओं से ज्यादा असरदार नमक-पानी का यह इलाज

लंदन , एजेंसी। एक नई रिसर्च में दावा किया गया है कि बच्चों की सर्दी जल्दी ठीक करने के लिए दवाओं से ज्यादा नमक-पानी का इलाज ज्यादा असरदार साबित हो रहा है। शोधकर्ताओं ने पाया है कि बच्चों को नमक और पानी (सेलाइन सोल्यूशन) की नाक में बूंदें देने से सर्दी की अवधि को दो दिन तक कम किया जा सकता है और इसे परिवार के अन्य सदस्यों तक फैलने से भी रोका जा सकता है।एक अध्ययन में पाया गया कि नमक-पानी की बूंदों का उपयोग करने वाले बच्चों में सर्दी के लक्षण औसतन 6 दिन तक रहे, जबकि सामान्य दवाओं का उपयोग करने वाले बच्चों में ये लक्षण 8 दिन तक रहे। इस अध्ययन में 407 बच्चों (उम्र 6 साल तक) को शामिल किया गया। उनमें से 301 बच्चों को सर्दी हुई, और 150 बच्चों के माता-पिता को समुद्री नमक और पानी का घोल बनाकर दिन में चार बार तीन-तीन बूंदें नाक में डालने की शिक्षा दी गई। बाकी 151 बच्चों का सामान्य देखभाल से इलाज किया गया।नमक-पानी की बूंदों का उपयोग करने वाले बच्चों के परिवारों में 46त्न मामलों में सर्दी के संक्रमण की सूचना मिली, जबकि सामान्य देखभाल वाले परिवारों में यह आंकड़ा 61त्न था।82त्न माता-पिता ने कहा

कि नमक-पानी की बूंदों से उनके बच्चे की सर्दी जल्दी ठीक हो गई, और 81त्न ने भविष्य में इसे उपयोग करने की इच्छा जताई। प्रोफेसर स्टीव कनिंघम ने बताया कि नमक में मौजूद क्लोराइड शरीर की कोशिकाओं को वायरस से लड़ने के लिए आवश्यक रसायन बनाने में मदद करता है, जिससे संक्रमण कम हो जाता है।इस अध्ययन को यूरोपियन रेस्पिरेटरी सोसाइटी कांग्रेस में प्रस्तुत किया गया, और भविष्य में इसे और बेहतर बनाने के लिए नए शोध की आवश्यकता है।

फ्रांस के नए प्रधानमंत्री मिशेल बार्नियर का विरोध, लेफ्ट ने किया प्रदर्शन, सड़कों पर उतरे लाखों लोग

पेरिस, एजेंसी।
फ्रांस के नए प्रधानमंत्री मिशेल बार्नियर की नियुक्ति का विरोध शुरू हो गया है। लेफ्ट के प्रदर्शनकारियों ने पेरिस समेत पूरे देश में रैली निकाली। इस दौरान प्रधानमंत्री बार्नियर का विरोध किया गया। साथ ही राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रो पर सत्ता हड़पने का आरोप लगाया। देश के पेरिस समेत नैनटेस, नीस, मार्सिले और स्ट्रासबर्ग में लोगों ने रैली निकाली।

फ्रांस के आंतरिक मंत्रालय ने कहा कि रैली में एक लाख लोग शामिल हुए। जबकि लेफ्ट नेता ने कहा कि पूरे फ्रांस में तीन लाख लोगों ने सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन किया।

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के ने बृहस्पतिवार को मिशेल बार्नियर को नया प्रधानमंत्री नामित किया था। बार्नियर यूरोपीय संघ के पूर्व ब्रेग्जिट वार्ताकार रहे हैं। यह नियुक्ति दो महीने पहले हुए चुनाव के बाद की गई। राष्ट्रपति मैक्रों ने जुलाई में पूर्व प्रधानमंत्री गेब्रिएल एटल

और उनकी सरकार का इस्तीफा स्वीकार कर लिया था, जब संसदीय चुनाव के दूसरे दौर में उनके गठबंधन को हार का सामना करना पड़ा। लेफ्ट गठबंधन चाहता था कि 37 वर्षीय अर्थशास्त्री लूसी कास्टेट्स प्रधानमंत्री बनें, लेकिन राष्ट्रपति मैक्रो ने वह संसद में विश्वास मत हासिल नहीं कर पाएंगीं। इसे लेकर प्रदर्शनकारियों ने मैक्रो पर भी गुस्सा जाहिर किया और उनसे इस्तीफा देने की मांग की। प्रदर्शनकारी मैनन बोनिजोल ने कहा कि जब तक मैक्रो सत्ता में हैं, तब तक अपना मत देना बेकार है। एक अन्य प्रदर्शनकारी ने मैक्रो पर मतदाताओं की इच्छा के विरुद्ध नियुक्ति करने का आरोप लगाया।

वहीं विरोध के बाद प्रधानमंत्री मिशेल बार्नियर ने कहा कि वह सभी राजनीतिक विचाराधारा के लोगों को साथ लेकर चलने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि मैं सभी फ्रांसीसी लोगों की निगरानी में हूं। बजट, सुरक्षा, आव्रजन, सुरक्षा और स्वास्थ्य विभाग के प्रभारी बार्नियर ने कहा कि वह सबकी बात सुनेंगे। बार्नियर को अभी संसद में विश्वास मत हासिल करना है। इसके बाद उन्हें 2025 तक बजट भी पेश करना है।

4 दिन लगातार किया काम, सिर्फ एक दिन की ली छुट्टी, अंग फेल होने से 30 साल के युवक की मौत

लंदन , एजेंसी।
दुनिया की फैक्ट्री कहे जाने वाले चीन से हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां एक युवक की मौत अधिक काम की वजह से हो गई। युवक की उम्र महज 30 साल की थी। अदालत ने कंपनी को मृतक के परिवार को मुआवजा देने का आदेश दिया है। जान गंवाने वाला युवक पेंटर का काम करता था। युवक ने लगातार 104 दिनों तक काम किया था। इस बीच उसने सिर्फ एक दिन की छुट्टी ली थी। मामला पूर्वी चीन के झेजियांग प्रांत का है। मृतक युवक की पहचान अबाओ के तौर पर हुई है। जांच में सामने आया है कि न्यूमोकोकल संक्रमण की वजह से युवक के कई अंगों ने काम करना बंद कर दिया था। ग्वांगझोउ डेली की रिपोर्ट के मुताबिक झेजियांग प्रांत की एक अदालत ने कंपनी को 20 प्रतिशत मौत का जिम्मेदार ठहराया है।

साउथ चाइना मॉर्निंग पोस्ट के अनुसार साल 2023 के फरवरी महीने में अबाओ ने एक कंपनी से बतौर पेंटर समझौता किया था। इसके बाद अबाओ ने फरवरी से मई तक लगातार 104 दिनों तक काम किया। उसने सिर्फ छह अप्रैल को एक दिन की छुट्टी ली थी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129